SYĀM-SANEHĪ

of

ĀLAM

Vol. Two

SYĀM - SANEHĪ

of

Ā L A M

A renowned Muslim poet of the Kṛṣṇa-Kāvya School — 16th Cen.A.D.

Critically Edited

For the first time from original MSS with Introduction, Critical Notes & Appendices

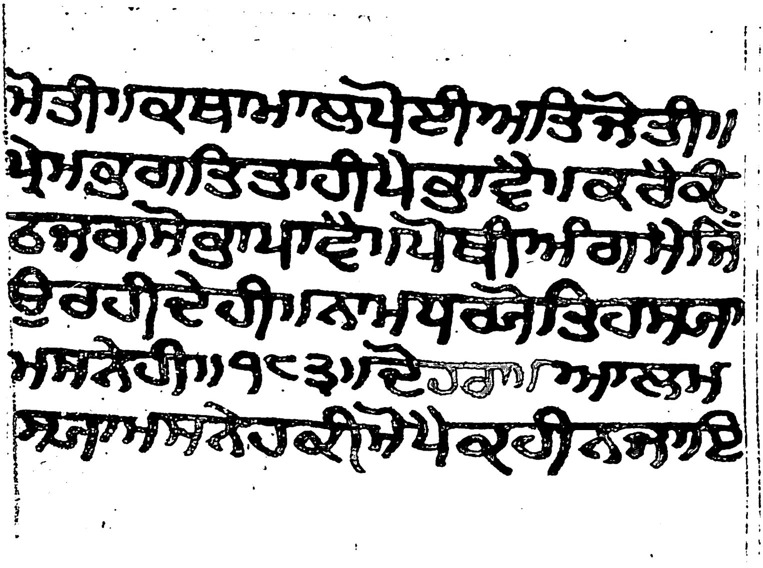
by

SARAN DĀSS BHANOT, M.A.,
Hansrāj College,
NEW DELHI.

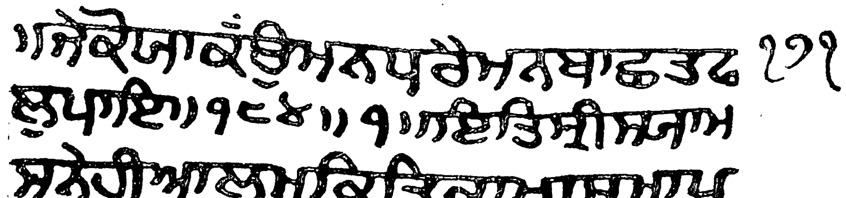
VOLUME TWO.

४,२
383

C O N T E N T S



A facsimile of Ms. PAT—the concluding portion.



A facsimile of Ms. PAT—the concluding page.

स्याम-सनेही

† छप्पय छंद

मुख मंडल पर लसै, जौन्ह मंडित मयंक जनु ।
जटित जोति अरधंग, गवरि मज्जित दप्पन तनु ॥
धवल धूरि धर अंग, उच्च सोभत संकर वर ।
फणि भूखण फण पत्ति, चारु बुझियति चंदन तर ॥
जिह मिलत गंग आलम सुमति, किय जल थल उज्जल बरन ।
नव करन जोति नव अंग कहि, सुभ बिभूति भव उद्धरन ॥ १ ॥

¶ भुजंगप्रयात छंद

नमो नाथ पूरे सभै सिद्धि दाता ।
जुगादी जगै अंति एकै विधाता ॥
हियें नाम जो दीपरूपी प्रकासै ।
तमऽग्यानता मूढ़ता गूढ़ नासै ॥

सनेही सचेतं जगै जीह बाती ।
प्रकासै लहै उत्तमं ग्यान राती ॥

---

† PAT reads before छप्पयः— ओं सतिगुरप्रसादि । स्वस्ति स्री गणेसाय नमः । अथ स्याम सनेही लिख्यते आलमक्रिति; LUC श्री गणेशाय नमः । श्यामसनेही । 1. LUC जोन्ह . 2. PAT गवर मज्जंत, LUC दर्पन; PAT दप्यन. 3. LUC धरि (for धर), सोहित 4. LUC फनभूषित, PAT om. फण, LUC फन (for फण), PAT पत, LUC चार (for चारु), PAT adds चार after चारु, PAT पर (for तर). 5. LUC जिहि. 6. LUC कह, PAT बिभूतनि. ¶ LUC om. भुजंगप्रयात छंद; PAT ०प्रिया०. 7. LUC सबै. 8. LUC अन्त. 9. LUC हिये, प्रगासै. 10. LUC तमो ज्ञान तब. 11. LUC सुचित्तं, जिहि. 12. LUC उत्त अज्ञान.

सुधा नाम पै पूरि लै मूल भाखा।
सदा सुद्ध ह्वै पल्लवै बूझ साखा॥
नदीनाथ क्रीड़ा रिदै मै कलोलै।
ततो बुद्धि पच्छी चितै अर्थ बोलै॥
उअंकार अंकार तेजोग नैनम्।
निरंकार निर्धार उच्चार वैनम्॥ २॥

† दोहरा

नाथ निरंजन निरबिघन, करुनामय निहकाम।
निसतारन तारन तरन, रच्यो निरंतर नाम॥ ३॥

¶ चौपई

प्रथम धरम जिह इह ठहराऊं।
आदि अनादि सिद्धि गुन गाऊं॥
कछु कारन रसना इह डोलै।
आदि सिद्धि सिमरै जब बोलै॥
सुमिरनि स्यामु सेतु नहि राता।
है अनेक इक रंग विधाता॥
पतित उधारन बिरदु बड़ाई।
दीनबंध असरन सरनाई॥
निगम ग्यानु जिहि अगमु बखानै।
निपट पीर दुखियनि की जानै॥
कलह मेटि छिनु मै सुखु देई।
दुखियनि राखि पीर खिउ लेई॥

1. LUC नामं. 2. LUC होई (for ह्वै), PAT वै, LUC लहे बुद्धि (for पल्लवै बूझ). 3. LUC कितहू हदै में. 5. LUC उकारं अकारन्त पेखिय नैनं. 6. PAT निरधार. † LUC om. दोहरा. 7. LUC निष्काम. 8. LUC निस्तारन, रये. ¶ LUC om. चौपई. 9. LUC धर्म यह जिय, PAT ठहराऊ. 10. LUC सिध, PAT गाऊ. 11. LUC जिहवा जब बोलै. 12. LUC सुद्ध सुमिरै तब. 13. LUC सुमिरन स्याम सनेही राता. 14. LUC रँग एक. 15. LUC बिरद. 16. LUC दीनबंधु. 17. LUC ज्ञान जिहिं अगम. 18. LUC निकट, दुखिया. 19. LUC, PAT छिन, LUC में सुख. 20. LUC दुखियहिं,

गज से थूल चीट से हीने।
प्रभु पोखत छिनु छिनु सुधि लीने॥
गज नहि थूल चीट नहि हीनी।
एक द्रिस्टि सभ पर सम कीनी॥
ते अभेद कछु भेदु न पावहि।
आदि अंति को समो बतावहि॥
अब तब ऐसे इहै पुकारहु।
कत अखोज तुम खोजत पारहु॥
इहै बात मै कहत न बूझा।
नाम बिना मोहि अउरु न सूझा॥ ४॥

† दोहरा

मै अबूझि कह बूझिहौ, जोरै बचन बनाइ।
गए अबूझ अजान जिम, सुर मुनिंद्र कबिराइ॥ ५॥

¶ चौपई

सुभ अच्छर धरि अंम्रित बानी।
करउं कवित्त रसाल कहानी॥
क्रिस्न भगतु जो स्रोता होई।
कथा सुनत सुखु पावै सोई॥
दच्छन देस बिचच्छन ठाऊँ।
भीखमसैन राउ कर नाऊँ॥

ते (for सिउ). 1. LUC थल, चींटी ते. 2. LUC पोषत, PAT छिन छिन, LUC लीन्हे. 3. LUC reads lines 3–4 in reverse order, LUC न (for नहि), चींटी ते. 4. LUC दृष्टि सब, कीन्ही. 5. LUC पावै. 6. LUC अंत, बतावै. 7. LUC यहै पुकारै. 8. LUC को (for तुम), खोज विचारै. 9. LUC यहौ, मैं कहौ अबूझा. 10. LUC और. † LUC om. दोहरा. 11. LUC मैं अबूझ का बूझहौं, जोरौं. 12. LUC जिमि, मुनि कहँ. ¶ LUC om. चौपई. 13. LUC अमृत. 14. LUC कहौं, बखानो. 15. LUC कृष्ण भगत, श्रोता. 16. LUC कहत सुख. 17. LUC दछिन, विचछन. 18. LUC भीषमसेन.

नगर नाउँ कुंदनपुरु कहहीं।
धरमराज धरमी सभ रहहीं॥
बंसकाज राजा अउ रानी।
सिव सकती पूजा दुहु ठानी॥
बहुतु दिवस उन परसत गए।
पारबतीपति परसन भए॥
सेवा भगति मान सिव लीनी।
चार पुत्र इक कन्या दीनी॥
पहिले भयो पुत्र अउतारा।
रूपसवंत कुँवर उजियारा॥
रुकम नामु तिन पँडितन धरा।
सुभ दिन राजजोग अउतरा॥
जनमौती गनि गनिक विचारी।
राजा बड़ो होइ अधिकारी॥
मत काहू की मनहि न आनै।
अपमत काज करै जो जानै॥ ६॥

† दोहरा

बली होइ बड़ राज अति, अउरु दोखु नहि कोइ।
तीन पुत्र इक कन्निका, इह ते आगै होइ॥ ७॥

---

1. LUC नाम कुंदनपुर. 2. LUC धरमी लोग धरमसब. 3. LUC अरु. 4. LUC दोउ. 5. LUC पूजत गवरि बहुत दिन भए. 7. PAT भगत, LUC मानि, लीन्ही. 8. LUC चारि, एक, दीन्ही. 9. LUC पहले, अवतारा. 10. PAT अतिरूपवंतु कुँयर. 11. LUC रुकुमि नाम तिन्ह पंडित धारा. 12. LUC अवतारा. 13. PAT जनमत ही गनतही विचारी. 14. LUC अहंकारी. 15. LUC मन्त्र काहु कर. 16. LUC सो (for जो). † LUC om. दोहरा. 17. LUC राजा, om. अति, और दोष नहीं. 18. LUC एक कन्या, इहि पर आगै.

¶ चौपई

बरस चार महि रुकम जु भयो।
पाटी लै पंडित घरि गयो॥
रुकमु पढ़ै विद्या चटसारा।
अउर पुत्रु लीनो अउतारा॥
पढ़ौ कुँवर पंडित हुइ आयो।
अउर पुत्रु चटसाल पठायो॥
दूजै पढ़त तीसरो भयो।
वहै कुँवर गुरमंदर गयो॥
चौथ पुत्र जनमत सुख दीना।
वहै पढ़ायो पंडितु कीना॥
चारि पुत्र राजा कउँ दए।
चारौ पढ़ि बुध पंडित भए॥
तिन महि बड़ो रुकम अधिकारी।
पिता समानि देखियतु भारी॥
दूजै पुत्र रुकमपथु नाऊँ।
रुकमकैसु है तीसर ठाऊँ॥
चउथे पुत्र रुकमुमाली है।
इह सुनि जग कीरत चाली है॥
अब सुनिजै रुकमनि अउतारी।
जैसे क्रिस्न कथा विस्तारी॥

¶ LUC om. चौपई. 1. LUC चारि मह रुकुम जो. 2. LUC घर. 3. LUC रुकुम. 4. LUC और पुत्र लीन्हो अवतारा. 5. LUC पढ़ो. 6. LUC और पुत्र चटसार पढ़ायो. 7. LUC दूजे. 8. LUC वहौ, ०मंदिर. 9. LUC दीन्हा. 10. LUC यहौ पढ़ाइ सो पंडित कीन्हा. 11. LUC कहँ. 12. LUC चारों, PAT बुधि पढ़ि. 13. LUC मह, रुकुम. 14. LUC समान देखियत. 15. PAT, LUC दूजे, LUC रुमापथ. 16. LUC रुकुमकेस जो तिसरे. 17. LUC चौथो, रुकुम बली. 18. LUC अब सुनि लीजहु कीर्ति बली है. 19. LUC सुनियो रुकुमिनि औतरी. 20. LUC कृष्ण, विस्तरी.

पंचम गरभ रानी जौ रहा।
गउरि प्रसाद ओरि निरवहा ॥ ८ ॥

† दोहरा

सोइ प्रसाद उन पायऊ, सिव सकती जो दीय।
बालक पंच प्रकासियो, चार पुत्र इक धीय ॥ ९ ॥

¶ चौपई

राजमँदर कन्या अउतरी।
जानो देवलोक सौं परी ॥
पूरन दूज होन नहि पावै।
साँझ की किरन साथ हुइ आवै ॥
जनमत चाँद द्वैज कै जीता।
जनमी जानि जनक घर सीता ॥
बिमल चंद संपुट सौं उतरी।
जानो सुर पूजा की पुतरी ॥
उत्तम लगन चंद्र सुभ बासा।
ओतकी रुकमनि नाउँ प्रकासा ॥
ऐस नछत्र पुत्र जौ होई।
तिहूँ लोक बंदै सभु कोई ॥
इह कन्या गुन लच्छिन आगरु।
मात-पिता-कुल करै उजागरु ॥
अउरु फलन सौं फूलु जनायो।
मात-पिता चौगुन सुख पायो ॥

---

1. LUC गर्भ, जो. 2. LUC गौरि, वोर. † LUC om. दोहरा. 3. PAT जू पाइओ. 4. LUC प्रगासे, चारि, एक. ¶ LUC om. चौपई. 5. LUC राजमहल, अवतरी. 6. LUC जानहु, ते. 7. LUC दुइज, नहीं. 8. LUC रचन (for किरन); ०हौ. 9. LUC दुइज कर. 10. LUC जानु. 11. PAT संपट, LUC ते. 12. LUC जानहु, पूजन. 13. PAT उतम, LUC चंद. 14. LUC जोतिष रुकुमिनि नाम प्रगासा. 15. LUC ऐसी लगन, जो. 16. LUC सब. 17. LUC यह, लछन गुन आगरि. 18. LUC केर उजागरि. 19. LUC और, ते फूल. 20. LUC सबहुन (for चौगुन).

जननि कस्ट जौ सुत सौं होई।
कन्या जनम पीर फुनि सोई॥
जननी जनु निजु आतम लेखहि।
पुत्री पुत्र एक सम देखहि॥
जिह रे पित घर पुत्री होई।
नखसिख सकुचि लाज भौ सोई॥ १०॥

† दोहरा

जिमि पति पान पिता कौ, जिमि पूजा प्रतिकीय।
जिउँ ब्राम्हन घरि कप्पला, तिउँ सु पिता घर धीय॥ ११॥

¶ चौपई

जिह ब्राम्हन सभ पुत्र पढ़ाए।
ते ब्राम्हन सभ राइ बुलाए॥
सुनहु पुरोहित पंडितराई।
पुत्र पढ़त जो दछना पाई॥
तिह दछना ते दसगुन देऊ।
चरन धोइ सेवकु हुइ लेऊ॥
ओअंकार सिद्धि अब लेहू।
कछु विद्या रुकमनि कँउ देहू॥
ब्रहम पिता ह्वै बेद पढ़ावहु।
सारसुती के मंत्र सिखावहु॥

---

1. LUC कष्ट जो, सन. 2. LUC पुनि. 3. LUC जननि जनम सब. 4. LUC लेखहि. 5. LUC जिहि रे धिता ग्रह. 6. LUC सकुच, भअ. † LUC om. दोहरा. 7. PAT जनपति, LUC पानि; PAT पानप, PAT जिम, LUC सतकीय. 8. LUC जिमि वंमन घर कपिला, इमि रो पिता. ¶ LUC om. चौपई. 9. LUC जिहि पंडित सब. 10. LUC बमन, घर (for सभ). 12. LUC दछिना. 13. LUC तिहि दछिना सन, दएउ. 14. LUC मरन धोय सेवक, रहेउ. 15. LUC ॐ अंकार, सिधि, PAT सिद्धवै. 16. LUC रुकमिनि; PAT रुकमन, LUC का. 17. LUC विप्र, हुइ, PAT ह्वै (for ह्वै). 18. PAT सारस्वती, LUC कर, सुनावहु.

कुल कल्यान देव पति पूजा।
अउरु न ग्रन्थु पढ़ावहु दूजा॥
जिह सति सील पतिब्रतु होई।
द्विज पोथी लै आवहु सोई॥
कंठ पाठ अच्छर जो आवै।
हस्त चित्र सो लिख दिखलावै॥
प्रात समै पंडित जौ आवै।
राजा ढिग कन्या बैठावै॥
अउरु तहाँ जन लेहु बुलाई।
सभ मिलि अच्छर कहहु बुझाई॥
जो जो अच्छरु मनमहि आवै।
जननि मँदर सो जाइ सुनावै॥ १२॥

† दोहरा

अच्छर हूँ ते पढ़ी पदु, पदते पूरन छंदु।
पत्र खंड पढ़ि पोथियाँ, जिउ सुरगुर सों चंदु॥ १३॥

¶ चौपई

जो किछु पढ़ी जनक की धीया।
रामबधू दसरथ घर दीया॥
सो विद्या सभ बिप्र पढ़ाई।
बोलत मधुर मँदर झहनाई॥

---

1. PAT कुल अग्या जु देउ प्रतिपूजा. 2. LUC अवर, गन्थ. 3. LUC जिहि, पतीव्रत. 4. LUC दुज. 5. LUC जो अछर. 6. LUC चरित्र जो लिखि दिखरावै. 7. LUC जन (for जौ). 8. LUC अवर पुत्र कँह लेह. 9. LUC सब, कहै. 10. LUC जोई जोई अछर, मह, PAT अछरु. † LUC om. दोहरा. 13. LUC हू, पद पढ़ी, पदहु (for पद), छन्द. 14. PAT पोथीयाँ; LUC पाथो पढ़ी, LUC ज्यों, ते चन्द. ¶ LUC om. चौपई. 15. LUC कुछ. 16. LUC सीया. 17. LUC सब. 18. LUC मंदिर; PAT मंद, LUC झहंराई.

कोमिल कंठ पाठ कै जोती ।
सुक सारक जनु पढ़ै कपोती ॥
तिह सुर हुइ मँदर झनकारा ।
जनु सु पढ़ै कोकिल चटसारा ॥
घन बन मोर सावकी कुहकी ।
बानी एक भई इन दुह की ॥
बाकदेव भाखा इक तोलै ।
सारद कहौ बहन कहि बोलै ॥
लछमी रूप मोहनी मोहै ।
सारसुती बहनापा सोहै ॥
उजियरु मंदर साँझरुभोरा ।
चाँद सूर कर कउनु निहोरा ॥
जस मंदर संतत उजियारै ।
अस न होइ दीपक सउ बारै ॥
दीपक बेल बात लगु खूटी ।
बंसदीप कै बेल अटूटी ॥
दीपक बेल फूल कै चलै ।
बंस बेल फूलै अउ फलै ॥ १४ ॥

† दोहरा

सुख सनेह कुल बरतिका, दरसन जोति अनूप ।
दुहूँ पच्छ उजियर करै, बंस सु दीपक रूप ॥ १५ ॥

1. LUC कोमल. 2. LUC सारिक. 3. LUC तिहि, होइ मदिर झनकारी. 4. PAT जनक, LUC चटसारी. 5. LUC घर, PAT सावन की. 7. LUC वक्रदेव. 8. LUC कहै बहिन. 9. LUC लछिमी. 10. PAT सारस्वती, LUC बहिनापो. 11. LUC उजियर मंदिर, अरु (for ०रु०). 12. LUC सुरज, कवन. 13. LUC जिहि मंदिर, ०यारै. 14. LUC सौ बारे. 15. LUC बेलि बाती लग टूटी. 16. LUC बंसबेलि की. 17. LUC बेलि बाती लगु. 18. LUC बेलि. † LUC om. दोहरा, 19. LUC कुलवर्तिका. PAT कलिबरतिका. 20. PAT दुहु पछ उजियारा.

¶ चौपई

रुकम कुँवर अति उठै सुजाना।
पंडित चतुर निपुन गुनवाना॥
देस देस के राजकुँवारा।
सुनि आवहिं राजा कै द्वारा॥
बसन पलटि कै बोलहिं भाई।
रुकम कुँवर सिंउ करहिं मिताई॥
निस पेखन पेखहि नट चेटक।
दिवस फिरहि बन म्रिगहि अखेटक॥
निस महि नृत्त नाद धुनि भारी।
दिवस सूर रन धावैं धारी॥
रैन जु गीत कबित सुनि लेही।
दिवस दानु सो लाखन देही॥
एकन सिंउ हठि बैरु जनावै।
एकन सिंउ हित प्रीत बनावै॥
बरबस काज रुकम हठि करई।
कान पिता की मनहि न धरई॥
जोर पुत्र नहि पितहि सकाना।
जिउ गुरहीन रहै अग्याना॥
मात-पिता आग्या मन धरै।
सो संतति तीरथ कब करै॥

¶ LUC om. चौपई. 1. LUC उठो. 2. LUC नपुनि; PAT निपन. 3. LUC ०कुमारा. 4. PAT आवहि, LUC कै वारा. 6. LUC रुकुम, सों, करैं. 7. LUC निसु, देखहि, PAT चेकट. 8. LUC दौस, करत (for म्रिगहि). 9. LUC निसि मँह नृत्य गीत. 10. LUC दौस, धावहिं. 11. LUC रैनि जो. 12. LUC दौस दान सोई. 13. LUC सों हंसि बैर बढ़ावै. 14. LUC सों अति प्रीति मनावै. 15. PAT बरबस्सु, LUC रुकुम, PAT ही (for हठि). 16. LUC कानि, मनहिं. 17. PAT जौर, LUC पितहिं. 18. LUC जो गुनहीन, अज्ञाना. 19. LUC आज्ञा, धरई. 20. LUC संतत, कत करई.

जो गुन गंग गोमती परसे।
सो गुनु मात-पिता के दरसे ॥ १६ ॥

† दोहरा

पिता प्राग कासी जननि, सेवत पावहि मोख।
आग्या मज्जन दरसु जलु, छिनु छिनु खंडै दोख ॥ १७ ॥

¶ चौपई

जो किछु पढ़ी सु लिखि पढ़ि जानी।
दिन दिन रुकमनि होइ सियानी ॥
नगर विप्र कन्या मिलि आवहिं।
* गउरि पूजि ते गउरि पुजावहिं ॥
गउरि पुजाइ दच्छना लेहीं।
चलत असीस कुँवरि कौ देहीं ॥
पिता छत्रु थिरु जुग जुग राऊ।
जननि सुहागु भगति अधिकाऊ ॥
चिरजीवी चारौ बलिबीरा।
जब लगु गंग जमुन महि नीरा ॥
हरि-पदु-पंकज सिँउ मनु लाग्यो।
सुमरन हियें क्रिस्न जसु जाग्यो ॥
अति निरमल सभ अगनि समाना।
कुल कुलीन बोलहि कल्याना ॥
पढ़त सुबानी बेद अनूपा।
सारदि गउरि सरस्वति रूपा ॥

---

1. LUC गंगा, गोमति. 2. LUC फल (for गुनु). † LUC om. दोहरा. 3. LUC मोछ. 4. PAT आगै; LUC आज्ञा, LUC दरस जल, खंडहि दोष. ¶ LUC om. चौपई. 5. LUC कछु, सो, PAT पड़ (for पढ़ि). 6. LUC रुकुमिनि, सयानी. 7. LUC, PAT आवहि. 8. * The portion beginning with the 4th line 'गउरि पूजि ते' etc., of st. 18 and ending with the 20th line 'बिना पढ़ाए सारक पढ़ई' of st. 22 is found in PAT, but is omitted in LUC. 9. PAT लेही. 10. PAT कुँवर, देही. 12. PAT भगत. 20. PAT सरस्वती.

सिद्धिरूप मूरति बिद्या की।
बुद्धिरूप जनु सभै पिता की॥
पूजा होहि पूजा की बेलहि।
अउरु समै सहचरि हुइ खेलहि॥
बहुतु प्रीति उनही सिँउ मानी।
बोलहि सभै संसक्रित बानी॥ १८॥

दोहरा

कथा मंत्र गाथा पढ़हिं, चित्रहिं पत्रु बनाइ।
कन्या कउतक मिलि करहिं, सँग रुकमनि कै जाइ॥ १६॥

चौपई

पुरी पुरख सभ बसहिं सुकरमी।
ब्राह्मन छत्री सभै सुधरमी॥
उत्तम घर कन्या जे आहीं।
ते रुकमनि सँग खेलहिं जाहीं॥
भोर उठहि कुंकम घसि लेही।
जननि सँवारि पटुरिया देही॥
कनक पटुरिया चेरनि हाथा।
पूजहिं गउरि कुँवरि कै साथा॥
कोमिल कंठ मधुर धुनि गावहिं।
एक बैस इक रूपु मिलावहिं॥
गवरि पूजि मिलि बैठहिं बारी।
पिता राज सभ कुँवरि कुँवारी॥
मद्धि कुँवरि लै चंदन पाना।
बाँटहिं फल मिस्री पकवाना॥

---

4. PAT सहचर. 7. PAT पड़हि, चित्रहि. 8. PAT करहि, रुकमन. 9. PAT बसहि. 11. PAT के (for जे), आही. 12. PAT रुकमन, खेलहि जाही. 14. PAT सवारि. 16. PAT पूजहि, कुंवर. 17. PAT गावहि. 18. PAT मिलावहि. 19. PAT गवर. 20. PAT कुंवर (for कुंवरि). 21. PAT कुंवर.

दासनि के दासनि सँगि आवहिं ।
फल पकवानु गोद भरि पावहिं ॥
मालन फूलमाल लै आई ।
कुंकम छिरकि सभै पहिराई ॥
छिन इक संचारहिं मधि धाई ।
मिलि गुडियन की करहिं सगाई ॥
तरवर छाहर भूमि सुहेली ।
लहलहाँति सभ बेल नवेली ॥ २० ॥

दोहरा

नव बल्लनि महि जिँउ लहै, आलम हित की बउरि ।
सभहनि के जिय कुँवरि महि, तिंउ रुकमनि कै गउरि ॥ २१ ॥

चौपई

अउर दिवस सभ मिली सुहाई ।
उत्तिम पुर पुत्री सभ आई ॥
उन महि एक जो किछुक सियानी ।
कहहि कुँवरि सिँउ कोमल बानी ॥
नगर निकटि राजा फुलिबारी ।
बहुत फूल फूलहिं फुलझारी ॥
सरवर पास बिमल जलु सोई ।
तहाँ गउरि कर मंदरु होई ॥
केसर कुसम जाइ तहँ लीजै ।
आपन चुने देवतहि दीजै ॥
इह बिधि जाइ गउरि जौ पूजै ।
जो चाहै पूरन ह्वै सूजै ॥
देहिं असीस नगर की नारी ।
पूजहिं बिधि तरुनी अउ बारी ॥

---

1. PAT आवहि. 2. PAT पावहि. 4. PAT छिरक. 5. PAT संचारहि. 6. PAT करहि. 9. PAT जिउ. 10. PAT कुँवर, तिउ. 14. PAT कुंवर. 16. PAT फूलहि. 23. PAT देहि. 24. PAT पूजहि.

बहु पट डोर की डाँडी लाई।
झरहिं कुसम तहँ फूलहिं जाई॥
सुक सारिक पिंजर बसि काहलु।
उहां मुकत सभ करहिं कुलाहलु॥
सीतापति हर हर सुक रढ़ई।
बिना पढ़ाए सारक पढ़ई *॥
सघन ब्रिच्छ बिरली बहु बीचनु।
दिनही महि खेलहिं अखमीचनु॥ २२॥

¶ दोहरा

मँदल संगि मंगल करहिं. आवहिं जुवतिन टोल।
निस दिन कँउतकु होतु है, कुँवरि तिहारे बोल॥ २३॥

† चौपई

सुनत बात रुकमनि मन भाई।
धाइ माइ सिँउ जाइ सुनाई॥
कहत कुँवरि अति आतुर भई।
रानी बेगि राइ पहँ गई॥
कर जोरै बिनती अनुसरई।
बाल-बुद्धि रुकमनि हठु करई॥
सरवर-तीर राइ फुलवारी।
फूलहिं बेलि ब्रिच्छ तहँ डारी॥

---

2. PAT झरहि, तह फूलहि. 4. PAT करहि. 7. LUC reads after सघन—सुब्रच्छ बेलि बहु बीचनि. 8. LUC मंह, PAT खेलहि, LUC ० मींचनि. ¶ LUC om. दोहरा. 9. PAT मंदिल; LUC मदन, LUC संग, PAT मंदल (for मंगल), LUC, PAT करहि, आवहि, PAT जुवती ढोल. 10. LUC करहिं कुतूहल, PAT. कुंयर तुहारे. † LUC om. चौपई. 11. LUC सुनी, रुकमिनि. 12. LUC सो, जनाई. 13. PAT कुंयर; LUC कुंवर. 14. PAT बेग, LUC कुंवर (for राइ), PAT पहि. 15. LUC अनुसारै. 16. LUC बालक बुधि, रुकुम हठ, PAT रुकमन. 17. PAT सखतीर, LUC की बारी. 18. PAT फूलहि, LUC वृच्छ, भारी.

कहै तहाँ मठु देहु उठाई।
गउरि राखि कै पूजैं जाई।।
सुनि बोलै राजन को राजा।
इह ते अउरु न उत्तम काजा।।
तिह छिन बेगि बुलाए लगुवा।
बचन लिखहिं जे लेखक अगुवा।।
लागहि फटिक कपूरु पवारी।
कह्यो राइ असु देहु सँवारी।।
आस पास अस खाहि खुनावहु।
सरवारी भीतरि लै आवहु।।
मठु अति ऊच तार लगु करहू।
ऊपर कलस कनक के धरहू।।
* तिह पर छत्र चउर ढिग राजहिं।
घूँघरु घंटा फेरत बाजहिं *।। २४।।

† दोहरा

ता ऊपरि ऊँची ध्वजा, बाँधौ जो फहराइ।
ज्यों ज्यों ध्वजा निहारिये, कुल कलेसु सभु जाइ।। २५।।

¶ चौपई

इहि बिधि राजा आइसु दीना।
आठ पहर महि लोकन कीना।।

---

1. PAT मट्ठ, LUC देह. 2. LUC गवरि, पूजहिं. 3. LUC बोले, के. 4. LUC इहि, अवर. 5. LUC तिहि षन, PAT बेग, LUC बेगुवा. 6. LUC ते, लगुवा. 7. LUC reads lines 7–8 in reverse order, PAT फटक, LUC कपूर. 8. LUC कहै राउ अस, PAT उसारी. 9. LUC खाई खनावहु. 10. LUC भीतर. 11. PAT मट्ठ, LUC उच, सम. 12. LUC तापर. 13. * LUC om. lines 13–14, PAT राजहि. 14. PAT बाजहि. † LUC om. दोहरा. 15. LUC ऊपर, PAT ऊची, LUC धजा, PAT बांधहि जिह. 16. PAT जो जो, LUC धजा, PAT कलसु (for ध्वजा), निहारिहै, LUC कलेस, मिटी (for सभु). ¶ LUC om. चौपई. 17. LUC दीन्हा. 18. LUC मँह लागनि कीन्हा.

उठो धउरहरु अन अन भाँति।
राखिन कलसु सूर कै काँती॥
भीतर भूमि कनक की कीनी।
मूरति तहाँ गउरि की लीनी॥
बिप्रनि मंत्र वेद के जापे।
ब्रह्मा बिस्नु कामरिपु थापे॥
भई थापना पूजा होई।
कुँवरि पूजि पूजै सभ कोई॥
प्रात सूरु उगवन नहिं पावै।
चेरनि सहित कुँवरि तहँ आवै॥
तब लगु चुनहिं फूल तहँ बउरी।
जब लगु सखी होहिं इक ठरी॥
सखिन साथि तहँ गउरि पुजावहि।
कंचन दानु पुजारी पावहि॥
गउरि पूजि सिरु भुइ ले लावहि।
सभ माँगहि अपुने मन भावहि॥
एक सखी रुकमनि सिंउ कहई।
पूजौ गउरि भगति मनि रहई॥
तुम फुनि कछु कामना बिचारहु।
मन को अंचलु छोरि पसारहु॥ २६॥

1. LUC धवरहर अनबन भाती. 2. LUC कलस, की. 3. LUC दीन्ही. 4. LUC गौरि, कीन्ही. 5. LUC विप्रन. 6. LUC ब्रह्मा. 8. PAT कुंयर पूज, LUC सब. 9. LUC सूर, PAT नहि. 10. LUC चेरिनि, PAT कुंयर, LUC तहाँ. 11. LUC जब लग, PAT चुनहि, LUC लै वारी. 12. LUC तब लग, LUC, PAT होहि, LUC इक ठारी. 13. PAT सखियनि, LUC साथ, PAT तह, LUC गवरि. 14. LUC दान. 15. LUC गवरि, सिर, लै लावा. 16. LUC सब, PAT मागहि, LUC आपन, भावा. 17. LUC रुकुमिनि, PAT रुकमन, LUC सौं कहै. 18. LUC पूजहु गवरि, PAT भगत. LUC मन रहै. 19. LUC पुनि. 20 LUC आँचर.

† दोहरा

मनसा करि कछु मांगहू, करहु न छूछी सेव।
परसन भए न माँगही, रूसहिं देवी देव ॥ २७ ॥

¶ चौपई

मै माँगौं निति माइ सुहागू।
पिता अरोग वीर सिर भागू॥
पिता तोर राजा बड़ आही।
बड़े भाग बिधि दीने ताही॥
माइ सुहागु भागु उजियारा।
जिहि प्रताप उजियर घरबारा॥
बड़े बंस घर जनमु जु लेही।
तिन कहिं भाग गरभ महि देही॥
ऊचे जनम द्वैज जौ पावै।
दिनु दिनु अधिक जोति दिखरावै॥
सुत के भाग पिता कै संगा।
धिय कै भाग स्वामि कै अंगा॥
मै तोहि कहौं सीख मनमानी।
दिनु दि नु रुकमनि होहु सियानी॥
हित पूजा देवी कै करहू।
मन महि ध्यानु क्रिस्न को धरहू॥

---

† LUC om. दोहरा. 1. PAT कर, LUC माँगहु. 2. LUC माँगहु, PAT रूसहिं; LUC पुरवहिं. ¶ LUC om. चौपई. 3. LUC मैं, नित. 4. LUC आरोग्य. 5. PAT तोरि. 6. PAT कीने, LUC दीन्हे. 7. LUC सहागभाग. 8. PAT जह. 9. LUC जनम. 10. LUC कह्र भाग्य गर्भ मह. 11. LUC दुइज सरि. 12. LUC दिन दिन, कला (for जोति). 13. LUC पुत्र के. 14. LUC धीय के, स्वामी के. 15. LUC मैं तुम कहौ, PAT सुनि (for मन०). 16. LUC दिन दिन रुकुमिनि, PAT होहि, LUC सयानी, LUC adds between lines 16 and 17 the following—

गवरि पूजि इतनो जनि खगहु। कवल नैन सुन्दर वरु मांगहु॥

17. PAT की LUC करहु. 18. LUC में ध्यान किस्न वर धरहु.

द्वारावती क्रिस्नु है राजा।
जिनहि वरे पूजहि सभ काजा॥
इउ कहु जौ कान्हर वरु पाऊं।
अउर जनम तुमहीं मन लाऊं॥
इह जगि काजु होइ भल तोरा।
जनम जनम भल मानहु मोरा॥ २८॥

†दोहरा

ब्रिन्दाबन घनस्याम ससि, जदुकुलमंडन जीय।
देवी देहि प्रसन्न हुइ, तउ पायहु इहु पीय॥ २६॥

¶ चौपई

सुनि इह बात सखी जब कहई।
मन महि समुझि कुँवरि चुप रहई॥
अउरि दिवस सँग लीन बुलाई।
कालिह कह्यो सो कहि समुझाई॥
कउन क्रिस्नु द्वारावति कहाँ।
कान्हर नाम स्यामघन जहाँ॥
अउर कै कहत लाज मुहि आई।
तोहि कहत इह कथा सुहाई॥

---

1. LUC किस्न. 2. PAT तिन दिवते (for जिनहि वरे), LUC सब. 3. LUC जो केहु विधि कन्हर वर पावो, PAT पाऊ. 4. LUC अवर जन मतु नहीं, लावो, PAT लाऊ. 5. LUC इहि लग काज, सुभ. 6. LUC आनहु. † LUC om. दोहरा. 7. LUC विंद्रावन ससि स्याम धन, जहु०, जीउ. 8. LUC तो खावहि वे पीउ. ¶ LUC om. चौपई. 9. LUC सुनी यह, जो कही. 10. LUC मह, PAT समझ, LUC कुवरि; PAT कुंयर, LUC रही. 11. PAT reads lines 11–12 in reverse order, LUC अवर दवस, लीन्ह जिवाई. 12. PAT काल्ह, LUC कहसि सोई कहुं, PAT समझाई. 13. LUC कवन किस्न, कहा. 14. LUC कन्हर. 15. LUC अवर के. 16. LUC यह.

कहौं कुँवरि रुकमनि मैं तोही।
सुनि सुनि देहु हुँगारी मोही॥
मथुरा भयो क्रिस्न अउतारा।
सुनी कथा जानै संसारा॥
उइ बसुदेव देवकी जाए।
जसुमति कोरा नंद खिलाए॥
गोपतियनि कहिं मिलि सुख दीने।
बाल गुपाल चरित बहु कीने॥
वक धेनुक दानउ जिन मारे।
दारुन केसी ब्रिखभ विदारे॥
कंस चूरि धरि धूरि मिलायो।
उग्रसैन सिर तिलकु चढ़ायो॥
माता पिता बंद ते छोरे।
अग्याकारी द्वै कर जोरे॥ ३० ॥

† दोहरा

लछमन ते बलिभद्र हुइ, वसुदिव दसरथ रूप।
रामचंद्र फुनि अउतरे, साँवर बरन अनूप॥ ३१ ॥

¶ चौपई

मेदिनि जाइ रसातल जानी।
मीन सरीर धरयो तिन आनी॥

---

1. LUC कहौ बात अब रुकुमिनि तोही, PAT कुंयर, रुकमन. 2. LUC हुकारी. 3. LUC किस्न अवतारा. 4. LUC जानी. 5. LUC वासुदेव वसुदेव के स्थाय. 6. PAT जसमत गउरा. 7. LUC ०तीयन मिलि बहु सुख दीन्हा. 8. LUC कीन्हा. 9. PAT बक्र देनु, LUC दानव. 10. LUC दानौ, ब्रषभ संघारे. 11. PAT कोसु चूर धर. 12. LUC उग्रसेन, तिलक. 13. PAT, LUC मात. 14. LUC ०करी, हुयौ (for द्वै). † LUC om. दोहरा. 15. LUC लछिमन, बलीभद्र है, वसुदेव. 16. LUC फिरि अवतरे, सो वर वरहु अनुप. ¶ LUC om. चौपई. 17. PAT बेदन, LUC मेदिनी जात नसातल. 18. LUC धरो जनु.

कूरम कोल बहुरि जो भए।
बावन ह्वै बलि कै घरि गए॥
मारन दैत भगत लगि आए।

कहुँ चउदंते कीजहि दंती।
कहुँ फेरियहि तुरंगम पंती॥
कहूँ मल्ल सरवैया पेलहिं।
कहुँ राइतवर सतरँज खेलहिं॥ ६४॥

† दोहरा

कहूँ भिरहिं पाइक प्रबल, सकुन भयानक होइ।
कहूँ बेदबानी सरस, पढ़त सुनै सभ कोइ॥ ६५॥

¶ चौपई

रवि वंदन रुकमिनि पिकबैनी।
चढ़ी मँदर परि नीरज-नैनी॥
गीत नाद धुनि सुनिसि अपारा।
दुंदभ सबद झाँझि झुनकारा॥
पूछै कुँवरि सखी कहँ चाहा।
बहु बिधि बाजन बाजहिं काहा॥

---

1. PUL कहूँ; LUC कहू, PUL चऊदेत; LUC चौदंत, LUC कोजियत. 2. PUL कहूँ; LUC कहू, PUL जो फेरीग्रहि. 3. LUC कहू मलार राग धुनि करहि; PUL कहूँ मल्ल आपस मु लरहिं. 4. PUL राइति वरक कहूं सतरंज; LUC रामतौर कहू चौपरि; PAT कहुँ रामतोर सतरंजन. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. PUL भिडहि; LUC भिरहि, PUL कहूँ; LUC भल (for प्रबल), LUC भलग; PAT भगल (for सकुन), PAT पग्रानक. 6. LUC पंडित (for बेद०), PAT पड़त, LUC सब, PUL कहूँ कहूँ बंदी बने सरसु, पठत सुने. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. LUC रवि नंदनि रुकुमिनि; PUL ससिवदन रुकमनि. 8. PAT चड़ी, LUC मंदिल पर, PUL जिह मन्दिर बैठी दलनैनी. 9. LUC सुनसि. 10. LUC दुंदभी; PUL दुंद, LUC झाझ; PUL झाझर, LUC, PUL झनकारा. 11. PUL पूछे, LUC कुवर; PAT कुंयरि, LUC कहु; PUL सुनि. 12. PUL बाजे बाजन काहा.

सोहल सबद स्रबन महि आवहिं।
मंगल गीत ब्याह के गावहिं॥
बाहर कोट कुलाहल होई।
भीतर सुभ गावैं सभ कोई॥
कहै सखी सुनि कुँवरि कुमारी।
बात कहत जनु लागै गारी॥
देवी देव न पलटै कोई।
विधना करम लिख्यो सो होई॥
जिउँ जिउँ सुनिअहि बाजत बाजन।
हम तन कोटि परै जनु ताजन॥
गावहिं मंगल लोक बिराने।
हम रोवहिं इह पीर पिराने॥
मात पिता तुहि किस्नहि दीनी।
बरबसि रुकुम खरग कर लीनी॥
जदुकुल मौर बंचि गुन गारिसि।
मउरि बाँधि ससपालु हकारिसि॥ ६६॥

---

1. LUC सोहिल, PUL श्रबन; LUC कान, PUL मइ; LUC मह, PUL परहीं. 2. PUL करहीं (for गावहिं). 3. LUC बाहिर. 4. PUL भीतरि गुण गावहिं, LUC सब. 5. PUL कहे, LUC सुनु, PAT कुंयरि. 6. PUL कहू जे लागहि; LUC कहत जिनि लागै. 7. PUL पलटे. 8. PAT विधनहि, LUC कर्म, PUL लिखो; LUC लिखा. 9. LUC जौ जौ; PUL जिउ जिउ, PAT सुनिअहि; LUC सुनियत; PUL सुनियह, LUC बाजन (for बाजत). 10. PUL हमि, PAT कोट परै; LUC कोटि परहि, PUL पहिरि कोट, PUL जन. 11. LUC लोग. 12. PUL हमि, LUC रोवहीं, PUL या; LUC इहि, PUL पीरि. 13. PUL तुमि; LUC तुही, LUC किस्नहि; PUL कृष्णहि; PAT क्रिस्न कर, LUC दीन्हा. 14. PUL बरबहि; LUC बरबस, PUL रुकम, LUC खर्ग; PUL खरचा, PUL करि, LUC लीन्हा. 15. PAT मोरि; PUL मौल, PUL बाँधि, LUC, PUL गारसि. 16. PUL मौल; LUC मौर, PAT बंधि; PUL बाँध, PUL रुसपाल; LUC ससिपाल, LUC, PUL हकारसि.

† दोहरा

अब न सोच झंखहु कुँवरि, जो विधि लिख्यो सु देह ।
स्याम भगति छाडहु न छिन, भगतन मै गनि लेह ॥ ६७ ॥

¶ चौपई

हरि पूरण धीरजु धरि तौलौं ।
दुइ दिन रैन बीचि है जौलौं ॥
गुपतु प्रगट सभ ठाँहर आहै ।
छिन महि करै कीन जो चाहै ॥
सुनत कुँवरि रुकमिनि सुकुँवारी ।
गइ मुरछाइ बज्र जनु मारी ॥
समुझि कहसि अब देहहि छाँडउ ।
जीभ मूल दसननि सिउँ खाँडउ ॥
ले घनसारु घोलि कै पीयउँ ।
कुलहि लाज जौ अब छिनु जीयउँ ॥

---

† LUC om. दोहरा: PUL दोहा. 1. PUL सोचो, LUC झंखनु; PUL षो, PAT कुंयरि, बिध, LUC लिखा, LUC सो होय; PUL सो देहु. 2. PUL भक्ति छाढो नहीं; LUC भगित जनि छोड़हू, PUL भक्तन मो गनि लेहु; LUC सुगम सयानप सोय. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 3. LUC पूरन, PUL, LUC धीरज, PUL ता लो; LUC बोलै; PAT तौलै. 4. PUL बीचि रैन हे, PAT जौलै; PUL जौ लो, LUC दिन दुर सवी मरै निहै जोलै. 5. PUL गुप्त; LUC गुपति, LUC सब, PUL ठाकुर आहे; LUC ठाहर ऐहै. 6. LUC छिन में, PUL करे, LUC कीन्ह; PUL कीओ, LUC चहै; PUL चाहे. 7. PAT कुंयर; LUC कुवरि, LUC रुकुमिनि; PUL रुकमनि, LUC सुकमारी. 8. PUL गै; LUC गई, PUL, LUC मुरझाइ. 9. PUL समझि, LUC कहौ, PUL देही, LUC छाड़ौं; PUL भांढों 10. जिभ्या, PAT भूलि, PUL दसनन से खांडो; LUC दसन सौं खांडौ. 11. LUC लै, PUL, LUC घनसार, PUL घोर के; LUC घोरि अब, PUL पंऊ; PAT पीयौ. 12. LUC जो; PAT जीयौ; LUC लियउ, PUL लेउ कुंयर जीय सीतल होऊ.

प्रेम झंप कारन जिय देऊँ।
अब इह मंदर सिउँ धस लेऊँ॥
इह परिहस कैसेँ कर जीजै।
हंस ठउरि जहँ कागु सुनीजै॥
कागु कुचीलु कुचीलहि पढ़ई।
तुलसी सालग्रामहि चढ़ई॥
कुमुदु चंद्रमा सिउँ मुसकाई।
जौन्ह बिगास घाम मुरझाई॥
सरित प्रीत मै स्यामसनेही।
तिह महि रही मीन ह्वै देही॥
तरफै तनक तीर कै डारै।
जियै न नैक नीर ते न्यारै॥ ६८॥

† दोहरा

पिउ पिउ प्रान अधार है, धार स्वात की एक।
चात्रिक चित्त न अउर है, साइर सलिल अनेक॥ ६९॥

---

1. PUL om. lines 1–2, LUC जीउ देउ. 2. LUC इहि मंदिर सों यसि लेउ. 3. LUC, PUL यह, PUL कैसे के जीजे; LUC कैसे करि लीजै. 4. LUC ठौर तहाँ काग; PUL ठोर किउ काकु, PUL सुनीजे. 5. LUC काग, PUL, LUC कुचील, LUC पाई; PUL पढे; PAT पड़ई. 6. PUL सालगिरामहि; LUC सालिगरामहि, LUC चढ़ाई; PUL चढ़े; PAT चढ़ई. 7. LUC कुमद; PUL कुमल, PUL चंदमा, LUC सों; PUL सो. 8. LUC जोन; PUL जो नहीं, PUL बिगसे, PAT मुरछाई. 9. LUC हरित पीत भई; PUL सरत प्रीति भई. 10. PUL तिन में; LUC ता मह, PUL मर (for मीन), LUC हुइ; PUL होइ; PAT ह्वै. 11. LUC तलफै; PUL तरफे; PAT तरकै, PUL तनिक, LUC, PUL के, LUC डारे; PUL ढारे. 12. LUC जीये न नेह; PUL जीयसि न नेकु, PUL न्यारे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. PUL पीय पीय प्राण अधारु हे, हइ स्वात की येक. 14. LUC चात्रिग और न जिह धरहि; PUL चातिक चिंतन या रहे, LUC सरित (for सलिल).

¶ चौपई

सखी धाइ कै सुनि सभ आई।
रुकमिनि कुँवरि मरै बरियाई॥
धाइ धाइ अंकम भरि लीनी।
कानि लागि जीवन सिख दीनी॥
जौ तुम प्रान देहु जम हाथा।
हम सभ मरहिं तिहारै साथा॥
तिह पाछे तुरि जननी मरै।
मै मर जाउँ मरन को डरै॥
पहिले एक मंत्रु सुनि लेहू।
जउ न होइ तउ प्राननि देहू॥
जब लगु निकटि न आवहि मीचहिं।
सोलह पहर अजौ है बीचहि॥
आठ पहर जौ धावन धावै।
लै द्वारका बात पहुँचावै॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. LUC धाइ सुनि कै सब धाई; PUL धाइ के सभै जो धाई. 2. LUC रुकुमिनि; PUL रुकमनि, PAT कुंयरि, LUC भरै बरियाई; मर्न बेरि जो आई. 3. LUC लीन्ही. 4. PUL जीग्रनि; LUC जीवनि, LUC दीन्ही. 5. LUC, PUL जो, PUL प्राण दोऊ, PAT हम (for जम). 6. PUL सभि; LUC सब, LUC तुम्हारे; PUL तिहारे. 7. LUC तोहि मरत (for तिह पाछे), PUL तेरी; LUC तोरी, PUL मरई. 8. PUL मइ मरि; LUC मैं मरी, LUC मरत; PUL मरण, PUL के डरई. 9. LUC reads lines 9–10 between lines 4 and 5 above, PUL एकु, LUC मंत्र. 10. LUC, PUL जो, PUL तब; LUC तौ, PUL प्रानन. 11. LUC जो लग; PUL जउ लगि, LUC द्वार (for निकटि), PUL आवे; LUC आवै, PUL, LUC मीचा. 12. PUL, LUC सोरह, PUL अजहू हे; LUC आजु है, PUL, LUC बीचा. 13. PUL जो; LUC अस, PUL धावे. 14. PUL ले, LUC द्वारिका, LUC, PUL चाह (for बात), PUL पहुंचावे.

दसयों पहर चाह जौ पावहिं।
वै प्रभु एक निमख महि आवहिं॥
अपनै हाथ लिखौ दुखपाती।
ब्राम्हन हाथ पठावहु राती॥
गउरि मँदिर द्विज दीन पुजारी।
मै लै आवउँ जाइ हँकारी॥
गउरि बचन हिरदे ठहरावहु।
लिखि कागदु द्विज हाथ पठावहु॥ ७०॥

† दोहरा

सुधि पाये सुधि होइ सभ, पावहि पूरन नामु।
दामावति कहूँ नलु मिलै, सीता कौं स्रीरामु॥ ७१॥

¶ चौपई

इहु मतु कहि जब धाइ सुनायो।
कछु धीरजु रुकमनि मनि आयो॥
धाइ माइ जौ इह मति ठानहि।
मोते ब्राम्हनु अउर न जानहि॥

---

1. PUL दसे; LUC दसये, LUC, PUL जो, PUL पावे. 2. LUC वे; PUL वह, PUL प्रभ, LUC एक छिनक मह, PUL आवे. 3. LUC, PUL अपने, PUL लिखो; LUC लिखहु, LUC परिपाती. 4. PUL ब्राह्मण; LUC बाभन, PUL हाथि. 5. PUL गउर; LUC गौरि, PUL दिज दीनु; LUC दिन दिनहि. 6. PUL मइ ले, LUC आयों; PUL आवहु, LUC लाइ (for जाइ). 7. LUC गौरि. 8. LUC लै कागद; PAT लिखि कागरु, PUL दिज; LUC द्रज, PUL हाथि. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. PUL पावे; LUC आये, PAT होत, LUC सब्र, पूरव, PUL, LUC नाम. 10. PUL, LUC दामावती, PUL कउ; LUC को, PUL, LUC नल, PUL मिल्यो; LUC मिले, LUC, PUL को श्रीराम. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. LUC, PUL यह, LUC मत, PUL करि, LUC जो. 12. PUL कछू, LUC धीरज रुकुमिनि कह आयो. 13. LUC जो; PUL जब, PUL, LUC यह, PUL मतु गनहि; LUC मत ठानै. 14. PUL मइ तुम्ह ब्राह्मणु, LUC कै तै कभै ब्राभन जानै.

पीत बरन कागत करि हाथा ।
पत्री लिखै पढ़ै जदुनाथा ।।
मस भाजनु कीनी कजरउटीं ।
लिखि अस्तुति भल गूढ़ हथउटी ।।
स्री सरबग्य सरब उपमाजुत ।
वासुदेव स्वामी वसुदे सुत ।।
सुन्दर स्याम कमल-दल-लोचन ।
तारातार अहिल्या - मोचन ।।
दीनबंध स्वामी सतभाखी ।
सतु प्रतीत सीता की राखी ।।
तीन लोक तिहु डग जिन माये ।
भगत हेत ते थंभ समाये ।।
सत्तरूप तुम दैत-सँघारन ।
जानुकी संकट सूल निबारन ।।

---

1. PUL बरनु, LUC कागद; PUL कागुरु. 2. PUL लिखो, PAT पढ़ै; PUL पठे, PAT जनुनाथा; PUL जादोनाथा. 3. LUC मसि काजर लीन्ही कजरौटी; PUL मसु भाजन कीनो कजरोटी. 4. PAT गूड, PUL लिपि उस्तति भली गूड हथोटी; LUC लिखैलि पति अति मूढ़ हथौटी. 5. PUL, LUC श्री, PUL सर्वज्ञ, LUC सर्व; PUL साख, LUC उपिमा०, PUL ०युत. 6. PUL वासदे, LUC वसुदेव सुत; PUL वस्दे सुत. 7. LUC कवल–. 8. LUC, PUL तारन तरन, PUL अहल्या०. 9. LUC दीनबंधु, जदुपति (for स्वामी), PUL, LUC सतिभाखी. 10. LUC सत; PUL सति, LUC, PUL प्रतीति. 11. LUC तीनि, PAT लोग, PUL तिह ढग, LUC मह आये; PUL महि माया. 12. LUC भग्ति; PUL भक्त, LUC खंभ, PUL समाया, LUC adds between lines 12 and 13 the following :—

अस[illegible] सरन समुद करुनाई । भगत बछल भगवान गुसाई ॥
गुन माला भूषण सब ग्रीवनि । भगत रूप भगतन्ह की जीवनि ॥

13. LUC संतरूप; PUL सति सरूप, PUL तुम्ह दैत सिंघारन. 14. LUC जनकी; PUL जानकी.

संकट समै सुरति जिन कीनी।
जनु गज मोचि अभै ता दीनी॥
जद्यपि गूढ़ ग्यान मन आवहु।
बेगहि पीर दीन की पावहु॥ ७२॥

† दोहरा

दुरलभ बेद विचार सिउँ, मुनि मनसा ते दूरि।
संकट खंडन दीन को, निकट रहें भरपूरि॥ ७३॥

¶ चौपई

इति लिखंति दासिनि की दासी।
दीन छीन कुंदनपुर वासी॥
इह छिन इहाँ छेम नहि आही।
छिन छिन कुसल तिहारे चाही॥
नेम अनेम करै हठि कोई।
नेमिहि कुसल न जैसे होई॥
इहाँ कुसल मोहन मुख दरसे।
चंद्र जोति पंकज पग परसे॥

---

1. PUL समे सुर्ति तिन्ह, LUC कीन्ही. 2. LUC जिन, PUL, PAT मोच, PUL अभेतिह, LUC दीन्ही. 3. LUC जदपि; PUL जदिप, PUL, PAT गूड़, PUL मनि. 4. LUC बेगिहि; PUL बेगही, LUC चाह (for पीर). † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC दुलभ; PUL दुर्लभ, LUC सों; PUL सो. 6. LUC, PAT दीन की, LUC नकटि रहै; PUL नेक रहो, LUC भरिपूरि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. LUC लिखितं, PUL लिखतं, LUC, PUL दासन. 8. LUC कुंदनिपुरवासी. 9. LUC इहि, PUL ईहा छिमा नहीं; LUC यहां कुशल नहीं. 10. LUC छिनु छिनु; PAT दिन छिन, LUC कुशल; PUL कुस्ल, LUC तुम्हारी. 11. PUL करि, LUC, PUL हठ. 12. LUC नेमहि; PUL नेमही, LUC कुशल; PUL कुसलु, LUC कहा ते होई. 13. PUL ईहा, LUC कुशल, PUL मुहन; PAT मोहनि, PUL दरसों. 14. PUL, LUC चंद, पद, PUL पर्सों.

दुरलभ चरन-कमल किमि पाऊँ।
गउरि गनेसु महेसु मनाऊँ॥
जे पद सुर मुनि वर नहि पावहिं।
पदमपुत्र ते ध्यानु न आवहिं॥ 4
अति कोमल काली पर दीने।
फए कोमल कमलनि सम कीने॥
तिह चरननि लगि बहु दुखु साधउँ।
व्रत जप नेम गउरि आराधउँ॥ 8
पूजति गउरि बहुत दिन भए।
लरिकाई के धाहा गए॥
देवीद्वार बहुतु व्रतु कीने।
जागे भाग देव मुहि दीने॥ 12
जा दिन गउरि दीन मुहि आसा।
प्रान रहे तुम पाइनि पासा॥ ७४॥

---

1. LUC दुलभ; PUL दुर्लभ, LUC-कवल, PUL किम, LUC पाउ; PUL पाऊ. 2. LUC गवरि, PUL, LUC गनेस महेस, LUC मनाउ; PUL धिआऊ. 3. PUL सुरि, LUC नर मुनि(for मुनि वर), PUL नहीं; LUC नाही, PUL पावैं. 4. LUC पदुम पत्र, PUL ध्यानि न आवे; LUC ध्यान लगावहि. 5. PUL पद काली; LUC कली पर, LUC दीन्हे. 6. LUC फून, कमलनि, कीन्हे, PUL फनि के किलमष भसम जो कीने. 7. LUC तिन, PUL, LUC चरनन, LUC दुख साध्यो; PUL अंग साधे. 8. PUL वृत; LUC तप, PUL अपनेमद्द (for जप नेम), LUC गवरि अवराध्यो; PUL गौर अराधे. 9. PUL पूजित, LUC गवरि; PUL गौरि. 10. LUC PUL om. the whole line, PUL लरकाई, PAT धोहा. 11. LUC, PUL बहुत, LUC व्रत; PUL वृत, LUC कीन्हे. 12. PUL जाग्ये, मोहि, LUC दीन्हे. 13. PUL दिनि, LUC गवरि: PUL गोरि, LUC दीन्ह; PUL दीनी. 14. PAT प्रन, LUC, PUL पाइन.

† सोरठा

डारी मन की डोर, गाढे गहियहु साजना।
छाडहु प्रीति न तोर, तन जिम गुडिया नीर मै ॥ ७५ ॥

¶ चौपई

माइ बाप मै तुम कहुँ दीनी।
रुकम छडाइ आनि कहुँ दीनी॥
स्याम नाम सुनि अउगुनु लाइसि।
गारि लाइ ससपाल बुलाइसि॥
तुम प्रभु दूरि समुद ढिग छाए।
बैरी काल निकट हुइ आए॥
दुहु कालनि मध मरनु सुहेला।
स्याम सजीवन दरसु दुहेला॥
बिसहर कालु कंठ ढिग आयो।
गररू सागर तीर बतायो॥

---

† LUC om. सोरठा; PUL दोहा. 1. PUL ढारी, LUC डोरि; PUL ढोर, PUL गही अहु; PAT गहीयहु, PUL, LUC सजना. 2. PUL छाढे; LUC छोड़हु, PUL, LUC तोरि, LUC तन जिमि; PUL तन जो, PUL गुडीया, LUC नीर जौं; PUL ढोर मइ. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 3. LUC मोहि; PUL मइ, LUC कह दीन्हा. 4. LUC रुकुम, PUL छढाइ; PAT छपाइ; LUC छुड़ाइ, PAT आत कहि लीनी; LUC आन व्रत लीन्हा. 5. LUC सुनि औगुन; PUL सुनी ये गुन, PUL लइस. 6. PUL गार; LUC गारी, LUC लागि ससिपाल, PUL बुलाइस; LUC बुलायसि. 7. PUL प्रभ, समुद्र, LUC, PUL छाये. 8. PUL, LUC निकटि, PUL सुहि; LUC मो (for हुइ), PUL, LUC आये. 9. PUL दुहू काल महि मरणु; LUC दुहू कारन मैं मरन. 10. PUL सो जी का (for सजीवन), LUC दरस. 11. PUL बिसीहर; PAT बिरहै, PUL, LUC काल, PAT कंठि, PUL आया. 12. PUL गरड़ू; LUC गाररू, PAT कंठि (for तीर), PUL बताया.

द्विजमुख बचन स्रबन सुनि लेऊ।
तब प्राननि तस ऊतरु देऊ॥
कंठ प्रान रसना लउ नामहि।
पथिक बसेर करहि बिस्रामहि॥
धाइ धाइ अधरन ठहराहीं।
द्विज फिरि आवत लौं फिरि जाहीं॥
कैसे प्रान रहत घट ताके।
भै पंछी कंपत साखा के॥
छिनक कंठ छिन रसना माहीं।
स्वास हिंडोलै आवहिं जाहीं॥
सुमिरनु हित अब लउ ठहराने।
अब न रहैं अति ही अकुलाने॥ ७६॥

† दोहरा

सुमिरनु पाछै दै चलै, प्रान जात नहिं बार।
अधरनि धरि धरि राखिअहि, दै दै अउधि अधार॥ ७७॥

---

1. PUL दिज; LUC दूज, PUL, LUC श्रवन, लेहू. 2. PUL प्राणन; LUC प्रानन, LUC अस उतर देहू. 3. PUL प्राण, LUC लौं; PUL लो. 4. LUC करै, PUL, LUC विश्रामहि. 5. PUL ठहराई. 6. LUC, PUL दिज, PUL लो; PAT लै, LUC, PUL जाई. 7. PUL प्राण, LUC रहै. 8. LUC भये पंख कांपत; PUL भइ पंखी कंपित. 9. PUL छिन कंठिक छिन; LUC छिन ही छिन, LUC रसना लौं लावहि. 10. PUL स्याम (for स्वास), LUC हिडोरे; PUL हिढोरहि, PUL आवे, LUC जाहि. 11. PUL सुमरन; LUC सुमिरन, LUC लग, LUC अब लग; PUL अब लो. 12. LUC आव (for अब), PUL रहे; LUC रहहि, PUL अतिहि; LUC अत ही. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. PUL सुमरण; LUC सुमिरन, LUC, PUL पाछे, PUL दे, PUL, LUC चले, PUL प्राण; LUC प्रत, PAT जाति, LUC नाही; PUL नहीं. 14. PUL, LUC अधरन, PUL ही धरि (for धरि धरि), PAT राखीअहि; PUL राखीयहि; LUC राखियहि, LUC औधी, PUL अधारि; LUC यधार.

¶ चौपई

रोकतु स्वासु बिरह कै ताती ।
लोइन घूंटि लिखी मैं पाती ॥
उहै छूटि आसुन सौं पाई ।
कै छूटहि जिउँ मिलै कन्हाई ॥
अहो घनस्याम उनै घन आवहु ।
दुमन दोख दुख दाह मिटावहु ॥
सरनि सरनि कहि करउँ पुकारा ।
आवहु बेगि न लावहु बारा ॥
सिंघ सरनि जौ निरभइ जाई ।
सो कत स्यारहि देखि डराई ॥
अंम्रित नामु रसना रस पीवहि ।
ते विखबेलि न परसे जीवहि ॥
ऐसे गज कौं कउन छडावै ।
ताते मोहि भरोसो आवै ॥
गउरि प्रसाद न मिथ्या मानउँ ।
हरि अइहैं निस्चै इह जानउँ ॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. PUL रोकत स्वास; LUC रौकत सास, LUC की; PUL के. 2. LUC धूटि; PUL छूटि, PUL लखी मइ. 3. LUC वहै छूट असुवन ते; PUL वही छूटि असूअन स्यूं. 4. PUL छूटे, LUC जौ; PUL जो, PUL मिलहि. 5. PUL उन्हें (for उनै). 6. PAT दुतन; PUL दवन, PUL दु ंदाह, LUC विहावहु; PAT बढावहु. 7. LUC सरन सरन, PUL के (for कहि), LUC करहि; PUL करहुँ. 9. LUC सरन, PUL, LUC जो, PUL नरभइ; LUC निभै, LUC जाइहि. 10. PUL कति ससहे, LUC डरइहि. 11. LUC अंब्रत; PUL अम्रित, LUC, PUL नाम, PUL रसना महि; LUC रसहि रस. 12. LUC त्रिषबोल न. 13. LUC reads lines 13–14 after line 16, LUC को; PUL कहु, LUC, PUL कौन, LUC छुड़ावै; PUL छुढावे. 14. LUC भरोसा, PUL आवे. 15. LUC गवरि; PUL गौर, LUC मानो; PUL मानहु. 16. LUC ऐहैंहि निहचे यह जानो; PUL ऐसे निश्चै जीअ जानहु.

लव लालसा चरन परसन की।
छिनु छिनु बढ़ी आस दरसन की॥
जीवनु मरनु मैं तोहि सुनायो।
अब इहु समो नाथ सोइ आयो॥
कर परसत मसि औटत तए।
अच्छर सुलगि स्याम ह्वै गए॥ ७८॥

† दोहरा

हरि प्रति बैन बियोग बसि, लिखे वियोगी बाम।
'आलम' मसि कालमा नही, तिह दुख अच्छर स्याम॥ ७९॥

¶ चौपई

सभ दुख आपन लिखै न पारउँ।
कैसे बिरह वियोग पसारउँ॥
अलप लिखउँ पत्री है सोई।
बहुत लिखउँ तउ पोथी होई॥

---

1. PAT लिव; PUL अबहि, PUL चर्न. 2. PUL छिन छिन आस बड़ी. 3. LUC जीवन मरन, LUC सब तुमहि; मोहि तोहि. 4. LUC, PUL यह, LUC समौ, PUL, LUC सोई, LUC reads between lines 4 and 5 the following :

जन संकट इन्द्रीवर लोचन। सुमिरत सावधान गज मोचन॥

5. PAT मस, PUL येटत, LUC ताये. 6. PUL अखर; LUC अछर, PAT, PUL सुलिग, LUC हुइ; PUL होइ. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 7. PUL बिओग, LUC, PUL बस, PUL बिओगी. 8. PAT मस [illegible]; LUC मसि अरु कलम; PUL मस कासमा, LUC ताते (for तिह दुख), PUL अखर; LUC अछर. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 9. LUC, PUL सब, PUL दुखु अपना, LUC, PUL लिखे, LUC पारौ; PUL पारू. 10. PUL बिउग बिओगन, LUC पसारौ; PUL असारू. 11. PUL अल्प, LUC लिखौ, PUL लिखो, PUL पात्री हे. 12. PUL लिखो; LUC लिखौ, PUL तो; LUC तौ.

बहुत लिखन की समो न पायो।
तिह ते इहु दुख अलपु जनायो॥
इहु दुखु अलपु बहुतु करि मानहु।
अंक अंक पोथी करि जानहु॥ 4
द्विज आवत लगु बिनती कीनी।
थोरी अउधि जीय कहिं दीनी॥
है प्रस्थान थान छिनु एकहि।
मनु अरु प्रान नामु जिहबा महि॥ 8
निकसि प्रान रसना ठहराए।
मनहु प्रान पोखन कहिं आए॥
जिहबा प्रान आइ कै रहै।
तिन अच्छर पत्री महि कहै॥ 12
जिहबा सिथल छीन नहि डोली।
जपत नामु थकि रही अबोली॥
रसना रटत नाम थकि गई।
हस्त जीभ तब लेखनि भई॥ 16

---

1. LUC लिखौ को समौ. 2. PUL तिह तिग्र, LUC यह; PUL om. इहु, PUL दुखु, LUC अलप. 3. LUC यह; PUL या, LUC दुख, PUL अल्प; LUC अलप, LUC बहुत, PUL जानो; LUC जानहु. 4. PAT आंक आंक, कर, PUL मानो. 5. PUL, LUC दिज, PUL आवनु, LUC लौं; PUL लग, LUC कीन्ही. 6. LUC अबधि; PUL याबिधि, LUC जीब की; PUL जीय कहु, LUC दीन्ही. 7. LUC नाथ (for थान), छिन. 8. LUC प्रनवौ प्राननाथ निहकामहि; PUL प्राण अरु प्रण नाम जिह जेहइ. 9. PUL प्राण, जहां (for रसना), LUC ठहराने. 10. PUL, PAT जानहु, LUC को आने; PUL कहु आये. 11. LUC जिभ्या आनि प्रान हुइ रहे; PUL जिहव्या प्राण आइके रहे. 12. LUC तिहि, PUL अत्तर; LUC अच्छर, LUC मह, PUL, LUC कहे. 13. LUC जिभ्या थकित छीन नहीं बोली; PUL जिहव्या सिथल खीन नही ढोले. 14. LUC नाम, PUL थक, PUL अबोले; LUC अडोली. 15. PUL नामु. 16. LUC जीव, PUL ले (for तब); LUC लेखनी; PUL लेखन, PUL भै.

383

गुपत अगनि अँगुरनि संचारी ।
तिह सँताप लेखनि भइ कारी ॥ ८० ॥

† दोहरा

भसम भई कुइला भई, तपि तपि अंगुल झार ।
बरि बरि बूझै बारि मै, लेखनि लोहु लुहार ॥ ८१ ॥

¶ चौपई

पत्री लिखि जो फेरि मै, पढ़ी ।
बहुतु प्रीति पाती सिउँ बढ़ी ॥
सखीरूप ह्वै धरहरि कीनी ।
हरि आगम की आसा दीनी ॥
पाती देखत रथहि मँगायहु ।
विप्र बचन सुनि बार न लायहु ॥
पहिले गउरि मँदरि पगु धारहु ।
सरनि राखि सभ सत्रु सँघारहु ॥
चरन ध्यानु मैं सरनि तिहारी ।
मायारहित बिमल बनवारी ॥

---

1. LUC गुपतिः PUL जपत, LUC अगिनि अगुरिन संचरी. 2. LUC तिहि, PUL संतापि, LUC लेखनी; PUL लेपनि, LUC, PUL भई. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. PUL कोइला, LUC अग की झार; PUL अंगुरी झारि. 4. LUC बुझहि मु वर सौं; PUL बूड़े बारि मो, PAT लेखन, LUC, PUL लोह, PUL लुहारु. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. PUL लिखी, PUL सो, PUL जो; LUC में. 6. PUL बहुती; LUC बहुत, LUC पत्री, PUL, LUC सों, PUL चडी. 7. PUL सूप (for रूप), PUL है; LUC हुइ; PAT ह्वै, PUL धरहर, LUC कीन्ही. 8. PUL आवन की, LUC कीन्ही. 9. LUC मगावहु. 10 PUL विषय (for विप्र), LUC लावहु. 11. PAT पहिल, PUL गौरि; LUC गवरि, LUC मंदिल. 12. LUC सरन; PUL सरण, LUC तौ; PUL तब (for सभ), PUL सिंघारहु. 13. PUL चर्न, LUC, PUL ध्यान, PUL मो, LUC सरन; PUL सर्नि, LUC तुम्हारी.

राखहु लाज बार इहु आई ।
लाज छाडि मै करौं ढिठाई ॥
तिह ढीठउँ करि बिलगु न मानहु ।
तुम अंतरजामी सभ जानहु ॥ 4
जो पतिव्रत आपुन व्रत राखै ।
ताकहुँ अनभल कोइ न भाखै ॥
जो मालति मधुकर मन धरै ।
नीच कीट कैसे मनु करै ॥ 8
समो सँकेतु दरसु कब पाऊँ ।
तब लग पलु पलु बरस बिताऊँ ॥
चरन कमल जौ बेगि न ऐहैं ।
अँखियाँ पुर ढरि समुद समैहैं ॥ 12
हिय पावक अँखियनि मैं पानी ।
निस दिन अउटि अउटि उबरानी ॥ ८२ ॥

† दोहरा

पलु थंभै अँसुवा पलक, जलु उमड़ै अकुलाइ ।
इह दुख दिन लोइन दुखी, पंथु न पेखो जाइ ॥ ८३ ॥ 16

---

1. PUL बेर, LUC इहि; PUL यह. 2. PUL छाढि मइ करहु डिठाई. 3. LUC तिहि ढीठौ कर; PUL तिहि डीठ को, PUL मानो. 4. PUL om. the whole line, LUC सब. 5. PUL जिउ पतिव्रृता, LUC आपन; PUL अपनो, PUL वृतु राखे. 6. LUC ताकह; PUL ताको, PUL अभल, LUC कोउ; PUL कोऊ, PUL भाखे. 7. PAT जौ, PUL मालती, PUL मनु; LUC चित, PUL धरे. 8. LUC सग (for मनु), PUL धरे. 9. PUL समे; LUC समौ, PUL संकेत; LUC सकेत, PUL, LUC दरस, PUL कबि, LUC पावौं. 10. PUL तबि लगि, LUC, PUL पल पल, PUL बीताऊ; LUC बितावौं. 11. LUC and PUL om. lines 11–12. 13. PUL पावक नैनन में यह पानी, LUC आखिन मह. 14. LUC निसु, PUL डोट डोट हइरानी; LUC औटि औटि ठहरानी. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 15. LUC पल थंभे न असुवन; PUL जल थंभे असूआ, PUL, LUC उमढ़े; PUL उमढे, LUC अकुलाय. 16. LUC इहि; PUL यह, LUC सुपंथ; PUL पंथ, LUC पिख्यो जाय.

¶ चौपई

लिखि पढि पत्री सुद्ध लपेटी।
नैननि लाइ कंठ सिउँ भेटी॥
पाट गाँठि दै आगै धरी।
हाथ जोरि कै बिनती करी॥
अहो पाती तुम देव गुसाइनि।
विद्याधर जग कहि सुखदाइनि॥
तोरे कुल बोलनि साँचु सुभाऊ।
मिथ्या बोल न जानहु काऊ॥
दुख सुख बिधि तोपै सभ पाई।
लागी अलग ब्रह्म की न्याई॥
सत परतीत जगत पतिआइन।
दुहु जग चहु जुग तोरि पराइन॥
तुम कर जौ परसउँ हरि पाइन।
तुमहि माइ तुम गउरि गुसाइन॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. PUL लिख, PUL पठ; LUC पड़ि, PUL, LUC सुध, PAT पलेटी; LUC लेपटी. 2. PUL, LUC नैनन, LUC लाय, PUL सो; LUC सौं, PUL भेंटी. 3. PUL पट, PAT गाठ, PUL दे; LUC लै, PUL, LUC आगे. 4. PUL जोरि के बेनती. 5. LUC हो पत्री, PUL गुसायन; PAT गुसाइन. 6. PUL विद्याधर, LUC कह; PUL को, PAT ०दाइक; PUL ०दायन. 7. PUL तेरो; LUC तुम्हरे, LUC बोलन सांच सुभाउ; PUL बोलु जो साचो सुभाऊ. 8. LUC बोलि; PUL बोलु, PUL जानो, LUC काउ; PUL काहू. 9. LUC दुख सुख अरु सब ते तुम पाई. 10. LUC तू लगि अलग ब्रह्म की नाई; PUL लखी अलरुप्य ब्रह्म की न्याई. 11. PUL सति, LUC परतीति; PUL प्रतीति, LUC पतिया-इन्ह. 12. PUL दुह; LUC दुहू, PAT जुगि; LUC जुग (for जग), LUC तोर; PUL तेरी, LUC पराइन्ह. 13. PUL reads lines 13 and 14 in reverse order, LUC तुम कर सौ परसौ हरि पाइन्ह, PUL तुम करि परु सो ह......, PUL om. ०रि पाइन. 14. LUC तुम गौरि, PUL तुम्ह गौर, LUC गुसाइन्ह.

तुम से चतुर चित्त जौ जैहै।
चाह चतुरभुज कौ लै ऐहै॥
कमलनैन मुख देखहु जाई।
मोरि बिपत सभ कहौ सुनाई॥
हिये बैठि मुर प्रेम सुनावहु।
रोम रोम मै बिरहु सँचारहु॥
सो बोलहु जो हियँ भरिलेहू।
बिछुरें आस मिलन की देहू॥ ८४॥

† दोहरा

सत बोलहि पट ओट हुइ, पर कारज लगि जाइ।
ते प्रतीत करि पूजियहि, जगु पाली पतियाइ॥ ८५॥

¶ कवितु

गहरु न लाउ त्रिय जन को सँतापु जानि,
संकट हरन जानुकी ते जानि पाये हो।

---

1. LUC सौ, चित्र, PUL जे जैहि. 2. PUL चाहि, LUC चत्रभुज, PUL के; LUC को, PUL लग्रैहि. 3. LUC कवल०, PUL देखो. 4. PUL मेरी, LUC, PUL विपति, LUC सब; PUL तुम, LUC कहेहु; PUL कहहु. 5. PUL हीए बैसि; LUC हीये पैठि, PUL, LUC मोरा, LUC प्रान, PUL पसारहु; LUC पसारेहु. 6. PUL रूम रूम, PUL, LUC om. मै, LUC, PUL विरहा, LUC संचारेहु; PAT सचावहु. 7. LUC, PUL सोई, PUL बोलहू, LUC हीय; PUL हीए, LUC धरि. 8. LUC, PUL बिछुरे, PUL and LUC add the following after line 8 :—

PUL आनंद कथा पुकारि सुनावहु। मंद वचन तिहि समे छुपावहु॥

LUC आनद, सुनायेहु, समै छुपाएहु. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. PUL सुत; PAT सत्रु, PUL बोलहु, LUC ढोठ, PUL है, PUL लगु; LUC लहि, PUL आइ; LUC जाहि. 10. LUC, PUL प्रतीति, LUC पूजयहि; PUL पूजिअहि, PAT जग पातै; LUC जग पत्री, PUL पतिआइ; LUC पतियाहि, LUC adds after line 10: सब दुख आपन लिखै न पारौ. ¶ LUC om. कवितु; PUL चौपै ॥४२॥ चाली 11. LUC लावौ; PUL लाइ, PUL तिआ; LUC तिज, PUL, LUC संताप. 12. PUL हरण जनकी के ते में जाइ. PAT पाइ हो, LUC पाये हौ.

'आलम' सुरूप स्याम करुना के सिंध स्वामी ,
    जैसे गुन ताराहू अहिल्या नीके गाये हो ॥
मेरी यो बिपत सुनि प्यारे प्राननाथ पिय ,
    ऐसें पाउ धारौ जैसें हाथी काज धाए हो ।
पाती दीजै पँडित सँदेसा मुख ऐसे कहि ,
    आवन की आस बढ़ी मेरे जान आए हो ॥ ८६ ॥

† चौपई

अहो दिज दीन दासि मै तोरी ।
हरि सिउँ कहहु बिपत सभ मोरी ॥
पंडित पवनरूप हुइ धावहु ।
सीय काज रामहि लै आवहु ॥
जउ इह काज कीन तुम मोरा ।
दारिद दोख निवारउँ तोरा ॥
दै असीस दुरबल दिज बोला ।
अस धावउँ जस पवन हिंडोला ॥

---

1. PUL, LUC सरूप, PUL करुणा, LUC सिंधु; PUL सिध. 2. PUL तेरे गुग तारहु अहल्या, LUC गये हौं. 3. PUL जो (for यो), PUL, LUC विपति, PUL पीय; LUC पीउ. 4. PUL अइसे, LUC पाव, PUL धारो; LUC धरो, PUL जइसे, LUC काजे; PUL काजा, LUC धाये हौ. 5. LUC दीजौ; PUL दीजे, PUL पंढित, PUL, LUC संदेसो, LUC ऐसो, PUL कहो; LUC om. कहि. 6. LUC अस, PUL बाडी, PAT मेरै, PUL जाने; PAT जानै, LUC आये हौ. † LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. LUC अरे, देव (for दीन), PUL दासी हों तेरी; मैं दासी तोरी. 8. PUL सो; LUC सन, PUL कहो; LUC कहेहु, LUC, PUL विपति, LUC सब, PUL मेरी. 9. PUL, LUC पवनपूत, LUC हुई; PUL होइ. 10. LUC सीया; PUL सीअ, PUL राम ले. 11. LUC जौ; PUL जो, LUC, PUL यह, PUL काजु, PUL कीना; LUC कीन्ह, LUC तुम्ह, PUL मेरा. 12. LUC दुख (for दोख), PUL न राखहु; LUC न राखौ, PUL तेरा. 13. LUC द्रज, PUL बोल्या. 14. PUL ऐसे, LUC, PUL धावो, PUL जैसे, हिंढोला.

माइ मोरि तुम चिन्त न करहू।
हरि आए आनँद जिय धरहू॥
सात पहर अस धावन धावै।
प्रात होत पाती पहुँचावै॥
लै पत्री फुनि पंडितु चला।
सगन कनसुवा पाइ सु भला॥
ब्रत तेज न अस धायो धाई।
जोजन दसहि साँझ हुइ आई॥
आइ पहूँचो सरवर तीरा।
जपु संध्या करि परसौ नीरा॥
चलौ बेग उठि दरसन आसा।
साथि चन्द्रमहि कीन प्रकासा॥
चन्द्रजोति उजियर जग भावै।
इक रस बिष्पु उतावलु धावै॥
दरसन आस अनँदु जिय मानिसि।
बिखम पंथु खंडितु नहि जानिसि॥

---

2. PAT अनंद, PUL जीय. 3. PUL ऐसे, LUC धाउ; PUL धावे. 4. LUC पहुचाउ; PUL पहुँचावे. 5. PUL ले, LUC पुनि. 6. LUC सगुन, PUL कान सों, LUC पाइसि; PUL पायो. 7. LUC, PUL ब्रह्म तेज, PUL ऐसो, LUC आएहु; PUL आवो (for धायो). 8. LUC दसह; PUL दस, PUL होइ. 9. PAT आइ पहुचि; LUC पहुचो आइ, LUC सरोवर, PAT adds कै after सरवर. 10. LUC जप; PUL जउ, LUC परसो; PUL परस्यो. 11. PUL चल्यों; LUC चलो, LUC वेगि, तहा (for उठि). 12. PUL, LUC साथ, LUC चन्द्रमा; PUL चंद्रमहि, LUC कीन्ह; PUL कीओ, LUC प्रगासा. 13. LUC, PUL चंद०, PUL उजिआरा, LUC लग भलो; PUL जग भावे. 14. LUC तिहि खन (for इक रस), LUC, PUL विप्र, LUC उताइल; PUL उतायल, PUL धावे; LUC गयो. 15. LUC दरस, PUL आनंद; LUC आनद, PUL जीय. 16. LUC, PUL पंथ, LUC खंडित नाहीं जानसि; PUL खंडिसि जीअ आनिसि.

चउथ जाम जामिनि करि आयो।
द्वारावती बिष्णु नियरायो ॥ ८७ ॥

† दोहरा

देखसि पुर पर चंद्रमा, आइ रह्यो ठहराइ।
मानहु कीरति छत्रपरि, ऊपरि धर्‍यो बनाइ ॥ ८८ ॥

¶ चौपई

पूरब आगम भोर जनायो।
चलत चन्द्र पस्चिम दिस आयो ॥
सुधा स्रवत घर घर पर रह्यो।
द्वारावती उपरि थकि गह्यो ॥
घर बाहर मैं भेदु न पायो।
जानु झरोखिनि भीतरि आयो ॥
मंदिर धुजन किरन उरझानी।
अटिक डोर गुडियनि ठहरानी ॥
ऊँचे भवन क्रिस्न के दरसे।
नित उठि ध्वजा पताका परसे ॥

---

1. LUC चौथ; PUL चउथो, PUL जामु जामुनि, PUL, LUC कों, LUC आवै. 2. PUL विप्र, LUC नगर, LUC नियरावै; PUL निअरायो. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. LUC, PUL देखिसि, PUL पुरु पुरु; PAT पुर पुर, LUC, PUL रहो. 4. PUL मानो, LUC कीरती; PUL किरनिति, PUL छत्रपति; LUC छत्र पर, PUL ऊरधि भरो; LUC उपर धरो. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. PUL adds हरि before पूरब, PUL भोरु. 6. PUL, LUC चंद, PUL पश्चिम दिसि आयो; LUC पछिमहि सिधायो. 7. PUL स्वेत; LUC स्रोत (for स्रवत), PUL घर घर्परि, LUC बहो; PUL बह्यो. 8. LUC उपर, PUL रह्यो; LUC रहो. 9. LUC बाहिर, LUC मह; PUL मो. 10. PUL झरोखनि; LUC झरोखन, LUC भीतर. 11. LUC धुजनि, PUL, LUC किरनि, LUC निरझानी. 12. LUC अटकी, LUC, PUL डोरि, LUC गुडिय; PUL गुडीआ. 13. LUC उचे; PAT ऊचे, PUL कृष्ण; LUC किस्न. 14. PUL तिन्ह ऊपरि (for नित उठि), PUL धुजा; LUC धजा, LUC पताखा.

भूमि भूमि मस्तकु तिह लावहि ।
चिहनु भयो सुइ स्याम दिखावहि ॥
अमीधार कर मँदिर पखारे ।
चुइ चुइ परहिं बूँद जनु तारे ॥
किरनि सकेलि सीस भरि नए ।
समुद पिता के मंदिर गए ॥
पुत्र देखि आनंदत भारी ।
लहरि लोल जनु भुजा पसारी ॥
इह दिसि चंदु सिंध घरि गयो ।
उहि दिसि उदै सूर करि भयो ॥
जाग्यो जगतु बिहंगम बोले ।
सकुची कुमुद कमल दल खोले ॥ ८९ ॥

† दोहरा

गउ सुत परि आधीन जन, बनिक बियोगी भोर ।
संजोगी तीनों भए, चक्र पाहरू चोर ॥ ९० ॥

---

1. LUC मस्तिक, PUL तह लावे; LUC तहाँ लावै. 2. LUC चिहुन; PUL चिहन, LUC भये, PUL, LUC सोई, PUL दिखावे; LUC दिखावै. 3. PUL अमीय०; LUC अमिय०, PUL, LUC करि, LUC मदिल; PUL मंदर. 4. PUL चुइ चुई पविन, PAT ब्रिंद, LUC जिमि, PAT राते (for तारे). 5. PUL किरन सकेल ससि, LUC नाये; PUL नयो. 6. PAT सुमुद, PUL मंदिरि गयो. 7. PAT छत्रु (for पुत्र), PUL, LUC आनंदो. 8. PAT लहरी; LUC लरहि. 9. PUL इह दिस; LUC इहि त्रिधि, LUC चंद सिय घर, LUC गएउ; PAT आयो. 10. PUL चहु दिस, LUC उदौ सूर कर; PUL सूरु उदे करु, LUC भएउ; PAT भायो. 11. LUC लाग्यो जगत, PUL बिहंगमु बोल्यो. 12. PAT सकुचि कुमिद; PUL सकुची कुमदि, PUL खोल्यो. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. LUC गौ सुत; गोसुत, LUC पर आधीन, PAT जनु, बनक, PUL विओगी; LUC विलोकी. 14. LUC पहरुवा; PUL पहरीया.

¶ **चौपई**

उदवत भानु भयो भिनुसारा।
बिप्पु करतु पट्टन पैठारा॥
जिउँ सुमेर ते किरनै ढरी।
धाइ कनिक कलसनि परि परी॥
एक सूरु जब दरसनु दीना।
जगमग कलस कोटि रबि लीना॥
घर घर परि दामुनि जनु कउँधा।
चितवत चक्रित बिप चकिचउँधा॥
पैठो पउरि नगर की आई।
देखि पउरि द्विज रह्यो लुभाई॥
पवरि उतंग कनिक कै ठाढी।
जानु सुमेर खोदि कै काढी॥
फटिक पगार कोटु चहुँ फेरे।
विद्रुम जटित कँगूरा घेरे॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. LUC उदित; PUL उदवन; PAT उदनल, LUC, PUL भान, PAT नलसारा; PUL भिनसारा. 2. LUC, PUL विप्र, LUC करत पटन पैसारा; PUL करन बैठन बैठारा. 3. LUC जो; PUL जिउ, LUC सुमेरि तौ, PUL किरन जो डरई; किरनै ठरी. 4. PUL धाई, LUC कनक, LUC कलसन; PUL कनसन, LUC पर ठरी; PUL होइ परई. 5. PUL सूरिज; LUC सूरज, PUL जबि, LUC दरसन; PUL दरसु, LUC दीन्हा. 6. LUC कीन्हा; PUL कीना. 7. PUL घरि घरि, LUC पर, PAT दमिनि; LUC कामिनि, LUC जुनु कौधै; PUL जनु कौंधा. 8. LUC, PUL बिप्र, LUC चकचौधे; PUL चकचौंधा. 9. LUC पवरि; PUL पोरि, LUC, PUL आयो. 10. LUC पवरि; PUL पवर, LUC द्रज; PUL दिज, LUC रहो, PUL भुलायो; LUC लुभायो. 11. PUL पवर उतेहि, LUC कनक, PUL, LUC की, PUL दांढी. 12. LUC जनहु सुमेरि, PUL खोदि के; LUC कोरि कै. 13. PAT फटक; PUL फुदक, LUC पराग कोट चहूँ फेरा; PUL किंगरा कोट चहूं फेरि. 14. LUC विद्रुम, LUC कंगूरन धेरा; PUL किंगुरे घेरि.

गढ उतंग अलिका लगु दरसत।
अथवत नखत कँगूरन परसत॥
तिह ते मँदिर कनिक के ऊँचे।
उडत पंखि नहि बेगि पहुँचे॥
हरित काँच की भूमि सँवारी।
थंभ कपूर पगार पवारी॥
बिबि जोजन लगु हाट सँवारे।
बनिजहिं रतन तहाँ बनिजारे॥ ६१॥

† दोहरा

मनि मानिक पट पाट बहु, कस्तूरी के ढेर।
बैठे बनिजहिं साह तहँ, धन तन सभै कुबेर॥ ६२॥

¶ चौपई

राइ रंकु ग्रहु जानु न जाई।
क्रिस्न भवनु दिज पूछौ आई॥
अहो दिज पथिक भलो तूं नाहीं।
सूरु कि पूछहि दुपहर माहीं॥

---

1. PUL गंड, LUC अलका; PUL लंका, LUC, PUL लग. 2. PUL दिज हरखत कैसे पुर परसत, LUC नगर (for नखत). 3. LUC तिहि ते, कनक. 4. PUL. उठत, PAT पंख, LUC, PUL पंखी, LUC नाहीं; PUL नही, PUL बेग. 5. PAT हरत, PUL कंचन की; PAT कंचु की, LUC भुमि. 6. LUC कपूर के भीति पवारी; PUL कपूर छगारि भवारी. 7. PUL बिब, LUC लग; PUL लगि. 8. PAT, PUL बनजहिं, LUC जहाँ, PUL बनजारे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. LUC मनिक; PUL मानक, LUC अरु अगमद (for कस्तूरी) 10. PUL, PAT बनजहिं, PUL तहाँ; LUC जहं, LUC धनपति सबै कुबेर; PUL धन तिह सवे कुमेर. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. PUL राउ, LUC, PUL रंक, LUC दिज; PUL गृह, PUL जान्यो नही जाई; LUC जानि न पाई. 12. PUL कृष्ण; LUC किस्न, PUL, LUC भवन, PUL पूछे; PAT पूजै, LUC जाई. 13. LUC, पंथ भूल तू नाही; PUL पंथिक भूलो तुम नाहीं. 14. LUC, PUL. सूर, LUC कि पूछै; PUL किउ पूछे, PUL दुइपहर.

जो ससि सहस कोस ते सूझै।
कहियतु मूढ़ निकट हुइ बूझै॥
ऊँचे मंदिर कलस अभासे।
तुम जाने रबि कोटि प्रगासे॥
आगै जाइ देखि धउँ चाही।
क्रिस्न भवन अमरावति आही॥
चलि आयो तहँ बिप्पु हुलासा।
क्रिस्न मँदिर देखिसि कैलासा॥
नगन जरित सभ कनिक पनारा।
मनि मानिक के जरित किवारा॥
सुंदर जातु भरे संचन के।
मनि गनि कलस महल कंचन के॥
जहँ लगु डीठ उच्च लगु धाई।
मँदिर सहित उडमँडिल समाई॥

---

1. PAT सो; PUL जिउ, PUL सूझै. 2. LUC कहियत; PAT कहीयतु; PUL काहे ते, PUL मंढ, PUL निकटि, PUL होइ; LUC नाहीं, PUL बूझै. 3. LUC आभासा. 4. PUL. तुम्ह जान्यो; LUC तुम जानहु, PUL प्रकासे; LUC प्रगासा. 5. LUC, PUL आगे, LUC जाहि देखि धौ; PUL धाइ देख धो, PUL चाहि. 6. LUC किस्न; PUL कृष्ण, PUL अमरावती आहि. 7. LUC तहां; PUL तहा, PUL विपु; LUC विप्र. 8. PUL कृष्ण; LUC किस्न, PUL जो देखि बिगासा; LUC देखिसि कविलासा. 9. PAT नगिनि; LUC नगर, PUL, LUC जटित, PUL सभि; LUC सब, LUC पौरि पगारा; PAT कनिक पगारा. 10. PUL, LUC जटित. 11. LUC om. lines 11-12, PUL भवे. 12. PUL मणि माणिक कलस, PAT महिल. 13. LUC, PUL जहाँ, LUC लग; PUL लगि, LUC दीठ उमगति धाई; PUL डीढ उंच लगि धाई. 14. PUL मंढल सहित, LUC उठि मंद; PUL उठि संढल, LUC adds after line 14 the following:

जे नग नखत कलस ढिग भये। सूर कसौटी कसि कसि लीये॥
त्रभुवन पर त्रभुवन मन मोहै। ऊपर कलस छत्र धुज सोहै॥

जगमग मनि मानिक उजियारे।
दिपहिं रैनि दीपक जनु बारे॥
उजियारी घर घर पर छाई।
सुकल स्याम पखु जानि न जाई॥ ६३॥

† दोहरा

छजा चउखंडी छत्र परि, मनिगन जड़े इकत्र।
जनु बिराम को जानि ढिग, बैठे उतरि नछत्र॥ ६४॥

¶ चौपई

देखसि पवरि नगर की आई।
मनिगन पवरि कनिक अँगनाई॥
निसि दिनु अस्तुति करहिं पुकारे।
सुर नर मुनि गन गंध्रव द्वारे॥
नव निधि चेरी जहँ लउ डोलहिं।
प्रात होत बंदो वै बोलहिं॥

---

1. LUC जगमगाहि मानिक, PUL उजिआरे. 2. PAT दिपह; PUL दीसहि, PUL रेण दीप; LUC दीप रैनि, LUC तारे. 3. LUC om. lines 3-4, PUL उजिआरी घरि घरि परि. 4. PUL जान न. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. PUL चुखंडी; LUC मौखड़ी, PAT छाति परि; LUC छाति पर, PAT मनिगनि; PUL मनि, PUL, PAT जटे, PUL याकत्र. 6. PUL मानो बिराम के जानु ढिग; LUC जानौ विराम कौ जानि करि, LUC बैठहि, PUL, PAT निछत्र. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपे. 7. PUL देखि पोर, PUL, LUC मंदिर (for नगर). 8. PUL मणि गण; PAT मनि गनि, LUC मंदिर (for कनिक), LUC अगनाई; PUL जो बनाई. 9. LUC, PUL निसु दिन, PUL उस्तति कहत. 10. PUL, PAT सुरि, PUL गण, LUC गंधूप; PUL गंद्रब. 11. PUL नव निधि चेली तहँ जो ढोलहिं; LUC नवौ निधि जहाँ चवर ढुरावा. 12, LUC, PUL बेद (for होत), PUL है; LUC जो (for वैं), LUC बुलावा.

सेवहिं जिम सेवक अरु दासी।
आवहिं सेव सिद्ध चउरासी॥
रतन किवार सूर कै काँती।
चउकठि नीलमनिन कै पाँती॥
देखि द्वार दिज आयो चाइनि।
जहँ जगु चलै सीस कै पाइनि॥
राजरिद्धि कै पार न पायो।
भीरि देखि ब्राह्मनु भरमायो॥
सुरपति जहाँ प्रवेसु न पावै।
मोरि चाह लै को पहुँचावै॥
राजन बिनती करत न बनई।
मोसे दीन छीन को गनई॥
ब्रह्मादिक कहँ दुरलभ जहाँ।
मोहि लै को पहुँचावै तहाँ॥

---

1. LUC जिमि. 2. PUL, LUC आठों सिध सिध, LUC चौरासी. 3. LUC सूरज की; PUL सूरिज की, LUC क्राती. 4. PUL चौखडी नील मनिनि की; LUC चौखट लील मनिन की. 5. LUC चाइन्ह; PUL चाहनि. 6. LUC जहां; PUL जो, PUL लगु (for जगु), चले, LUC, PUL के, LUC पाइन्ह; PUL पायनि, LUC adds between lines 6 and 7 the following:

भूली भूप मुकुटन की अनी। ता में फेरि कनक भुमि बनी॥
मुकट रतन छाजा कांर छाजत। नगर कुंदन जानौ जरी विराजत॥

7. PUL राजरिधि; LUC राजारिधि, PUL कहू; LUC को (for कै), LUC पारु. 8. LUC भीर, PUL ब्रह्मनु भइ आयो; LUC ब्रामन विसमायो. 9, PUL सुरिपति, LUC प्रवेस, PUL पावे; LUC पावहि. 10. PUL मेरी, PUL चाह को ले पहुँचावे; LUC चाहत तहां को पहुचावहि. 11. LUC reads lines 11-14 after दोहरा 96, PUL वेनती, om. न, LUC बनाई. 12. PUL मोसु, छीन कु को, LUC गनाई; PUL गनयाही. 13. PUL, LUC बह्मादिक, LUC कह; PUL कु, LUC दुलभ; PUL दुर्लभ, LUC लहा. 14. LUC मुहि, LUC को लै; PUL ले को, PUL पहुँचावे.

चरन कमल दरसन की आसा ।
रोम रोम मोरे प्रेमु प्रगासा ।। ६५ ।।

† दोहरा

अन्तरजामी जगत-गुरु, दीनबंध सुखधाम ।
मोहि प्रतीति है प्रेम सिउँ, दरसन देखउँ स्याम ।। ६६ ।।

¶ चौपई

कटि क्रिपान करदंड सुधारे ।
दारुन द्वारपाल तहँ द्वारे ।।
पत्री लै पंडितु तहँ आयो ।
द्वारपाल कहुँ नैन जनायो ।।
महाराज कहुँ सुधि करु भाई ।
कंदनपुर सिउँ पत्री आई ।।
दउरि पउरियै बेगि जनायो ।
कुंदनपुर सिउँ ब्रामनु आयो ।।
रिधि सिधि दोऊ चँउरु ढुरावहि ।
कमला चरन-कमल सहरावहि ।।

---

1. PUL दर्सन करि; PAT इम दरसन. 2. PUL रूम रूम, PUL मेरो; PAT मिरि, LUC, PUL प्रेम, PAT प्राका (for प्रगासा). † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. PUL, PAT-गुर, LUC दीनबंधु. 4. LUC मुहि, PUL प्रतीत हे, LUC, PUL प्रेम सों, PUL दरसनु, LUC देखिहौं; PUL देखाहु. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. LUC कनक पानि; PUL कटि पाणि, PUL करि दुंद (for कर दंड) 6. PUL दारुण LUC द्वारन, PUL द्वारपालु, LUC जिहि; PUL हा (for तह). 7. LUC पाती लै पंडित तहां; PUL पत्री ले तहाँ पंडितु. 8. LUC द्वारपालक, PUL कु; LUC सौ (for कहुँ), LUC सैन. 9. PUL को; LUC कह, PUL करि; LUC करू. 10. PAT कुंदरपुर; LUC कुंदिनपुर, PUL सों; LUC ते. 11. PUL, LUC दौरि, LUC पवरिया; PUL पवरीआ, LUC जाइ (for बेगि). 12. PUL सो; PAT सि; LUC ते, PUL ब्रह्मणु; LUC ब्राभन. 13. PAT दोउ; LUC होउ, PUL चँवरु; LUC चवर, PUL ढुलावहि. 14. PUL कमल-चरन कमला सिहरामहि.

कुंदनपुरु जब कहसि पुकारी।
जागि परे उठि बैठि मुरारी॥
पत्री भीतरि बेगि मँगाई।
बाचन लाग छोरि जदुराई॥
जो जो आखर मनमहि आवहि।
रोम पुलक तन प्रेम जनावहि॥
नउतन प्रेम पुरातन भयो।
चीरी पठत चीरि मन गयो॥
बिरह ब्यापि थकि रहे अबोले।
पाती पढ़त पात जिम डोले॥
छोरि पढहिं अरु बहुरि लपेटहिं।
पाँति पाँति हिरदे सिउँ भेटहिं॥ ६७॥

† दोहरा

बिरह बुझानी सुरति जल, सींचत उठी सुलग्गि।
प्रीति पुरानी प्रज्वली, जिउँ चूने की अग्गि॥ ६८॥

---

1. PUL कुंदनपुर; LUC कुंदिनपुर, PUL कहस; LUC कहिस. 2. PUL परी उठी. 3. LUC पाती भीतर, PUL बेग, LUC बुलाई. 4. PUL बांचनि, LUC लगे; PUL लागे, PUL जादुराई; LUC जदुनाई. 5. LUC जौ जौ; PUL ज्युँ ज्युँ, PUL अछर, LUC मन मह. 6. PAT पुलिक; LUC पुलकि, LUC तनु. 7. PUL, LUC नौतन नेह, LUC भएउ. 8. PUL पठतु; PAT पढ़ित, PAT चीर, LUC मन गएउ. 9. PUL बिरहा; PAT बिरहि, LUC ब्याह (for ब्यापि). 10. PAT पती, PUL पठित; PAT पड़त, PAT पत्त, LUC जिमि. 11. LUC om. lines 11-12 and reads the following:—

अपति एक पढ़ि बार लपेटहि। खिन देखहि खिन हिय सौं भेटहि॥

PUL कछू पड़े; PAT छोरि पड़हि, PUL फिरि, PAT पलेटहि; PUL लपेटे. 12. PUL आंक आंक हिरदे सो भेंटे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. PUL बिरहि, LUC सुलागि; PUL सुलग. 14. LUC पुरान, PUL प्रजली, LUC, PUL जो, LUC आगि; PUL अग.

¶ चौपई

बिरह पढ़ै बिछुरे की पाती।
पुलक प्रसेद भीजि गई छाती॥
पढ़ि पढ़ि बिरह बीज हिएँ बोइसि।
लिखि लोइन लोहू भरि रोइसि॥
सुमिरत सरक लाग जनु भाला।
कसको कांड करेजे साला॥
आँखिन देखिसि आखर जेते।
हिएँ पैठि पिंजर जिनि रेते॥
सिथल हस्त धीरजु नहि धरई।
पत्री छूटि छूटि भुँइ परई॥
ब्याकुल जस बिसहर बिसु चढ़ई।
छाती बरै को पाती पढ़ई॥
हियँ तरकत नैननि जल सरबतु।
कागदु भो कासी को करवतु॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. PUL बिरहु, PAT बढै; PUL पढे, PUL बिछुरै. 2. PAT पुलिक; LUC पुलकि, PUL प्रस्वेद, LUC मीलि (for भीजि). 3. PUL पड़ि पड़ि; PAT पड़ी, LUC हिय; PUL हीये, LUC बोयसि. 4. PUL लखि, LUC मरि. 5. PUL सुमरति; LUC सुमिरति, PAT रसक; LUC सरकि, LUC लागि, माला. 6. PUL कसके; LUC कसकै, PAT दंड (for कांड), LUC करैजे. 7. PUL आंखनि, PUL देखरि; LUC देखे. 8. PUL, LUC हीये, LUC पंजर जिन्हि; PUL षिजिरि तिन. 9. PUL, LUC धीरज, PUL नहीं; LUC नाही. 10. PUL छोटि छोटि, LUC मुई (for भुँइ). 11. PUL ब्याकुलु, LUC जसि; PUL ज्युं, PAT बिसिरहि; PUL बिसही, LUC बिस, PAT चड़ई; PUL चडई. 12. LUC जरै; PUL बरि, PAT, PUL पड़ई. 13. LUC, PUL हीय, PUL तकत, PAT adds रकत after तरकत, LUC नैनन्ह, LUC सरबत; PUL सरकतु 14. PAT कागरु; LUC कागद, PUL भयो; LUC भौ, LUC कासी कर करवत.

जे मुख आवहि आखर खरे।
रोम रोम सर ह्वै संचरे॥
पाँति पाँति हुइ हिएँ समाई।
जनु सर छूटि पिछौड़े जाई॥
मसि जिम घुरि पुतरी भई पानी।
आखर आखर आँखि समानी॥
कंपहि अधर डार जिम डोलहि।
अछर अउर अउर मुख बोलहि॥
पढ़ी न जाइ बियोगन चीरी।
हिए सँकेत स्याम भइ पीरी॥ ९९॥

† दोहरा

पतिया पीरी ते भई, पतझारी को पात।
कारे अच्छर स्याम पढ़ि, लोइन कीने रात॥ १००॥

¶ चौपई

लिखत कुँवरि जो नैननि घूटे।
ते अँसुवा हरि नैननि छूटे॥

---

1. PUL आवे अखर. 2. PUL सर वह; LUC सर हुइ. 3. PUL पाँत पाँत, PUL वह (for हुइ), PUL हीये; हाये, LUC समानी. 4. LUC, PAT फूटि, PAT पिछुँडडै; PUL पछौटे, LUC जानी. 5. PUL मसु, LUC जो घुरि पूतरी, PAT भई. 6. LUC आनि समानी; PUL आखर मानी (for आँखि समानी). 7. PUL दांत (for डार), LUC जिमि, PUL बोलहिं. 8. PUL, LUC अवर अवर, LUC कछु (for मुख). 9. PAT पड़ी; PUL पठी, PUL विओगन, PAT चेरी. 10. PUL हीये; LUC हीय, PUL, LUC सास, LUC भई; PAT पइ, LUC, PUL भीरी. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 11. PUL पतीया, LUC भये, PAT जिउँ झारी, LUC, PUL के. 12. PUL, LUC अछर, PAT पड़; PUL पड़ि, LUC कीन्हे. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 13. PAT कुंयर; PUL कुवर, LUC पलकनि जे छूटे; PUL असूवन जल थूटे. 14. PUL अंसूआ, LUC नैनन; PUL नइनन.

जे उन दुसह उसास दुराए।
ते सभ क्रिस्न हिदे भरि आए॥
सकुचि कुँवरि जो प्रेम छिपायो।
उमगि सु क्रिस्न हिएँ महि आयो॥
रुकमनि प्रेम जोति परजारी।
तिह हरि हिएँ दवाग सँचारी॥
बिरह बान रुकमनि तन जागा।
हरि तन सहस कोटि हुइ लागा॥
रुकमनि नैन उनै घन आए।
नेह मेह मोहन बरसाए॥
बालक बिरह कुँवरि तनु तायो।
ह्वै कै तरुन कान्ह तन धायो॥
बिरह डंक दै डसी कुमारी।
तिह बिख बिसुध भए बनवारी॥
अच्छर जानि स्याम दुखु लाइसि।
हियं तकि पाती बान चलाइसि॥

1. LUC जो उन्ह; PUL जे उनि, PUL दुरह, PAT दुसास, PUL दुराइ; LUC दुराई. 2. LUC सो सब, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC हिये; PUL हीये, PUL श्राइ, LUC श्राई. 3. PAT कुंयर, PUL, PAT छपायो. 4. PUL उमंग, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC, PUL हीये भरि. 5. PUL adds जो before रुकमनि, LUC रुकुमिनि, PUL om. प्रेम, PAT जोरि, PUL परिजारी; LUC परजरी. 6. LUC तिहि; PUL तिन, PUL रि (for हरि), LUC, PUL हीये, PUL दावागिनि; LUC दवरि, LUC संचरी. 7. LUC रुकुमिनि, लागा. 8. PAT कान सहस; PUL सहस कोट; LUC सहस काड, PUL होइ. 9. LUC रुकुमिनि, PUL नइन, LUC उमगि जल श्राये; PUL उने घनि श्राये. 11. PAT बरिकै (for बालक), PUL विरहा, PAT कुंयर; LUC कुवर, LUC तन, PUL लायो. 12. LUC हुइ कै; PUL दे कइ, PUL तरनु, तनि, LUC श्रायो. 13. PUL विरहा हंक दे दसी. 14. LUC तिहि, PUL बिसध. 15, PUL, LUC श्रछर, PUL जान स्याम; स्याम जानि, PUL दुख; LUC विख, PUL लाइस. 16. PUL हीये तक; LUC हिल तकि, PUL बानु चलाइस.

रुकमनि नेह हिएँ भरि लीना।
बूँद द्रवै सरवरु अस कीना॥
प्रीति बेलि जो गुपत बढ़ाई।
सो हरि अंक प्रगट बढ़ि आई॥ १०१॥

† दोहरा

साजन साची मित्तई, तोरी जाइ न तोर।
बूँद दिखाए समुद हुइ, उमगत प्रेमु हिलोर॥ १०२॥

¶ चौपई

दुख पाती रुकमनि दै घाली।
बार बार बाँचै बनमाली॥
एक जनम की उन सुधि लीनी।
जनम जनम को इन सुधि कीनी॥
भरि भरि आँसू नैननि ढरकत।
जनु मकरन्द कमलदल झलकत॥

---

1. LUC रुकुमिनि, PUL हीये; LUC सु हीय, LUC लीन्हा. 2. PUL बूँद बूँद वह सरवरु कीना; LUC बूँद बूँद कै सरवर कीन्हा, PUL and LUC add the following between lines 2 and 3 :

PUL इकहि चार उमगि जनु सागर। सरस स्याम घन कीने नागर॥

LUC एकहि बान उमगि जो सागर।...कीन्हे नागर. 3. PAT पाती; PUL प्रीत, LUC बोलि; PUL बेल, PUL ज्यो; PAT जु, LUC हिदै (for गुपत). 4. PUL, LUC अंग, LUC प्रकट हुइ धाई; PUL प्रगटि चढ़ि धाई, LUC adds after line 4 the following :

दुइज प्रीति रुकुमिनि आभासी। पूरन हुइ हरि हीये प्रगासी॥

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. PUL, LUC सजन, मित्रई, LUC तोरे जाइ; PUL तोरे ही जात, LUC तोरि. 6. LUC दिखावहि; PUL दिखासि, PUL मसद होइ, LUC उमगहि, PUL, LUC प्रेम, LUC हिडोरि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपे. 7. LUC रुकुमिनि; PAT रुकमन, PUL दे. 8. LUC बाचहि; PUL बांचे, PAT बनवाली. 9. PUL, PAT उनि, PUL सुध LUC कीन्ही; PUL कीनी. 10. PUL, LUC उन, PUL लीनी; LUC लीन्ही. 11. PUL नइनन झलकत; LUC नैनन छलकत. PUL हलकत.

अँसुवनि पाती पढत भिजाई।
परसत अँगुरिन आँच सुखाई॥
जउ न सलिल पाती परि परई।
कागद बिरह उसासनि जरई॥
जौं इह प्रलै पयोधि न भीजै।
कोटि सूर के तपत न सीजै॥
सो छिन माहि प्रेम छल छीजा।
रोम रोम भरि पुलकि पसीजा॥
पूरन ब्रह्म प्रेम महि जानहु।
सभ उर हिएँ प्रेम पहिचानहु॥
वै अचेत प्रभु चेत सँभारै।
अँसुवा नैननि घूटि निवारै॥
तहँ लगु बूँद नैन सौं टूटै।
जहँ लगु अँसुवा सभै निखूटै॥

---

1. PUL अंसूहन; LUC असुवन, PAT पानी, PUL पढ़ति भिजाए; LUC परत भिजाई. 2. PUL परसत असूअन बाच सुखाए; PAT बरसत असुवन बाचि सुखाई. 3. PUL, LUC जो न, PUL सलल, LUC पर, PUL पड़इ. 4. PUL कागनु; PAT कागर, LUC, PUL उसासन, PUL जरइ; LUC लरई. 5. PUL, LUC जो यह, LUC प्रलो, PUL पयोध; PAT पअउध, PUL भीजे. 6. PUL कोट, LUC reads this line after line 8, LUC तपनि तपीसा; PUL तपत न सीजे. 7. PUL, LUC सोई, LUC पल, PUL, LUC माह, PUL छर, LUC छीजै; PUL छीजे. 8. PUL पलक पसीजे. 9. PUL, LUC ब्रह्म, PUL प्रेम मइ; LUC प्रेम मैं, PUL जानो. 10. PUL, LUC सब, PUL उर हीये; LUC ऊपर, LUC प्रेमहि, PUL पहिचानो. 11. PUL वही; LUC हुई, LUC चेति, PUL संभारे. 12. PUL असूआ; LUC असुवन, LUC नैनन्ह घूट, PUL, LUC निवारे. 13. PUL तहा लगि; LUC तहाँ लग, PUL, LUC सों, PUL टूटे. 14. PUL. जब लगि; LUC जहा लग, PUL असूआ, LUC सवै निछूटै; PUL वै निछूटे.

लै मकरंद चंद मुख धोइनि।
पत्री आदि अंत फिरि जोइनि॥
छिनु लपेटि छोरै अरु भेटै।
तनु मनु जिय जनु साथ लपेटै॥ १०३॥

† दोहरा

प्रीतम की पतिया पढत, जानहु मसि हुइ जाउ।
तनु मनु नैना प्रान मिलि, आखर माहि समाउ॥ १०४॥

¶ चौपई

पढ़ि सभ स्याम लपेटी पाती।
नैन सलिल करि सरवरु छाती॥
पढ़ि पत्री हियँ अंतरि लीनी।
फुनि हरि ब्रामन की सुधि कीनी॥
बेगि पवरिया लीन हँकारी।
दरससि मोहनु रूप मुरारी॥

---

1. PUL ले, LUC धोइन्ह; PUL धोयन; PAT दोइनि. 2. PAT ओरि अंति; PUL अवर अंग, LUC जोइन्ह; PUL जोयन; PAT चोइनि. 3. PUL छिन, LUC लपेटी, PUL छोरे उर भेंटे; LUC छोरहि पुनि भेटहि. 4. LUC धन मन, PUL जो जनु साथ लपेटे; LUC धन जानौ साथ लपेटहि. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC पाती; PUL पतीया, PUL पड़त, PAT जानै मसु; PUL जानो मस, PUL होइ जाइ. 6. LUC तन मन, PUL मिल; LUC हुइ, LUC आकन माह; PUL अछर माहि, PUL समाइ. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. PAT, PUL पड़ि, LUC सब, PUL पतीया; LUC पतिया. 8. PUL नइन, PAT सलित; PUL सरित, PUL कर, LUC सरवर; PUL सरवतु, PUL, LUC छतीया. 9. PUL, PAT पड़ि; LUC पढी, LUC पाती, PUL हीये; LUC हरि, PUL, LUC अंतर, LUC लीन्ही. 10. PUL पुन; LUC पुनि, PUL ब्रह्मन; LUC ब्राह्मन, LUC कै, लीन्ही. 11. PUL वेग पवरीया, LUC लीन्ह. 12. PUL दरस देखि गिरि गयो बिरवारी, LUC मोहन.

देखि मुखारविन्द की कांती।
निरमल सरद चाँद कै भाँती॥
सुन्दर स्याम सरन दुखमोचन।
बाहु बिसाल कमलदल लोचन॥
कुंडल स्रवन दिपहिं उजियारे।
मुकट सूर मनिगन जनु तारे॥
दुरलभ जगत रूप की रेखा।
सो मुखु आइ दीन दिज देखा॥
आसिख उस्तति कहि जु पुकारी।
प्रेम उमगि गिरि गयो भिखारी॥
सनमुख द्रिस्टि न पलु ठहरानी।
अंग पसीजि भीजि भो पानी॥
कंपत नैन नीरु भरि आयो।
विप्प देखि हरि धाइ उठायो॥
देखत दीन दया मनि आई।
दुरबलु देखि अंग लै लाई॥
आदरु कोन पास बैठारे।
धूरि झारि पट चरन पखारे॥ १०५॥

1. PUL देख, PAT मुखारिविन्द, LUC क्राती. 2. PUL सर्द, PUL, LUC चंद की. 3. PUL दरसु; LUC दरस (for सरन), PUL दुखु-मोचन. 4. PUL बहा, LUC ० दलमोचन. 5. PUL, LUC श्रवन, PAT दीप. 6. LUC मुकुट, PUL मनगन: PAT मनिर्गानि, PAT ढिग (for जनु). 7. LUC दुर्लंभ लगत. 8. PUL, LUC मुख, PAT जिह; LUC द्रज (for दिज). 9. LUC आइ असि; PUL अनेक (for आसिख), LUC अस्तुति; PAT उसतति, LUC कहत; PUL कहसि. 11. LUC दिष्टि; PUL देख, LUC पल. 12. PAT अंकु; PUL अंक, LUC, PUL पसीज भीज, LUC भवा; PUL भै. 13. PUL, LUC नीर, आये. 14. PUL, LUC विप्र, LUC आइ, PUL, LUC उठाये. 15. LUC दयाल (for दया). 16. LUC दुर्बल; PUL दुरबल, LUC, PUL देह (for देखि), PAT अंगि; PUL अंक, PUL ले. 17. PUL, LUC आदर, PUL कर; PAT करि, LUC पास बैठाए; PUL पीहर सभ ढारे. 18. PUL धूर झार पर, LUC पखराये.

† दोहरा

करुना मन महि करि रहे, सुमिरत रुकमनि नाम ।
अंतरजामी जान सभ, फिरि फिरि पूछै स्याम ॥ १०६ ॥

¶ चौपई

मुख संदेस ब्रामन जो कहे ।
छिन इकु चिंतमान चुप रहे ॥
अब द्विज चित चिन्ति नहि धरहू ।
करि इसनानु रसोई करहू ॥
भोजन भुगति लिआवहु जब ही ।
रथ सारथी मँगाऊँ तब ही ॥
बोलै विष्णु भगत की न्याई ।
रोम रोम मै त्रिपति गुसाँई ॥
महाराज जब दरसन दीना ।
जानहु अंम्रितु पान मै कीना ॥

---

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 1. PAT कारन; PUL कृष्ण (for करुना), PUL मन मइ; LUC मन मौ, PAT करि कारजको; PUL कर कारज; LUC सुमिरत रुकुमिनि. 2. LUC जानि कै; PUL जान सभि, PUL फिर फिर; LUC छिनु छिनु, PAT पूजै; PUL पूछे; LUC सुमिरत. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 3. PUL संदेसा; LUC सदेसा, LUC बाभन; PUL ब्रह्मन; PAT ब्रमन, PUL om. जो; PAT जौ, LUC कहै. 4. LUC छिनु, PUL, LUC एक, LUC चितमनि; PAT चिंतामनि, LUC चुपु रहै. 5. LUC अब द्रज चिंता चित नाहीं गहै; PUL अब तुम दिज चिंत चिन्ति धरहो. 6. LUC अस्नान; PUL इस्नानु, PUL करहो, LUC adds between lines 6 and 7 the following: चित चिंता जनि कौनेउ धरहू. 7. PUL भुगिति, LUC लै आवै; PUL आवहो. 8. LUC, PAT स्वारथी, LUC मगावा; PUL मंगावो. 9. LUC, PUL बोले विप्र, LUC नाई. 10. PUL मोहे (for मै), LUC त्रपत, PUL गुराई. 11. LUC जो (for जब), PUL दरसनु, LUC दीन्हा. 12. PUL जानो अंम्रित पान मइ; LUC मारौ अंम्रत पान में, LUC कीन्हा.

चरन कमल ए मनमहि आन्यो ।
जनम जनम कहँ त्रिपति अघान्यो ।।
जिह रस सिव सनकादि अघाए ।
जिह रस सुक मुनिवर फल खाए ।।
जिह रस मत्त मगन सुर नारद ।
जो रस कथै कबीसुर सारद ।।
सो रस चरन कमल करि पायो ।
सकल प्यास सभ भूख नसायो ।।
✓जस पूजी मुरि दरसन आसा ।
तस हरि हरहु कुँवरि की प्यासा ।।
दुसह वचन सुनि सुनि मुरछाई ।
मुहि डरु रुकमनि जनि मरि जाई ।।
कै हरि मिलहि कि प्रानन देई ।
तब लगि पानी पान न लेई ।।
श्रवत सुनी यहु धीरजु धरई ।
इह छिन यह सुधि उह को करई ।। १०७ ।।

---

1. LUC कवल, LUC ये; PUL मइ, LUC मन में, LUC, PUL आने. 2. PUL जन्म जन्म केह, LUC त्रपत, LUC, PUL अघाने. 3. LUC जिहि, सनकादिक धाये. 4. LUC जिहि; PAT जिस, LUC रस सुर मुनि अति सुख पाये. 5. LUC जिहि रस; PUL जिह से, LUC मत, PUL सुरि; LUC मुनि. 6. PUL रसु; LUC सुर, PUL कथा; PAT कबे, PUL कवीसर; LUC कत्रीसुर, LUC नारद. 7. PUL सो रसु; LUC सोरह, PUL, LUC कवल, LUC रस पायो; PUL लग आयो. 8. LUC संक भूमि सब परसन आयो; PUL सकल पाप सदुख भूख मिटायो. 9. PUL, LUC मोरी, PUL सासा (for आसा). 10. LUC तसि हरि हरु रुकुमिनि की त्रासा, PUL तैसी हरहु. PAT कुंयर; PUL कुंवर. 11. LUC मुरिछाई. 12. PUL मोहि डरों, LUC जनि रुकुमिनि; PUL रुकमनि जिन. 13. LUC कै हरि मिलै क्रपानिधि दाई, PUL के हरि, के प्रानन देही. 14. LUC लग, PUL लेही; LUC खाई. 15. PUL सुने हीये, धरही, LUC om. the whole line. 16. PUL इहि छन उह हरा सुधि को करही. LUC om. the whole line.

† दोहरा

पतिया पहुँची हरि मिलै, अब अइहै इह ठाँउ।
रोम प्रकासहि पंख ह्वै, इह सुधि लैहू जाँउ॥ १०८॥

¶ चौपई

करि भोजनु ब्रहमनु जब आयो।
पवनु बेगु रथ क्रिस्न मँगायो॥
बड़े बीर बलिभद्र बुलाए।
जोध जूह जादँउ चलि आए॥
कह्यो क्रिस्न सभ कटकु बुलावहु।
सैन साजि कुंदनपुरि आवहु॥
सुभट बीर चुनि चुनि सँगि लेहू।
जोधनि अउर जनाउन देहू॥
एकहि बैसि भूप सभ मेले।
हम जैहैं रथु हाँकि अकेले॥

---

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 1. PUL पतीया पहुँचे, PUL, LUC मिले, PUL अब आहे इहि ठाउ; LUC आवा अब इहि ठाउ. 2. PUL प्रकासे पंख होइ; LUC प्रगास प्रीत प्रकट हुइ, PUL इह; LUC यह, LUC सुधी, PUL लेवहु जाइ; LUC लै उड़ि जाउ. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 3. LUC भोजन, PUL ब्राह्मनु; LUC ब्राभन, PUL जबि. 4. LUC, PUL पवन, LUC वेगि; PUL वेग, PUL रथु, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC चलायो. 5. PUL बढ़े; PAT बडे; LUC वली, PUL बलदेव; LUC बलभद्र. 6. LUC, PUL जोधा जूथ, PUL जादो जुर, LUC जादौ जुरि. 7. LUC कहै, PUL कृष्ण; LUC किस्न, LUC सब कथा बुलाई. 8. PUL सैना; LUC सेना, LUC कुंदिनपुर आई. 9. LUC adds जो after वीर, PUL संघि; LUC om. सँगि. 10. LUC, PUL जोधन, PUL अवर जनावन; LUC और जानावन. 11. PAT वेरि (for बैसि), LUC एक वेर भुज सग लै मिले. 12. PUL जैहें; LUC लैहै; PAT जोवहि, PUL, LUC रथ, PUL हाँक; LUC हाँकी.

तुम बल दल अपुने सँगि ल्यावहु ।
रथ के खोज सभै चलि आवहु ॥
जहाँ जुरे राजा अधिकारी ।
कउतकु एकु देखिहौ भारी ॥
इह कहि हरि रथु बेगि चलायो ।
अरधासन ब्रामन बैठायो ॥
चल्यो बेगि राजनि सिर राजा ।
पाछै बलि जादँउ दलु साजा ॥
चलते सगुन लाभ के पाए ।
आधी बाट निमख मैं आए ॥
खिन थंभहि खिन रथहि चलावहि ।
पिछलो कटुक संगि लिय आवहि ॥
नैन प्रान मनु आगै गये ।
बल कहिं स्रवन सहाई भये ॥ १०६ ॥

† दोहरा

हा हा पंख न लागहीं, चित सँग भेंटों मित्त ।
चित्तहि नैन न लागहीं, नैन भए नहि चित्त ॥ ११० ॥

---

1. LUC reads lines 1—2 between lines 8 and 9 (p. 87), PUL बल दलु; LUC बलिभद्र, LUC साथ उठि धावहु (for अपुने सँगि ल्यावहु). 2. PUL, PAT सभे; LUC सबै, PUL चले. 3. PUL राज. 4. PUL कौतकु; LUC कौतिक, LUC एक, PUL देखीयति; LUC देखिहै. 5. PUL, LUC यह, PUL रथु हरि, LUC om. हरि, रथ, चलावा. 6. PUL अरधासन ब्रह्मनु बइठायो; LUC अर्धासिन ब्राह्मन वैसावा. 7. LUC चले, PUL बेग, LUC राजन सिर; PUL राज सिरि. 8. LUC, PUL पाछे, PUL जादो; LUC जादौ, LUC दल. 9. LUC om. lines 9—12, PUL चलत सगन, पायो. 10. PUL निमख महि आयो. 11. PUL छिन थंभे छिन रथु चलावे. 12. PUL पिछला कटकु साथ लीए आवे. 13. PUL प्रानु, LUC मन, PUL, LUC आगे. 14. PUL दल को; LUC दल कह, LUC श्रवन; PUL स्रवन, LUC सुहाई. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 15. PAT लागहू, PUL चिंता सों (for चित सँग), LUC मिलहि मित; PUL भेंटो मित; PAT भिदहि मित्त. 16. PUL चित ही; LUC चितहि, LUC निह चित, PUL नैनन लाहि चित, PAT reads the whole line as चितं ही नैन निभायो न चित्त.

¶ चौपई

सकुची धरनि धाइ आई धुरि ।
जोजन एक रह्यो कुंदनपुरि ॥
देखिसि बिरख तार अँबराई ।
मँदिर चउखँडी धुजा दिखाई ॥
भूप भवन परि अति उजियारे ।
जगमग जगमग कलस निहारे ॥
तहँ रथ थामि क्रिस्न छिनु रहे ।
आनँद बचन बिप्प सिउँ कहे ॥
अब तुम दिज आगै पगु धारहु ।
रुकमनि के सभ सोच निवारहु ॥
आजु रैनि हम तरबर छाँहर ।
कटक सहित वसिहैं इह ठाँहर ॥
उतरि बिप्प असतुति तहँ कीनी ।
कुंदनपुर कौ आग्या लीनी ॥
जहँ लगु द्रिस्टि परे हरि चाइनि ।
सनमुख चल्यो पिछौड़े पाइनि ॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. LUC घरनि आइ धाये, PAT धुर; LUC घुर. 2. LUC, PUL रहो, LUC, PAT कुंदनपुर; PUL कुंदनिपुरि. 3. PUL देखे, LUC बिर्छ; PUL ब्रिछे, PUL तीर, PAT अंबिराई; LUC अवराई. 4. PUL मंदर चखंडी; LUC मदिर चौखड़ी, LUC धजा, PUL सुहाई; LUC बनाई. 5. LUC reads lines 5-6 between lines 6 and 7 of page 90, PUL उजिआरे. 6. PAT कलिस निन्यारे. 7. PUL, LUC तहां रथु, PAT थाभि, PUL कृष्ण; LUC किस्न. 8. PUL, LUC विप्र सों. 9. PUL, LUC आगे, PUL धारो. 10. LUC रुकुमिनि, सब, PUL निवारो. 11. PUL हमि. 12. LUC बैठहि एक; PUL बरहि इह. 13. PUL उतिरि, LUC विप्र अस्तुति तहां; PUL विप तो उस्तति, LUC कीन्हा. 14. LUC कुंदनिपुर, PUL को; LUC कह, LUC अग्या दीन्हा. 15. जिह लग द्रिष्टि; LUC जहा लग दिस्टि, LUC परहि, PUL चाइन; LUC चाइन्ह. 16. LUC चलो, PAT पिछुडडे; PUL बिछोड़े, PUL पायनि; LUC पाइन्ह.

आनँद उमगि बिप्पु घरि गयो।
अवरु रूपु अउरै रँगु भयो॥
रतन खानि पूरन करि आए।
जानहु रंकु चल्यो निधि पाए॥
आगै चरन उताइल धारे।
फिरि फिरि दल की धूरि निहारे॥
भगति लोभ अलि अंबुज गहा।
क्रिस्न चरन मनु पाछै रहा॥ १११॥

† दोहरा

पवनु दूतु मालति मधुप, हंस दमावति काज।
सीता लगि हनुमत भए, रुकमिनि हित दिजराज॥११२॥

¶ चौपई

रुकमिनि द्वारावति पथु हेरा।
पंडित अजहुँ कीन नहि फेरा॥
ब्रह्मन जात भीख भरमाना।
भोजन दछ्ना अरथ लुभाना॥

---

1. LUC, PUL विप्र घर, LUC आयो. 2. LUC और रूप औरे रंग; PUL हेअ रूपु अवरे रंग. 3. PUL रतन खान, PAT कर, PUL, LUC आयो. 4. PUL जानो; LUC मानहु, LUC राक, PUL चलो; LUC चलै, PUL निध, PUL, LUC पायो. 5. LUC आगु; PUL आगे, PUL उतावल, LUC धरै. 6. LUC रथ (for दल), LUC निहारै. 7. PUL अंबजु. 8. PUL कृष्ण; LUC किस्न, PUL चरनि, LUC मन, PUL, LUC पाछे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. PUL पवनदूतु; LUC पवनदूत, PUL मालती मुधप, LUC, PUL हंस, PAT दमावत; PUL दामती. 10. PUL हनवंतु हे; PAT हरवत भए, PUL रुकमनि लग; LUC रुकुमिनि कह, LUC द्रजराज. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपे. 11. PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि, PUL द्वारवती, LUC पंथु. 12. LUC अजहू; PUL अहू, LUC कीन्ह न; PUL कीन न. 13. PUL ब्रह्मन; LUC ब्राभन, LUC, PUL जाति, LUC भटमाना. 14. LUC दछिना.

खीर खाँड भोजनु कहुँ पाइसि।
सोन दान धोती मनु लाइसि॥
मारगु दूरि देखि हिय हारा।
दुरबलु दीन दउरि नहिं पारा॥
कै दिज थकितु पंथ महि रह्यो।
मोर सँदेसु न प्रभ सिउँ कह्यो॥
इह सँतापु जाइ नहि जीते।
पाती पहुँचै अउसर बीते॥
अउसर गए क्रिस्न जौ आवहि।
तौ कहुँ मोरी भस्म न पावहि॥
जो हरि दरसनु दिवस न पैहों।
सुलगि स्याम हुइ रैनि समैहों॥
जौ लगि विरह अगनि उपजाऊं।
तौ लगि नैननि नदी बहाऊँ॥

---

1. PUL खंड, LUC, PUL भोजन, PUL कहा पावइ. 2. PUL सोना दानु, LUC मन, PUL लावइ. 3. LUC reads lines 3–4 between lines 6 and 7, LUC, PUL मारग, PUL देखि दूर, LUC हीय; PUL ही, PUL दरा (for हारा). 4. PUL दुरबल; LUC दुर्बल, PUL दीनु, LUC दौरि नाही पारा; PUL दौरि नही परा. 5. PUL के दिजु, LUC थकित; PUL थक, LUC पंथ में; PUL तित पाछे, LUC रहो; PAT रहियो. 6. PUL मेरो, LUC सदेस, प्रभु, LUC सन; PUL सों, LUC कहो; PAT कहियो. 7. PUL मोहि संतापु जाहि नहीं जीय ते; LUC सुवेहु सतापु नि जैहै जीते. 8. PUL पहुँचे, LUC औसर; PUL अवसर. 9. PUL चौसरि; LUC औसर, LUC क्रिस्न; PUL कृष्ण, LUC, PUL जो, PUL आवे. 10. LUC तौ कहू; PUL तो कह, LUC, PUL भसम, PUL जो पावे. 11. LUC जौ, दरस, PUL द्यौस; LUC आज, LUC न पैहौ. 12. PUL सुलभ, LUC हुई; PUL ही, PUL रेन; PAT हैनि, LUC समैहौ. 13. PUL जो लग; LUC जौ लग, PUL, LUC अनल, LUC उपजाउ. 14. PAT तो, LUC, PUL लग, LUC नैनन्ह; PUL नैनन, LUC बहाउ.

अब सरीर अउला हुइ गरै।
सेख रहै सो पावक बरै॥
बारि बुझाइ ह्वै राख उडैहौं।
द्वारावती पवन सँग जैहौं॥ ११३॥

† दोहरा

इह बिधि झंखति रुकमनी, सोचत मरन उपाउ।
तत छिनु सखियनि धाइ कहि, पंडितु द्वारै आउ॥११४॥

¶ चौपई

आयो बिप्पु द्वार सुधि पाई।
सुनि कै धाइ अगमनी धाई॥
रुकमिनि के जिय धरधर भयो।
सुनत अंगु बिहवलु हुइ गयो॥
जीवनु मरनु कउनु निरबहै।
अबधौं बिप्पु कहा सुधि कहै॥
आदि अंत मुख ब्राह्मन केरे।
जीवन मरन आहि दुइ नेरे॥

---

1. PUL अवसरि रहो लजाऊ गारो, LUC वारा (for अउला). 2. PUL रहे, LUC सोई, PUL जारो; LUC जरै. 3. LUC, PAT बरि, PUL बुझाय, LUC हुइ; PUL कै, PUL उठैहों. 4. PUL संघि; PUL हुइ, PUL जैंहों. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC, PUL इहि, LUC झंखत रुकुमिनी, PUL सोचती; PAT सोचित, PUL मरनु. 6. LUC तत खन खसिया; PUL तत खिन रखीयन, LUC कह, PUL, LUC पंडित द्वारे. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. LUC, PUL विप्र. 8. PUL, कहे (for कै), PAT अगनी. 9. PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि, PUL जीय, LUC धरहर भएउ. 10. PUL, LUC अंग विहवल, PUL होइ, LUC गएउ. 11. PUL, LUC जीवन मरन PUL कौन निरबहे; कै रैनि विहाई. 12. PUL धो; LUC यह, PUL, LUC विप्र, PUL कहे; LUC करई. 13. PAT आव; LUC आव्रत, PUL अंति, LUC ब्राह्मन; PUL ब्रह्मन. 14. PUL. आइ दोऊ; LUC आवा दा.

जीवन अब जगजीवन दरसे।
मरनु बिना अंबुजपद परसे॥
तब लगि धाइ बूझि दिज बानी।
पैठि मँदिर मंद मुसकानी॥
कह्यो बिप्प चित चिन्त निवारहु।
हरि आए आरती सँवारहु॥
गुरतिय के सुत सोक निवारे।
गजमोचन गिरिधर पगु धारे॥
सघन स्याम घन को छबि छाए।
बरसन नेह नीर भरि आए॥
रथ आरूढ सूर छबि छीने।
आए चक्र सुदरसन लीने॥
तोरा दुखु रुकमनि जबहि सुनायो।
चढो बिरहु बर बिलँबु न लायो॥
दीनबन्ध सुंदरमुख स्वामी।
अंतर रहै निरंतरजामी॥११५॥

† दोहरा

भगत निरन्तर भगत हित, भगत बछल भगवान।
छिन महिं आइ प्रकासिहै, पावन पूरन भान॥११६॥

---

1. PUL, LUC om. अब and add के after जगजीवन. 2. PUL मरुनु; LUC मरन, PUL अंबुजु पदु. 3. PUL, LUC लग, PUL बूझ, LUC सब (for दिज). 4. PUL मंदरि, LUC मह; PUL मदि (for मंद). 5. LUC कहै, PUL, LUC विप्र, PUL चिति चिंत निबारो. 6. PUL संवारो. 7. PUL, LUC गुरतीय, LUC सब (for सुत), PAT सोर (for सोक). 8. PUL, LUC गिरधर, PUL पग, LUC ढारे. 9. PUL सिंघ स्याम घन को छब छाई. 10. PUL बरसन मेह; PAT बिरह सनेह, PUL आवे. 11. PUL आरूढ़ि; PAT आरूढ़, PUL सूरि, कीने. 12. LUC लीन्हे. 13. PUL तोरो, LUC दुख रुकुमिनि. 14. PUL चड्यो बिरहा बलि बिलमु न; LUC व्यापे विरह वार नाहीं. 15. LUC दीनबंधु, PUL, LUC सुख (for मुख). 16. LUC, PUL रहे, PUL न अन्तरजामी. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 17. LUC, PUL भगति, LUC भगती हित; PUL भगत हिति, PUL भगवानु. 18. LUC दिन मह आनि प्रगासिहै; PUL छिन मइ आइ प्रकास हइ, PUL नाम (for भान).

¶ चौपई

रुकमिनि सुनि चक्रित हुइ रही।
दिज सुध सुपन कि सउतिख कही।।
जाग्रत बिनु सुपना अस पाऊँ।
सुपन के संग सुपन ह्वै जाऊँ।।
सुधि बुधि करि चित माँहि सँभारै।
सुपन होइ सुनि जीय बिचारै।।
दिज मुख बतियाँ समझ सँभारी।
जाग्रित जानौ राजकुँवारी।।
तपि तपि पानबेलि पियरानी।
लहलहाइ फिरि पावै पानी।।
अंबुज आगम सूर सुहाए।
जसु पुरइनि पूरन जलु पाए।।

---

1. LUC reads lines 1-2 in reverse order, PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि, PUL om. सुनि; LUC सुनत, PUL होइ के रही. 2. LUC दिज सपने की सोंतिख; PUL दिज मुख सुपन क सौतक. 3. PUL जागरत, LUC, PUL बिना, LUC सपन, PUL असे, LUC पाउ. 4. PUL सुपने के; PAT सुपन कि, PUL संगि, PUL सुपाना होइ; LUC सुपन हुइ, LUC जाउ. 5. PUL कइ चित; LUC कै जीय, LUC माह; PAT महि, PUL संभारू. 6. LUC सपन होइ द्रज मनहि विचारै; PUL सुपना होइ जिन मनहि विचारू. 7. LUC बातैं; PUL बतीया, PUL सुमुझि; LUC समुझि. 8. PUL जागृत; LUC जाग्रत, LUC जानहु; PUL जान्यो, LUC, PUL ०कुमारी. 9. PUL फूलबेलि; LUC पानबेल, PUL पपीरानी. 10. LUC लहलहात, PUL पीवे; LUC पावत. 11. PAT अंजुब, LUC आगे सूरज, PUL सुहाऊ; LUC नाये. 12. LUC, PUL जस, PUL पूरेन; PAT पूरन (for पुरइनि), LUC, PUL जल, PUL पाऊ, LUC adds the following between lines 12 and 13.

जै जै कै मन सुमिरन दीन्हा। पलटि पवेस गात मह कीन्हा।।

इह बिधि कुँवरि सुनत सरसाई।
आवत चाह क्रिस्न की पाई॥
कह्यो कुँवरि दिज आगै आवहु।
जथा कथा सभ मोहि सुनावहु॥
ब्रह्म बिस्न सिव बाचा तो कहुँ।
साँचे बचन सुनावहु मो कहुँ॥
मनि मानिक सभ अभरन लेहू।
मुहि संदेस क्रिस्न के देहू॥
बहुत पंथ निस बासुर धायो।
कैसे दरसु क्रिस्न को पायो॥
भेख कउन देखे बनिवारी।
बिप्प कहौ हउँ दासि तिहारी॥११७॥

† दोहरा

तिन पाइन की धूर हम, जे पिय पंथ चलाहिं।
हउँ बलि बलि तिहि लोइना, सज्जन नैन मिलाहिं॥११८॥

---

1. LUC इहि, PAT कुंयरि, PAT. सरसाई; LUC रहसाई. 2. LUC किस्न; PUL पूरन. 3. LUC कहै, adds किस्न before कुँवरि, PAT कुंयरि, LUC, PUL आगे. 4. LUC सब; PUL सोऊ, PUL सुनावहू. 5. LUC ब्रह्मा विस्न; PUL ब्रह्म विष्णु, LUC तोही. 6. LUC सुनावो मोही. 7. LUC मन मानिक; PUL मनिमानक, LUC अभर्न सब; PUL अभरन सभ. 8. LUC, PUL मोहि, PUL कृष्ण कि; LUC किस्न कर. 9. PUL बहुतु पंथु निसु, LUC, PUL बासर, LUC धाएउ. 10. PUL दरसनु कृष्ण का; LUC दरसन किस्न कर, LUC पाएउ. 11. PUL भेसि, LUC, PUL कवन, LUC बनवारी; PUL वनमाली. 12. LUC, PUL विप्र, LUC कहौ मैं; PUL कहो मइ, PUL दासु; PAT दास, LUC तुम्हारी. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. PUL पायन, LUC पंक हौं; PUL पंक मइ, PUL जे प्या पंथु चलाहु. 14. LUC हौं; PUL हउ, LUC तिन लोइननि जे सजनहि मिलाहि; PUL तिय ना जो सजनु नैन मिलाहु.

¶ चौपई

कहि पंडितु सुनि रुकमिनि माई।
हरि हलधर आए दुइ भाई॥
मधुर मूरति माधव मधुखंडन।
आए निकटि अडंडनि डंडन॥
इह उपकारु कुँवरि तुम कीना।
जनम जनम कहिं मोहि सुख दीना॥
कासी करवतु लै फल दीजिय।
तबहु न तुमहि उरिन हुइ जीजिय॥
कोटि जग्य फल सरि नहि होई।
जो तुम दियो देइ नहि कोई॥
जब हि द्वार पातो पहुँचाई।
बिनु तप जोग सभै सिधि पाई॥
ब्रह्मादिक जे ध्यानु न आवहि।
इन्द्रादिक जिहि पारु न पावहि॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. PUL कहे पंडित; LUC कह पंडित, LUC सुनु, PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि. 2. PUL हलधरु; LUC हलधल, PUL दोऊ; LUC दोउ. 3. PUL मधु, LUC सूरति, PUL माधो माधि मडन; LUC माधौ मधुदंडन. 4. LUC आहे, LUC निकट, LUC अडंडन; PUL कणडन, PAT डंडनि; PUL खंडिन. 5. PUL यह; LUC जह, LUC उपगार, PUL रुकमनि; PAT कुंयरि; LUC कुवरि, LUC कीन्हा. 6. PUL, LUC जन्म जन्म, LUC कर; PUL का, PUL सुखु मोहू, LUC दीन्हा. 7. LUC करवत, PUL लइ, LUC दाजै; PUL दीजीये. 8. PUL तबहू, om. न, PAT तुम उर उनत है; PUL तुम और नहीं, LUC जीजै; PUL जीजीये. 9. PUL जग फलु सर नहि सोई, LUC om. the whole line and reads: कहाँ मैं दुर्बल दीन भिखारी. 10. PUL दीयो देखे नहि, LUC om. the whole line and reads: कहाँ वे राजधिराज मुरारी. 11. PUL पहुँचायो; LUC पहुचायो. 12. PUL, LUC बिन, LUC जप जोग सबै; PUL तप जग सभो, PAT बिधि (for सिधि), PUL, LUC पायो. 13. PUL, LUC ब्रह्मादिक, PUL ते ध्यानि; LUC मन माह, PUL न आवे. 14. PUL तेहि; PAT जह, LUC पार, PUL न पावे.

लियो बुलाइ मोहि तहँ स्वामी।
दीनबंध प्रभु अन्तरजामी॥
सूर जोति कुंडल छबि छाई।
मै तिह झार गयो मुरझाई॥
मुकट जोति चपला चमकाई।
चकि चउँधो मै गो बिसमाई॥
रतन दीप छबि देखि लुभान्यो।
जरै जोति फनिगा जिय जान्यो॥
हरि सुदिस्टि सीतल फुनि कीना।
चंद जोति मुहि दरसनु दीना॥११९॥

† दोहरा

राइ हुते बज्जरु भयो, तिन हुते भयो पहारु।
लोहे ते कंचनु भयो, तुम कीनो उपकारु॥१२०॥

---

1. PUL लीओ; LUC लीयेउ, LUC बुलाय, PUL तिन; LUC तहाँ. 2. LUC दीनबंधु, LUC उर; PAT गुर (for प्रभु). 3. LUC देखि (for जोति). 4. PUL मइ, LUC, PUL तिहि देखि, LUC परो (for गयो), PUL मुरछाई. 5. LUC मुकुट, PAT चपल; PUL चमकत (for चपला), LUC, PUL चमकारा. 6. LUC चकचौधिन में भा भिनुसारा; PUL चकचैधो भयो बिसमारा. 7. LUC जोति (for दीप), PUL भुलानो; LUC लुभानेउ. 8. PUL रतन जोति पुनि गउ जी जानो, PAT जरौ, LUC फनग जौ जानेउ. 9. LUC करि; PUL कार (for हरि), PUL सुदिष्टि रीतल, LUC तब कीन्हा; PUL फुनि कीनी. 10. PUL चंद जोति महि माथे लीनी; LUC सकल सिधि स्वारथ भल कीन्हा. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 11. LUC reads the portion beginning with राइ हुते बज्जरु भयो० of दोहरा 120 and ending with मनि मानिक कंचन जिह लागौ of चौपई 123, after the last line (तिह तस देखे कुँवर कन्हाई) of चौपई 129 and before the first line (कमलनि जान्यो सूर है०) of दोहरा 130, PUL, LUC राई, PUL हूते, LUC, PUL वज्र LUC हुइ, PUL तिन ते; PAT तिनहुंति, LUC भलो, LUC, PUL पहार. 12. PAT लाहे ते, LUC कंचन भलो, कीन्हो उपगार.

¶ चौपई

सुनत कुँवरि रुकमनि जिय पायो।
परी साँझ ब्राहमनु घरि आयो॥
सूरजु अस्ताचलि कहुँ गयो।
चंदु उदै पूरब दिसि भयो॥
सर सर कुमिदिनि सोत बिगासी।
घर घर दीपक जोति प्रगासी॥
जल थल पंखिनु पंख सकोरे।
चरम पंख चमगादर छोरे॥
संगम बनिक वियोगनि गोरी।
बिछुरी चोर चक्र की जोरी॥
बनहि तरुनि तारन की जौटी।
अंचरि गाँठि तजी कजरौटी॥
सभ दिन रोस रहै जौ गोरी।
छाडहि मानु बसीठी थोरी॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. PAT सुनति, LUC कुवर; PAT कुंयर, LUC रुकुमिनि सुख; PUL जीउ रुकमनि. 2. PUL साँझि, LUC ब्राह्मन; PUL ब्रह्मनु, LUC घर. 3. PUL, LUC सूरज, LUC अस्ताचल कह; PUL पश्चमदिसि चलि, LUC गएउ. 4. LUC चंद, PUL उदे, LUC गएउ. 5. LUC सरस कुसुम दिन सेज विगासी, PUL कुमदी, सत (for सोत). 6. PUL घरि घरि, LUC, PUL दीप, LUC परगासी; PUL परकासी. 7. LUC om. lines 9–10, PUL पंख पंख विसकोरे. 8. PUL मगददर (for चमगादर). 9. PUL विउगन; LUC वियोगिनी. 10. PAT भोर (for चोर), LUC चारु चंद्र की जारी; PUL चक्र चोर की जोरी. 11. LUC reads lines 11 and 12 in reverse order, PUL बानीहि, PAT तरननि (for तारन), LUC तरन तारन की जौटी; PUL तरु नख-तरिन्की कोरी. 12. PUL पंचल; LUC अंचर, PUL गृंथ (for गाँठि), करिजोरी (for कजरौटी). 13. PUL om. the whole line, LUC सब दिन रोसन ही जो. 14. LUC छोड़ी मन; PUL छाड़हु मानु, PUL बसी-हटी; PAT बोरी (for थोरी).

भामनि भुज अंबुज बसि भए।
रसिक भँवर बंधन महि गए॥
ससि सुंदर सनमुख थकि हारे।
चतुर चकोरनि नैन पसारे॥
भोग जोग बसि पल नहि लागहिं।
संजोगी जोगी दुइ जागहिं॥
जाग छाडि जग नींद सँभारी।
जानु सोइ जागे बिबिचारी॥१२१॥

† दोहरा

जगदीपक भूखन किए, अँग अँग नग की जाति।
ससिमुख तारालोचनी, चंदन खउरी राति॥१२२॥

¶ चौपई

रैनि क्रिस्न तरबर तर रहे।
मंत्र बचनु मित्रनि सिउँ कहे॥

---

1. PAT भामिन; LUC भामिनि, PUL अंभु, LUC बस, PUL भई. 2. PUL रस के भैरि; LUC रसिकन भवर, PUL बधन; PAT बंधनि; LUC निधन, PUL मुहि गई; LUC हुइ गए. 3. PUL सस, LUC सनमुख सुंदर तकि. 4. PUL चकोरन; LUC चकोरी, PUL पंख (for नैन). 5. PAT जोग भोग; PUL जगु भोग, LUC बस; PUL रस, LUC पलक न; PUL पलु नहीं. 6. LUC दोउ, PUL om. the whole line. 7. PUL जगु छांडि; LUC जग छोड़ी, PAT जगि निंद. 8. LUC जानौ सोइ जाग्यौ विभचारी; PUL जनु सोई जावे जीबिबचारी, LUC adds the following after the last line of चौपई 121:—

चंद्र मेर धरि रतन विसाला। पहिरे गगन नखन के माला॥

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. LUC कीये; PUL कीए, PUL अंग नगन की; LUC अग अग नग को, LUC जोति. 10. LUC सेसमुख, PUL खोरी, LUC उजल पहिरे मोती. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. PUL रैन, PUL कृष्ण; LUC किस्न, PUL तरबर तरे. 12. PUL, LUC बचन, LUC मंत्रिन सन; PUL मित्रन स्यु.

प्रात भए रबि किरनि प्रगासी।
जागे सूर द्वारिकावासी॥
कँवलनैन सभ सैन बुलाई।
बलिदेवहिं इह बात जनाई॥
तूँ इह सैन साजि करि रहहू।
ह्वै कै परै कटक सिउँ कहहू॥
बाम दछिन बिबि सैना आइहु।
परत पुकार तिरीछे धाइहु॥
बिरचि बीर बगमेलनि धैहैं।
ते सभ बान काख महि खेहैं॥
साजहु दुऊ अनी अनियारी।
लोह लपेटि घटा सी कारी॥
राखहु चक्र लाइ खर साननि।
सावधान फोंकनि धरि बाननि॥
इह कहि क्रिस्न बेगि रथु माँगौ।
मनि मानिक कंचन जिह लागौ॥

---

1. PUL प्राति भयो, LUC किरिनी, PUL प्रकासी. 2. LUC जाके सूर, PUL द्वारकावासो. 3. PUL कंवलनइन, PUL, LUC सब, LUC सेन; PUL सयन. 4. PUL बलदेवहि, LUC यह; PUL या, PUL बाति. 5. PUL, LUC तुम, PUL ईहा; LUC इहा, LUC सैना, PUL के; LUC कर. 6. PUL हैवक वरहि कटू सो कहहू; LUC पाखर साजि कटक सब करहू. 7. PUL दछन बिव, LUC सेन बनावहु; PUL सएन सँवारहु. 8. LUC adds सो after पुकार, LUC तिरछे, PUL, LUC धावहु. 9. PUL बर वि धीर बगभेलनि, LUC धैहहि; PUL घैहै. 10. PUL सभि; LUC सब, PUL कुख, LUC मह; PUL मइ, LUC खैहहि, LUC adds the following between lines 10 and 11:—

संकि सत्रु जुझिहि कै भाजिहि। जब ही दुहों दिसि दुंदुभी बाजहि॥

11. PUL दोव; LUC दुहू, PUL अनीआरी. 12. PUL, LUC लपेट. 13. LUC reads lines 13-14 between lines 6 and 7, PUL लाई. 14. PUL सभनाधनि, PUL, LUC फोकन, PUL धनि (for धरि). 15. LUC, PUL यह, LUC किस्न; PUL कृष्ण, PUL बेग, PUL माग्यो; LUC मांग्यो. 16. PUL मणि माणिक, LUC जिहि कंचन, PUL, LUC लाग्यो.

कनिक चँवर मुकता पहिराए।
हय कंठनि गजगाह बँधाए॥
रतन जटित जगमग उजियारी।
सिर परि कंचन सिरी सँवारी॥
नवग्रह नखतसहित अति भायो।
इन्द्र बिवानु जानु भुँइ आयो॥१२३॥

† दोहरा

चल कुंडल बिजुली दिपहि, जलधर स्याम सरीर।
अरि मारन रुकमनि हरन, रथ बैठो बलबीर॥१२४॥

¶ चौपई

सूर जोति जनु जगमग कीना।
मनि गन मुकटु सीस परि लीना॥
उर सोभित मुकतन की माला।
इन्दीबर द्रिग बाहु बिसाला॥
खीर के बरनु खिरोदक धोती।
केहरि मद्धि कसति छबि होती॥

---

1. LUC कनक, PUL चमर. 2. PUL हइ; LUC यह, PUL, LUC कंठन. 3. PUL रतन जोति, उजिआरी. 4. LUC पर, PUL सरी. 5. PUL नवगृह, PAT नखित, PUL अति भाऊ; LUC अति भए. 6. PUL इँद, LUC, PUL विवान, LUC मानहु भुइ गए; PUL जानु भुव आऊ. + LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 7. PAT चलि; LUC बिव, LUC कुंजन (for कुंडल), PUL बिजली; LUC विजुल, LUC जलधरि. 8. PAT मारनि, LUC रुकुमिनि, PAT रथि, PUL बइठे; LUC बैठे, PAT बरि बीर; LUC बनवीर. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 9. LUC reads जनु after जगमग, PUL जगमगु, LUC कीन्हा; PUL कीनो. 10. PAT मनि-गनि, LUC मुकुट; PUL मुकट, PUL सीसि, LUC, PUL धरि, LUC लीन्हा; PUL लीनो. 11. PAT मुकितनि; PUL मोतिन, LUC कै. 12. PAT इंद्रीवर, LUC द्रग, PUL बाह. 13. LUC खीरि के, PAT चरन; LUC परन (for बरनु), PUL खीरोगतु; PAT खीरोदक. 14. PUL वेहर; LUC कैहरि, PUL, LUC मधि.

कुंकम मलय खोरि तन सारे।
ऊपर पीत उपरना डारे॥
कोटि मदनु मुख मोहनि बोलनि।
जनु अगस्ति दुऊ कुंडल डोलनि॥
नवगिरही सोहै कर पहुँची।
कउँधनि जोति न सरवर पहुँची॥
सुर मोहित बंदहिं जगबंदिन।
तिलक तँबोल बने नँदनंदिन॥
कालरूप नाथ्यो जिन काली।
रथ आरूढ़ भए वनमाली॥
मनिमय किरन अभूखनि मंडन।
चढ्यो सूर जनु तिमरविहंडन॥
हाँकउ रथु सारथी उताइल।
झंकारे हैवर पग पाइल॥
चन्द्र अकार बज्र चकपैया।
सैंधव चपल बिंधु उलघैया॥

---

1. PUL खोर; PAT छोरि, LUC चंदन मलियागर तहां सारे. 2. PUL ऊपरि; LUC जापर. 3. PUL कोट, LUC, PUL मदन, PAT मोहति; LUC, PUL मोहन, LUC बोलहि. 4. LUC जानहु अस्त होहु कुंडल डोलहि, PUL अगस्त ढोऊ, ढोलनि. 5. LUC नवग्रही; PUL नवमि रही, PUL सोहे. 6. PUL किधों जोति सुर सरवर; LUC कै धन जोति न सार, PAT महुची. 7. PAT सुरि, LUC मोहहि, PAT वंदित; LUC वेदन, PUL, LUC जगवंदन. 8. LUC तमोल, PUL, LUC नंदनंदन. 9. PUL कालिरूप, PAT नाथौ, PUL जिह. 10. PUL, PAT आरूड़. 11. LUC मनिगन; PUL मनमइ, LUC किरनि, PUL अभूषण; LUC अभूषन. 12. LUC चढ़ो; PUL चड्यो, PUL जन. 13. LUC हाको; PUL हांक्यो, LUC, PUL रथ, PUL, PAT स्वारथी, PUL उतायल. 14. PUL हंकारे; LUC झनंकार, PUL हइवर पग; LUC चूरा अरु, PUL पायल. 15. LUC चंद्राकार; PUL चंद्रकारहि. 16. LUC सूधे (for सैंधव), PUL रिध उलटैया; LUC सिंघ उलथैया.

कंध केस जनु पंखनि लाए।
चलत उड़त हैं पूँछ उठाए॥
सभै तुरंग कठिन बजरंगी।
चंचल मिलत चित्त के संगी॥१२५॥

† दोहरा

थरथराहिं थिरु ना रहहिं, फरकहिं छाँह निहारि।
आगै जाइ तुरंग चलि, पाछै रहै बयारि॥१२६॥

¶ चौपई

घन घन घन घूँघरु घन बाजहिं।
झन झन घंट कंठ हय राजहिं॥
धम धम धरनि चलत रथ भई।
धर धर हियँ सभ की सुधि गई॥
अस बिलोक पूरै नहि बानी।
पउन थकित पंखी थहरानी॥
सँग लै सूर नखत की माला।
जनु भुँइ धावै उतरि उताला॥

---

1. LUC कंधे; PUL कांधे, LUC पंखिन लाये; PUL पंखु लगाये. 2. PUL उड़ति हइ पुछ. 3. PUL, LUC सबल (for सभै), PUL कठिन, LUC वज्रागी. 4. LUC मित; PUL चिति (for मिलत), PUL मित्य के संगी; LUC चित के संगी. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC थरंथरहि; PAT रथ थररहि, PUL थिर, LUC फरकत, PUL छाहि. 6. LUC, PUL आगे जाहिं, LUC तुरंगमा; PUL तुरंग चल, LUC, PUL पाछे, PUL रहे; LUC रेहै. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपे. 7. LUC घनन घनन, PUL घुंघरू; LUC धुघूरू, PUL बाजे; LUC बाजै. 8. PUL घंटा, LUC केंठहै; PUL कंठहिं, PUL राजे; LUC राजै. 9. LUC घम घम, LUC घरनि; PUL धरति, PUL चले, LUC, PUL रथु भाई. 10. LUC, PUL घर घर, PUL हीअ, LUC, PUL सब की, PUL पाई. 11. LUC इक इक लोग; PUL अब कब लोग; PAT अक बलोक, LUC फुरै नाही बाने; PUL फरेह न बानी. 12. PUL, LUC पवन, PUL थकत, LUC पंछी ठहराने. 13. PUL संगि, LUC om. लै; PUL लई, LUC नखतन; PAT, PUL नखित. 14. LUC जानौ, PUL भुवधावे, उत्ताला.

सनमुख रथ लोइन कै माँडै ।
जेठ को सूर किरनि जनु छाँडै ॥
पैठत नगर देख नरनारी ।
मोहित सुधि बुधि सभनि बिसारी ॥
सगर नगर घर घर अकुलायो ।
नर नारी देखनि सभ धायो ॥
सुर नर ब्रिद्ध तरुन अउ बारे ।
देखत भए चित्रगति सारे ॥
सुतहित भूलि जननि कहिं जाई ।
बालक देखि बिसारहि माई ॥
थिर थिर जस पीपल दल करही ।
पाछल पाँउ न आगै धरही ॥
झुमि झुमि रही झरोखिनि नारी ।
तिउँ पलकै जिउँ थकी किंवारी ॥
जिह देखा तिह बकत न आवा ।
जिह बकता तिह चुप न सुहावा ॥

1. PUL थक (for रथ), PAT लाइन, PUL तब मोहे; LUC लोमाड़े 2. LUC जेठ का; PUL जेठ क, LUC किरिनि, PUL छोहे; LUC छाड़े. 3. PAT पैठित; PUL पइठत, LUC देखि. 4. PUL मोहत, PAT बुधि सुधि; PUL सुध बुधि, LUC सबन; PUL सभन. 5. PUL om. first घर, LUC om. lines 5–6 and reads the following:—

जगमग मुकुट जराउ अभास्यो । स्याम घटा पर सूर प्रगास्यो ॥

6. PUL देखन सभु आयो. 7. LUC नर त्रिय (for सुर नर), PUL बिरध; LUC विर्धं, LUC तरुनि, PUL, LUC अरु. 8. LUC मित्रगति. 9. PAT सुरत हि, PUL भूल जनन, LUC कह; PUL को. 10. PUL विसारे. 11. LUC थिर थिर चल दलमल करही. 12. LUC पाछिल, PUL, LUC आगे. 13. PAT झूमि झूमि; PUL झुम झुम, LUC झरोखन; PUL झरोखे. 14. PUL जिउ पलके तजि; LUC तौ पलकै जो, LUC रहै (for थकी). 15. PUL जहा देख तिन; LUC जिहि देखे मुख, LUC वकति न आवै. 16. LUC जिहि; PUL जिन, LUC तिहि; PUL तिन, LUC चुपु न सुहावै.

बारक चितै सीसु जिनि नायो।
भूमि पर्यो सिरु फिरि न उचायो॥
एक थकित इक थर थर करहीं।
इक ह्वै मगन मुरछि गिरि परहीं॥१२७॥

† दोहरा

स्याम ठगउरी दरस की, डारी चितै सुभाइ।
सुनत चढ़ै ठगमूरि जिउँ, दरसत जीवै काइ॥१२८॥

¶ चौपई

पवन गवन दामिन चमकारा।
हाँकि दियो रथु नगरु मँझारा॥
बाम दछिन जिह दिस्टि चलाई।
मोह बान बरसत जनु जाई॥
पटन हाट बैठे बनिजारे।
दरसनु देखत बनिज बिसारे॥
रथ के खोज सीसु तहँ धरहीं।
पद पद सहस दंडवत करहीं॥

---

1. PAT बारिक, PUL चित्तये सील, LUC जनु नावै; PUL जिह न्यायो. 2. LUC दमि परै भुइ फिरि न उचावै, PUL भूम, फिर सिरु. 3. PUL थकत, LUC एक (for इक). 4. LUC इक हुइ मैन मूरछि भुइ परही; PUL एक मनहू मूरछ परही. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC ठगौरी; PUL ठगोरी, PUL जरी चितय (for डारी चितै). 6. PUL बढे; PAT पड़ै, LUC, PUL ठगमूर, PUL ज्यो; LUC जौ, LUC दरसव, PUL जीवे काई. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. LUC दामिनि; PUL दामुनि. 8. PAT काहि; PUL हांक, LUC दीयो; PUL दयो, LUC, PUL रथ नगर. 9. PUL दछन, LUC जहां; PUL द्रिष्टि चलाये. 10. PUL मोहन बान, LUC बरखत; PUL बसित, PUL जन जाये. 11. LUC बैठ, PUL बनजारे; PAT बनजारा. 12. LUC, PUL दरस देखि तिन, PUL बनज; PAT बनजु, PAT बिसारा. 13. LUC सीस, PUL, LUC तहां. 14. LUC पग पग सहज डंडवत.

मोह मुरछि लोइन भरि डारे।
कीने रथ के खोज पनारे॥
प्रेमी पुरख भगत जे भले।
प्रेम उमगि ते लोटत चले॥
उड़त धूरि जौ नैननि परई।
जनु कपूर सीतलता करई॥
भगतनि मिलि भगवानु बखाने।
कामिनि कामरूप पहिचाने॥
म्रिदु मूरति बारिन कहि भायो।
वैरनि कलहरूप दिखरायो॥
जोगनि जोगेस्वरु करि लेख्यो।
रोगनि मूरि सँजीवनि देख्यो॥
मोर बिचार नील घन बोले।
निरमल सुर सावन के खोले॥
अप अपनी मति जिह जसि आई।
तिह तस देखे कुँवर कन्हाई॥१२६॥

1. PUL मुरछि मोह; LUC मोह मुर्छि, PUL छारे. 2. LUC कीन्हे. 3. LUC reads lines 3–4 between lines 12 and 13 on P. 105, LUC पुरुष भगत; PUL भगत पुरुष. 5. PUL उठति, LUC जनु; PUL जो, LUC नैनन. 7. PUL भक्तनु; LUC भगतन, PAT भगवान; LUC भगवंत. 8. PUL कामनि, पईछाने. 9. LUC म्रद; PUL मृदु, PUL मूरत, PAT बारनि; PUL बान, PUL को; LUC मनु (for कहि). 10. PUL बैरन; LUC बैननि, LUC कालरूप; PUL कालिरूप. 11. LUC जोगिन, PUL जोगसार; LUC जोगेस्वर, PUL देख्यो. 12. LUC रोगिन, PUL मूर, LUC सजीवन, PUL पेख्यो. 13. LUC adds the following between lines 12 and 13:—

पुरषपुरान विवेखी जानै। संतन संतरूप पहिचानै॥

LUC, PUL बोलै. 14. LUC निर्मल सूल सबन के खोलै; PUL निर्मल सूर सभन के खोलै. 15. LUC जिहि, PUL जैसे. 16. LUC तिहि, PUL तइसे, कुँवरु, LUC adds the following after line 16 :—

चंद जोति मुहि दरसन दीन्हा। कारज आनि सुफल सब कीन्हा॥

† दोहरा

कमलनि जान्यो सूर है, फूलहिं भरि मकरन्द ।
खोडस कला प्रकासियो, कुमदनि जान्यो चंद ॥१३०॥

¶ चौपई

नगर पुरब दिसि हरिअरु बारी ।
ऊँचे ब्रिच्छ तरे फुरवारी ॥
चंपक कुसम फूलि झुकि झूले ।
तट तरंग अंबुज भरि फूले ॥
कुरलत पंखी बोल मन भाए ।
चकवी चकवा हंस सुहाए ॥
पवन सुगन्ध वहत रस आगर ।
तहाँ जाइ उतरे हरि नागर ॥
जात्रा लोक देस के बाढे ।
दउरि दउरि कुंडल करि ठाढे ॥
मनि मानिक मुकताहल बारहिं ।
चंचल चहुँ दिसि चँवर सुढारहिं ॥
फूल ब्रिस्टि ऊपरि सुर करहीं ।
जै जै सकल लोक उच्चरहीं ॥

---

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 1. PUL. कमलन जान्यो; LUC कमल लजानो, PUL सूर हइ; LUC सूर हुइ, LUC फूलन भरि, PUL मरंद. 2. PAT खोड़स, LUC प्रगासी; PUL प्रकासिओ, PAT कुमिदनि; LUC कुमुदिनि, LUC जानौ चंद मंद. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 3. LUC, PUL पूरब, PUL दिस, LUC हरियरि; PUL हरीअरू, PUL बरी. 4. LUC उचे, PUL बृछि; LUC बिरछ, PUL तले, LUC, PUL फुलवारी. 5. PAT कुस्म फूल; LUC फुल कुसुम, PAT ऊले. 6. LUC तट तलाब; PUL नटत त्रागि. 7. LUC om. lines 7–8, PUL कुरलहि, बोलन, om. मन. 9. PUL वसत; PAT बहुत (for वहत), LUC रस अपार. 11. PUL and LUC both om. lines 11–12. 13. PUL मन मानक. 14. PUL दिस चामर, LUC ढुरावहि; PUL ढारहिं. 15. PUL फूलहि बृष्टि; LUC पुहप विस्टि, LUC, PUL उपर, LUC सु (for सुर). 16. PUL जइ जइकार लोग सभ करहीं, LUC लोग उचारहिं.

मारग एक जाहिं इक आवहिं।
सीस धरन कहँ ठउरु न पावहिं॥
नर नारी असतुति उच्चरहीं।
आरति कै जिय आरति करहीं॥
सुनि राजा भीखमु तहँ आयो।
छत्र चँउर सिंघासनि ल्यायो॥
पूजे चरन भेंट बहु दीनी।
हस्त जोरि कै असतुति कीनी॥
जानहु रंक नवौ निधि पाई।
किए अनाथ सनाथ गुसाँई॥
चरन कमल पावन इह आने।
महाराज अपने करि जाने॥१३१॥

† दोहरा

निसि दिन जिनके ध्यानु सिउँ, जोगिन्द्रनि कहुँ जाग।
ते पद पूजे इन करन, प्रगटे पूरन भाग॥१३२॥

¶ चौपई

घंटा संखु तूर बहु बाजा।
धूप-दीप आरति करि राजा॥

---

1. PUL om. lines 1–4, LUC एक (for इक). 2. PAT कहिं, LUC ठौर. 3. LUC नगर नारि अस्तुति उचरहि. 4. LUC आरत कै. 5. LUC, PUL भीषम, PAT तहि; LUC, PUL तहां, LUC, PUL आये. 6. PUL चमर; LUC चौरा, PUL, LUC सिंघासन ल्याये. 7. LUC दीन्ही. 8. PUL जोरि कइ, PUL उस्तति; LUC अस्तुति, LUC कीन्ही. 9. PUL जानो, LUC एक, PUL नवे; PAT नवं. 10. PUL कीये; LUC कीजै, PUL, LUC गुसाई. 11. LUC कवल, PUL होइ; LUC इहाँ. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. PUL, LUC निसु, PUL दिनु; PAT दिनि, PUL, LUC ध्यान सों, PUL योगेन्द्रन; LUC जोगिद्रम, PUL, LUC कह. 14. LUC पग पूजै इन्ह करनि. 15. LUC, PUL संख, PAT, LUC तार. 16. PUL आरती.

पान प्रसाद तोख सिउँ पाए ।
आनंदित राजा घरि आए ॥
चरनोदिकु निरमलु जो लीना ।
रंच रंच रनवासहि दीना ॥
घरि घरि प्रजा राउ अरु रानी ।
जन जन जंपै इहै कहानी ॥
जहँ तहँ इहै कथा परगासी ।
आए क्रिस्नु द्वारिकावासी ॥
भीतरि नगर चाह फिरि आई ।
बाहरि सभ राजनि सुधि पाई ॥
सुनि भरमे को को भूपाला ।
राजा जरासिंधु ससिपाला ॥
दंतबकत दमघोख नरेसू ।
इन बूझौ कछु होइ कलेसू ॥
मिलि मिलि घेरु करै सभ कोई ।
चरचा इहै कटक महि होई ॥

---

1. LUC प्रान, PUL भोख सो; LUC तोख सों. 2. PUL अनंदत राज, LUC ग्रह. 3. LUC चरनोदिक; PUL चरणोदक, PUL, LUC निरमल, PUL धरि (for जो), LUC लीन्हा. 4. PUL कटि सभ को (for रनवासहि), LUC दीन्हा. 5. LUC घर घर, PUL राउ ऊ रानी. 6. LUC, PUL जपहिं, LUC यहै; PUL यही. 7. LUC, PUL जहाँ तहाँ, PUL यही; LUC यहै, PUL, LUC प्रगासी. 8. LUC किस्न; PUL कृष्ण, PUL द्वारका०. 9. LUC भीतर, PUL नगरि, PUL फि (for फिरि). 10. LUC बाहिर सब, PUL राजा; LUC राजन. 11. LUC भरमै, PUL कोऊ कोऊ भूग्रपाला; LUC कोई कोई भुवपाला. 12. LUC जुरासिंध; PUL जरासंध, PUL ससपाला. 13. LUC दैतवकत्र; PUL दंत वक्त्र, LUC नरेसा. 14. LUC, PUL बूझो, PUL कछू होई, LUC कलेसा. 15. PUL मिलिके बैरु करे, LUC सब. 16. LUC चर्चा, PUL यही; LUC यहै, LUC मह.

हिएँ हरख दूलह करि हरा।
सभहनि के जिय खरभर परा॥
रजमद राजनि गयो सुकाई।
गैबर बासु सिंघ जनु पाई॥१३३॥

† दोहरा

घन जिम उनए स्याम घन, लै बिज्जुल करवार।
बोरि बहावहि बैरिइन, बरसहि मूसलधार॥१३४॥

¶ चौपई

को कहि क्रिस्न एक रथ आए।
राजा भीखम निउत बुलाए॥
को कहि राइ न निउति हँकारे।
कउतिकु देखन है पगु धारे॥
को कहि क्रिस्न आइ इह कारन।
सभ राजन सिउँ बैरु निबारन॥
को कहि सुनत रुकम के बैना।
राते कमल किए दुइ नैना॥

---

1. LUC, PUL हीये, LUC दुलह, PUL के; LUC कर LUC, PUL हारा. 2. LUC सब हुन के; PUL सभन के, LUC, PUL जीय, PUL खरहरा; LUC खरवर, LUC, PUL पारा. 3. PUL राजामद राजागन यों सुकइ; LUC रज महराजन गयो सुखाई. 4. PAT गहिबर, LUC सिंध वासगै यरजनु पाई. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC ज्यौं उनये; PUL जों उमगे, LUC लै विजली; PUL लई बिजुल, PUL करवारि; PAT तरतार; LUC करकार. 6. LUC वैरियहि; PUL बैरीग्रा. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. LUC कोउ कहै किस्न; PUL कोऊ कहय कृष्ण. 8. LUC नौति; PAT निवत. 9. LUC कोउ कह नाही नौति हकारे; PUL कोऊ कहे राउ निउते किह कारिन. 10. LUC कौतिक; PUL ए कौतक, PAT देखनि, PUL om. हैं, PUL धारिन. 11. LUC कोउ कहै किस्न; PUL कोऊ कहे कृष्ण, LUC, PUL आये, LUC किहि; PUL इहि. 12. LUC, PUL सब, LUC सन; PUL सों, PUL, LUC बैर. 13. LUC कोउ कहै; PUL कौ कहि, PUL सुन, LUC रुकुम के; PUL रुकमनि के. 14. LUC कवल, PUL, LUC कीये, PUL दोउ; LUC होउ, PUL नइना.

जो इह बात चित्त मै धरिहै।
कउतिक रूप कलह कछु करिहै॥
को कहि उनकी ऐसी घातैं।
जितने मुख तितनी हैं बातें॥ 4
पुरुख प्रवीन जु आगमु जानहिं।
ते कलेसु पूरनु जिय आनहिं॥
चलत बात राजन महितहाँ।
रुकमु कुँवरु बैठे हुति जहाँ॥ 8
बोले क्रोधवन्तु चुप रहहू।
अउरु प्रसंगु कथा कछु कहहू॥
का भयो क्रिस्नु एक जौ आए।
का भयो कोटि कटकु जौ ल्याए॥ 12
जौ आराध साध करि मान्यो।
जौ बिरोध तौ क्रोधहि ठान्यो॥
इहै बिचार समझि चुप रहौ।
अपने आए कछुव न कहौ॥ 16

---

1. LUC जौ, PUL, LUC यह, PUL बाति, LUC चित में; PUL चित्त महि, PUL धरहै. 2. LUC कौतुक; PUL कौतक, PUL कछू करही. 3. LUC कोउ कहै; PUL कोऊ कहे, PUL, LUC इनकी, PUL घातें. 4. PUL जेते, PUL हइ; PAT यैं (for हैं), PUL बातें. 5. PUL, LUC पुरख, LUC जे आगम; PUL आगम जे. 6. PUL, LUC कलेस, LUC पूरन, PUL जीय अपुने जानहिं. 7. PUL बाति, LUC मह, PUL, LUC जहाँ. 8. PUL रुकम कुंवर; LUC रुकुम कुवर, LUC हुते; PUL हइ, LUC, PUL तहाँ. 9. PUL क्रोधवंत; LUC क्रोधवते, LUC चुपु रहहु. 10. LUC अवर प्रसंग, PUL कछू. 11. PUL कह (for का), PUL कृष्ण; LUC किस्न, LUC, PUL जो. 12. PUL कह भयो कोट, LUC कटक; PUL कटिक, LUC, PUL जो. 13. PUL जो, LUC अवराध; PUL अराध, LUC जानै; PUL मानों. 14. PUL जो, LUC तो; PAT नौ, PUL कछू अति; PAT कछुवन, LUC ठानै; PUL ठानो. 15. LUC यहै बिचारि; PUL यही विचारु, PUL समुझि, PUL चुपि; LUC जीय, PUL रहो. 16. PUL अपुने, LUC कछु न; PUL कछू न, PUL कहो.

कहहु त जाइ इकले घेरउँ।
खेदि देउँ खिन माहि खिदेरउँ ।।१३५।।

† दोहरा

गंजौ गुजरहिं खंड चढ़ि, सो रथु हठ सिउँ लेउँ।
धरनी धावों रैनु दिनु, जादउ बसन न देउँ ।।१३६।।

¶ चौपई

रुकम कीन जौ आप बड़ाई।
बडरे राजनि सुनि न सुहाई ।।
कहसि कुंवर रिसभरि कत बोलहु।
अपबर बिना डुलाए डोलहु ।।
जबहि क्रिस्न रथु साजि मँगैहैं।
हम सभ काज तिहारे ऐहैं ।।
भँउह चढाइ सभन समझायो।
नान्हे मुँह बड़ बोल न भायो ।।

---

1. PUL कहो तो; LUC कहौ तौ, LUC अकेलेहि; PAT इकेही, PUL घेरों; LUC घेरौ. 2. PUL खेदि लेउ नि माहि खिदेरों; LUC देखि देव घन माह खिदेरौ, PAT महि (for माहि). † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. PUL गर्जों, LUC गुजर; PAT गुंजरि, PUL खंढचडि; PAT खंडि चड़ि, PUL सोकर ठिहठ सों लेहु; LUC सो रठि हठ सौं लेहुं. 4. PUL धावन; PAT धीरन, LUC धावौ; PAT धावै, PUL रइन; LUC रैनि, LUC, PUL दिन, PUL बाँधि वेग तुम्हि देहु; LUC जादौ बंसन न देहु. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. LUC रुकुम कीन्ह, PUL जब; LUC पुनि, LUC आपु, PUL बढ़ाई; PAT बडाई. 6. LUC बड़डे राजन; PUL बढरे राज, PUL repeats न. 7. LUC कहिन, PUL रिसभारि, LUC कस, PAT डोलहु. 8. PUL दुलाए; LUC डुलाएहि; PAT बुलाए, PUL ढोलहु; PAT बोलहु. 9. PUL कृष्ण; LUC किस्न, LUC रथ; PUL दल. 10. PUL हम सभ को जति हारे जैहै; LUC हम तुम काम तुम्हारे एहैं. 11. LUC भौंह; PUL भौंह, PUL चड़ाइ, LUC सबन. 12. PUL मुख बढ, LUC बोलु न आयो.

दुसह बचन सुनि को जिय धरई।
पैज पतंग दीप सिउँ करई॥
सदा बड़न की करहु बड़ाई।
लघु बोलहु आपन लघुताई॥
स्वरगहुँ ते खिन मै भुँइ परई।
अपुनी आप बड़ाई करई॥
बड़न की बात बड़ी करि मानै।
आपुन कहुँ अति लघु करि जानै॥
सो पावै दुहु लोक बड़ाई।
जैसे द्वैज बढ़त दिन जाई॥
दुहु जग बड़न माँझि लिखि लेही।
जा कहँ बड़े बड़ाई देही॥
राते अपुनी आपि बड़ाई।
बड़ ह्वै जाइ दिया की न्याई॥१३७॥

† दोहरा

बड़े निडर बड़ बोल कहि, करहिं बड़ाई आप।
तिनके निकटि न जाइए, दरसन देखे पाप॥१३८॥

---

1. PUL को जीय; LUC की जीय, PUL धरही; LUC धरै. 2. PUL पयज्ञ, PUL, LUC सों, LUC करै; PUL करही. 3. LUC बड़िन. 4. LUC बोलत, PUL अपुनी; LUC अपनी. 5. PUL स्वर्गहुं तो; LUC सरगहुते, PUL मइ; LUC में. 6. LUC अपनी, PUL, LUC आपु, PUL बढ़ाई. 7. LUC बडिनि; PUL बढन, PUL बाति बढी कै, PUL माने; LUC मानो. 8. PUL अपनो कहो; LUC आपुन को, LUC लघु कै, PUL जाने; LUC जानो. 9. PUL पावे, LUC, PUL दुहू, PUL बडाई. 10. PUL जइसे, बात (for बढ़त), दिनु. 11. PAT दुह; LUC दुज, LUC जुग, PUL बढ़न, LUC माझ लख. 12. PUL जाकौ बढ़े बढई. 13. LUC reads lines 13 and 14 in reverse order, PUL राटे, adds जो after राटे, LUC आपनी आपु, PUL बढ़ाई. 14. PUL बढ़ा, LUC हुइ; PUL होइ, PUL om. जाइ, LUC दीया; PUL दीपक, LUC नाइ. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 15. PUL बढ निदर बढ, LUC लोग (for बोल), LUC करै, PUL बढाई, LUC आपु. 16. PUL तिनिके, LUC निकट, PUL न जाईये; LUC जनाइये; PAT न जाइऐ, LUC पापु.

¶ चौपई

उठहु कुँवर तुम भउन सिधारहु।
आजु राति सभ काम सँवारहु॥
चढ़ै बराति आजु बीतै दिनु।
पिछली रैनि भाँवरी को छिनु॥
राजमँदिर बेगहि पगु धारहु।
रीति काज के साज सँवारहु॥
राजा सभै बराती ऐहैं।
बैठि बड़ाई दुहु दिसि दैहैं॥
उठो कुँवर राजनि सिरु नाई।
पैठ्यो नगर तुरी दउराई॥
कहसि ढँढोरा नगर फिरावहु।
प्रजा पौनि सभ बेग बुलावहु॥
घर घर दीप प्रजारहु ऐसे।
आजु रैनि दिनु जानिहु जैसे॥

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. PUL उठो, LUC मौन; PUL भवनि, PUL रिधारहु. 2. PUL, LUC सब, LUC काज; PUL साजु. 3. PUL चडहिं; PAT चड़ै, LUC बरात, PUL, LUC बीते, LUC दिन. 4. LUC पाछिलि, PUL रइन भावती; LUC नैन भावनी, LUC के छिन. 5. PUL मंदरि बेगही. 6. PAT रीत, LUC को. 7. LUC सबै. 8. PUL उठी बढाई; PAT बैठै डारि, PAT दुहूं. 9. PAT उठहु, PUL कुँवरु, PUL, LUC राजन, LUC सिर, PUL न्याई. 10. PUL, LUC पैठो, PUL नगरि तुरंग, LUC दौराई; PUL दुराई. 11. PUL नगरि फिरावो. 12. PUL पवन; PAT पवरि, PUL सम; LUC सब, PUL बेगि; LUC मारि, PUL बुलावो, LUC adds the following between lines 12 and 13:—

साजहि सास सौंज सब धरही। आपन आपन कारज करही॥

13. PUL घरि घरि, LUC दीया प्रजालहि, PUL अइसे. 14. PUL रइन, LUC दिन, PUL जानी; LUC जानंनि, PUL जइसे.

चंदनु लीपि सँवारहु बाटी।
पाटंबर छावहु सभ हाटी॥
इह कहि कुँवरु मँदिर महि गयो।
देखिसि साजु सिद्ध सभ भयो॥
इक दिसि भरे जराउ पिटारे।
इक दिसि चीर पटंबर डारे॥
राजा बिनु सभ करहिं उछाहू।
आजु राति रुकमिनि को ब्याहू॥१३९॥

† दोहरा

गज चित्रहिं हय साजहिं, बनहिं दुहूँ दिसि लोग।
ब्याहु ब्याहु सभ को कहै, बिधि जानै संजोग॥१४०॥

¶ चौपई

पहरकु दिवसु आइ जब रह्यो।
रुकमि राजमंदिर मे कह्यो॥

---

1. LUC चंदन, PUL लीप; LUC लीपी, PUL संवारो; LUC सवारहि; PAT सवारिहु, PUL बाढो. 2. LUC छावहि सब; PUL सभ छावहु. 3. LUC, PUL यह, LUC कुवर; PAT कंयरु, LUC मंदिर कह गये. 4. PUL देखस, PUL मिध साजु; LUC काज सिध; PAT साजु सिद्धि, LUC सब भये, LUC adds the following between lines 4 and 5:—

ब्याह वरात सिधि सब चाही। जह तहां सौज सिध सब आही॥

5. PUL दिस, LUC धरे. 6. PUL दिस, PUL ढारे; PAT पारे. 7. PUL, LUC बिन, LUC सब, PAT कहहि, PUL ऊछाऊ. 8. PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि, PUL करि. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. LUC मित्रहि है, PAT सेजयहि; PUL सजीयहि, LUC दुहु, PUL दिस. 10. LUC ब्याह ब्याह सब कोई, PUL कहइ, बिध ना जानि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. PUL पहरु एक; LUC पहरक, LUC दौस, PUL om. आइ. 12. PUL रुकम; LUC रुकुम, PUL मंदर, LUC मह; PUL महि.

संग सहेली सभै बुलावहु।
गउरि पुजाइ बहिन लै आवहु॥
अउर नारि जे उत्तम आहीं।
ते सभि रुकमिनि कै सँगि जाहीं॥
भीतरि कहि बाहरि फुनि आयो।
संग काज कहँ लोकु बुलायो॥
जहँ लगु सूर वीर सभ आए।
नखसिख लगु लोहा पहिराए॥
धनुख धरहिं कटि बाँधहिं बाना।
अनीधार विनु सूझ न आना॥
सिमटे बीर भीर अति कीनी।
संगि पाँति हस्तिन कै दीनी॥
घालि पालकी कुँवरि निकासी।
चहुँ दिसि जुरी सहस इकु दासी॥
माइ के पाइ लाइ सिरु चली।
धाइ माइ डोली चढ़ि रली॥

---

1. LUC सबहि; PUL सभहि, PUL बुलाओ. 2. LUC गौरि; PUL गौर, PUL पूजाइ, PAT बहिनि; PUL बहन, PUL ले आओ. 3. LUC अवर; PAT अउरि, PUL नार; LUC सखी, PUL जे उत्तमु; PAT जे उत्तिम; LUC उतिम लै. 4. PAT जे, LUC सब; PUL सभ, PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि, LUC के संग; PUL के संधि. 5. LUC भीतर, PUL पुनि बाहरि; LUC बाहिर पुनि. 6. PUL केह; LUC सब (for कहँ), PUL, LUC लोग. 7. PUL जहाँ लगि; LUC जहा लग, PUL सभि; LUC सब, LUC आयो. 8. PUL लोगि; LUC सब (for लगु), PUL लोह; LUC लोहे, LUC पहिरायो. 9. PUL धनष. 10. LUC फरी खर्ग (for अनीधार), LUC, PUL बिन. 11. PUL सिमटहि सूर भीर, LUC कीन्ही. 12. PUL, LUC संग, PUL हस्तन; PAT हस्तिनि; LUC हास्तिन, PUL, LUC की, LUC लीन्ही. 13. PAT पालिकी, PUL निकारी. 14. PUL चहु दिस, LUC एक; PUL इक. 16. LUC माइ धाइ, PUL डोली; LUC उली, PUL चड; PAT चड़ि.

दुमिनि कुँवरि दोऊ कर जोरे।
ए करतार करम कह मोरे॥
जौ न प्रानपति प्रानन पाऊँ।
कटक कोटि सभ रोइ बहाऊँ॥
तपति उसास दवागिनि डारउँ।
लोहन लोक अउटि सभ बारउँ॥१४१॥

† दोहरा

एकै साजन दुवन बहु, धरकै हिया धरकि।
सज्जन बिनु दुज्जन लहत, फूटहिं नैन तरकि॥१४२॥

¶ चौपई

इह बिधि अंचलु हस्त पसारे।
पहुँची कुँवरि गउरि कै द्वारे॥
गज कुंडल कीनो चहुँ फेरैं।
सुभट बीर पारस बिधि घेरैं॥

---

1. LUC दुर्मनि; PUL दुयमन, PAT कुंयरि, LUC दुयौ; PUL धाइ (for दोऊ), LUC जोरी. 2. LUC कर्म कहा; PUL कर्म भये, LUC मोरी. 3. PUL जो न प्रेमपति, PAT प्रानिन; LUC प्रानहि, LUC पाउ. 4. PUL कोट, LUC सब; PUL सभि, LUC बहाउ. 5. PUL तप्त उसास; LUC तपि तपि सास, PUL दावागिनि ढारों; LUC अगिनि सब जरै. 6. PUL लोगन लोग ओट सभ बारों; LUC लोहन लोग अवटि सब मारे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 7. PUL एके सजन दुजन; LUC इकै जसन दुमन, PUL धरके, PUL, LUC हीया; PAT हियं, PUL धरक; LUC धरकि, PAT धरक्क. 8. PUL, LUC सजन, LUC बिन, PUL दुरिजन लहों; LUC दुर्जन लहै, PUL नइन, LUC तरकि; PUL तरक. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 9. LUC इहि; PUL यह, PUL अचला; LUC अचल, PUL परारे. 10. PAT कुंयरि, PUL, LUC गौरि के. 11. PUL कुढली, LUC कीन्हे; PUL कीनी, PUL चउ; LUC om. चहुँ, PUL, LUC फेरे. 12. LUC परस, PUL घेरे; LUC घेरे.

मानस पंछी कहँ को आवै।
चंचलु पउनु न पैठनि पावै॥
अनीधार तीछन भरि छाई।
पैठत खंड खंड ह्वै जाई॥
सुभट कोट लोहनि के ठाढ़े।
चहुँ दिसि गैबर गिरि से बाढ़े॥
उतरी कुँवरि देवि कै द्वारा।
सखिन मद्धि सोभित ससितारा॥
अंचलु ओटि चहूँ दिसि कीनी।
दीपक सिखा बीचि जनु लीनी॥
देवी द्वार देखि सिरु नाइसि।
आइ माथु फुनि दिहरी लाइसि॥
मंगल गीत गउरि के गावहिं।
बहु बाजन बाजने बजावहिं॥
भीतरि भउन कुँवरि जौ आई।
करै भगति पूजा मनभाई॥

---

1. LUC मानष, LUC, PUL पंखी, PUL कह कोऊ; LUC कहा कोउ, PUL आवे. 2. LUC, PUL चंचल पवन, PUL न पहिठन; LUC पैठ न, PUL पावे. 3. PUL अनी अनीधार, LUC तीछन मरि छाती. 4. PUL पवटन (for पैठत), LUC पंख पंख, PUL होइ; LUC हुइ, LUC जाती. 5. PUL लोहे के; LUC लोह के. 6. LUC चहू, PUL दिस, PUL गइबर; LUC गैयर, PUL गिर से, PAT काढ़े. 7. LUC उतरि, PAT कुंयर; LUC कुवर, LUC, PUL देवी के; PAT देव कै, PUL द्यारे; LUC द्वारे. 8. PUL सखिनि, LUC मध्य; PUL मधि, PUL, LUC ससितारे. 9. PUL, LUC अंचर ओट, PUL चहू दिस कीनी; LUC पिछोरी कीन्ही. 10. LUC सखा बीच जनु कीन्ही. 11. PAT द्वारि; PUL द्वारु, PUL न्याइस. 12. LUC माथ पुनि, PUL देहरी लाइस. 13. LUC गवरि; PUL गौर. 14. PUL ऊहा बहु; LUC बहुत बाज, PAT बासने (for बाजने). 15. LUC भीतर, PUL, LUC भवन, PAT कुंयर, PUL, LUC जब. 16. PUL करे, LUC भगति, PUL मनु लाई.

फिरि फिरि मूरति पूजा करै।
पूजि गउरि के पाँइनि परै॥
जौ पूजत मुहि दरसनु पावा।
तउ न डरिन जौ सीस चढ़ावा॥१४३॥

† दोहरा

पूजा लाख सहस्र ब्रत, जप तप नेम अनेक।
जल थल तीरथ हंढियहि, कारन साँई एक॥१४४॥

¶ चौपई

हियँ करि धर धर सोचि निवारै।
मन करि ध्यानु गउरि को धारै॥
तुम देवी इच्छावरदाई।
जिह लगि बरउँ बार सुइ आई॥
झूठ साँच फल मंद विचारै।
करहु न्याउ हउँ कहौं पुकारै॥
तुमरे दर जो न्याउ न पावउँ।
किह कै द्वार पुकारि सुनावउँ॥

---

1. LUC पूजा मूरति, PUL करे; LUC करही. 2. PUL पूजे, LUC गवरि; PUL गौरि, LUC पाइन, PUL परे; LUC परही. 3. PUL जो प्रेमी हरि दरसन पाऊ; LUC जौ पूजत मह दरसन पायो. 4. PUL तो न ढरों; PAT डर न तनहि (for तउ न डरिन), PUL, LUC जो, PUL चडाऊ; LUC चढायो. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. PAT लक्ख, LUC सहश्र; PAT सहंस. 6. LUC तीर रहै यौं; PUL तीरथ नाईये, PAT सायर (for साँई). ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. PUL हीये, LUC, PUL कर धर सोच, PUL निवारे; LUC निवारहु. 8. PAT मनि; LUC मनु, PUL, LUC धरि (for करि), LUC ध्यान, PUL गौर के धारे; LUC गौरि को धारहु. 9. LUC इछा फल दाई, PUL इछा० 10. LUC जिहि, PUL लग, LUC वार वार सो आई; PUL बरों वर सोई आई. 11. PUL जूठ, LUC सब मंत्र (for फल मंद), LUC, PUL बिचारे. 12. PUL करो न्याइ, LUC मैं कहो; PUL मइ करों, PUL, LUC पुकारे. 13. LUC तुम्हरे, PUL द्वारि; LUC छार, LUC जु न्याव जो, PUL पावों; LUC पाउ. 14. LUC केहि के द्वार; PUL कहि के दरि, PUL पुकार, LUC सुनाउ; PUL सुनावौं.

तुम बिनु कउनु सूलु इह हरई।
बली जु हीने पर बलु करई॥
करि बिनती पूजा फिरि कीनी।
मंद मंद परिदछ्ना दीनी॥
गउरि प्रसादु पुहप कै माला।
कुँवरि कंठि पहिरावहिं बाला॥
कंचन बरन ब्याह को कंगनु।
कुँवरि हस्त बाँधैं जुवती जनु॥
लालु चूनरी छिरकति केसर।
तिलकु सुधारि सँवारिनि बेसर॥
नैन कोर लगु अति अनियारी।
धारिनि रेख कजर कै कारी॥
करन-फूल करननि पहिराए।
जगमग खुटिला नगन जराए॥
दीपकमाल कंठ सिर दमकै।
पाछै फूँद तरैया चमकै॥

---

1. LUC बिन, PUL सूलु कउन; LUC कबन सूल, PUL, LUC यह. 2. PUL बर (for पर), LUC करो सबर जो हीनपन करई. 3. PUL पूजा बेनती, LUC पुनि कीन्ही. 4. PUL परदछिना; LUC परिदछिना, LUC दीन्ही. 5. PUL गौर; LUC गवरि, LUC, PUL प्रसादपुहुप की. 6. PAT कुंयर, LUC कंठ, PUL पहिरावें, LUC माला. 7. LUC reads lines 7–8 between lines 2 and 3 of the next page, PUL रतन (for बरन), PUL ब्याह के; LUC ब्याक को, PUL, LUC कंकन. 8. PAT कुंयर, PUL बांधइ; LUC बंधहि, PUL, LUC जन. 9. LUC, PUL लाल, LUC छिरकिन; PUL छिरकीहे, LUC, PUL केसरि. 10. LUC तिलक, PUL सुधार संवारें; LUC सवारि सवारिन्ह, PUL, LUC बेसरि. 11. PUL नयन, LUC लग; PUL लये, PUL अनी आरे. 12. LUC धरिन; PUL धरनि, LUC, PUL काजर, PUL के कारे. 13. LUC कानन; PUL करनन. 14. PUL कुटिल, PAT नगनि. 15. PUL दीप मालह कंठि, LUC सिरि, PUL दमके. 16. PUL पाछल फुंद; पाछे फूल, PUL तरैवा चमके.

बडरे बार बनाइनि बेनी।
भरिनि माँगि मुकतनि कै सेनी॥
टीक टाड मनि मै चमकाई।
फूँद सँवारे कँकनि कलाई॥
राजरीति सिउँ राजकुँवारी।
नखसिख दुलहिनि सखिन सिँगारी॥१४५॥

† दोहरा

हिय धर बर तनि आभरन, किंकन चूरा हारु।
प्रीतम भेटें रसु रहै, सुफल होइ सिंगारु॥१४६॥

¶ चौपई

दुलहिनि रूपु भयो उजियारा।
झनक मनक मठ मैं झनिकारा॥
केसर कुसम बरन पट झीने।
लाल चूनरी ऊपरि कीने॥

---

1. PUL reads lines 1 and 2 in reverse order, LUC बड़डे बार बनाइन्ह; PUL बढ़रे बार बनइ, PAT बैनी; PUL पिकबैनी. 2. LUC भरिन माँग मुकतन्ह की; PUL धरन रेख काजर कै, LUC श्रेनी; PUL सइनी; PAT सैनी. 3. PUL टीक टाद मन मै; LUC टीक टाक मनि में. 4. LUC फूँदा, PAT, PUL जवारे, PUL कंगन; LUC कंकन, PUL गलाई. 5. LUC राजनीति, PUL, LUC सों, PUL राजकुँआरी; LUC राजकुमारी. 6. PAT नखसिखि, LUC, PUL दुलहिन, PAT सखिनि, PUL, LUC संवारी. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 7. PUL हीये; LUC हीय, LUC मनि अभरन, PAT चित्त न; LUC चित्रन (for किंकन), PUL, LUC हार. 8. PAT भावंता (for प्रीतम), PUL रहे; PAT om. रहै, LUC सफल; PUL सफलु; PAT रसुफल; LUC होई, PUL, LUC सिंगार. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 9. PUL दुलहनि, PUL, LUC रूप, PUL उजिआरा. 10. PUL जनक, PUL मठहा; PAT मढ़ मैं; LUC भा (for मठ मैं), LUC, PUL झनकारा. 11. PUL, LUC केसरि, PUL तन झीनी. 12. PUL लालु, LUC उपर, PUL कीनी; LUC कीन्हे.

घोरि सुगंध कुसुम को पानी ।
छिरके बसन बिरंच बिनानी ॥
मुख तँबोल सोभित बिहसंती ।
बोलत दसन दिपैं नगपंती ॥ 4
जहँ लगु संग सुंदरी अहहीं ।
दुलहिनि देखि रीझि सभ रहहीं ॥
पूजा करि पूजारी हूजिय ।
मानहु गउरि गउरि करि पूजिय ॥ 8
गउरि गुपत प्रसाद बहु कीने ।
मनोकामना सिधि फल दीने ॥
फुनि मंदिर कहँ आग्या लीनी ।
ताही समै क्रिस्न सुधि कीनी ॥ 12
सावधान रथ परि चढ़ि धाए ।
ताजनि तरल तुरंगनि लाए ॥
लोगनि अउर पंथ दिखरायो ।
तिरछे पलटि सिंघ जिउँ आयो ॥ 16

---

1. PUL धोर, LUC, PUL कुसम के. 2. PUL, LUC बरन (for बिरंच), LUC सुन वानी; PUL सुनि बानी (for बिनानी). 3. PUL ते बोल; LUC तबोल, LUC सोहत. 4. PUL बोलोत, LUC, PUL दिपहिं. 5. PUL, LUC जहां लग, PUL संगि, LUC अही; PUL आही. 6. LUC दुलहिनी; PUL दुलहनि, PUL, LUC दरस, सब रही. 7. PUL पूज, PUL, LUC करत, LUC पूजारिहु जीया; PUL पूजनी हे जीया. 8. LUC जानहु गौरि यहै पूजिया; PUL जानो गैरि गैरि कै पूजीया. 9. PUL reads lines 9 and 10 in reverse order, LUC देवी रीझि अनुग्रह कीन्हा, PUL गैरि, प्रसादु, कीना. 10. LUC मनकामना; PUL मन मानिक, PUL, LUC सिध, PUL फलु, LUC दीन्हा; PUL दीना. 11. PUL पुन; LUC पुनि, PAT मंदर, PUL कौ; LUC कह, LUC आवै लीन्ही. 12. PAT तेही, PUL समे, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC कीन्ही. 13. LUC पर, PUL चड़ आये. 14. PUL ताजन; LUC ताजी, LUC तुरंगन; PUL तुरंगम. 15. PUL, LUC लोगन, LUC और; PUL अवर. 16. PUL तिरिछे; LUC निरछे, PUL जिम; LUC जो, PUL, LUC धायो.

दच्छिन दिसि हुइ आपुन धाए।
गउरि मँदिरु दीने कर बाँए ॥१४७॥

† दोहरा

बीधा बेधे ना डरै, चहुँ दिसि कंटक झार।
चित्तु चहूटा मालती, भँवरु जु तन कै बार ॥१४८॥

¶ चौपई

जहँ मठु घेरि रहै दिसि चारी।
इक दिसि मानुस उठे पुकारी॥
जौ पाछै फिरि देखहिं लोगा।
आयो रुकमिनि बरु संजोगा॥
बदनु रूपु दिन ते उजियारा।
मुकटु सीस रवि छबि चमकारा॥
कंचन रथु मनिगन चमकाही।
देखत सनमुख देखि न जाही॥
देखत अचरजु लोकु भुलाए।
मेघ सूर उडगन मिलि धाए॥

---

1. LUC दछिन; PUL दछन, PAT, PUL दिस ह्वै, PAT अपुने दाए; PUL आपुन दांये. 2. PUL, LUC गौरि, LUC मंदिर, LUC दीन्हो कर; PUL करि दीनो, LUC बाये. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. LUC वेधा वेधहि, PUL ढरे, LUC चहू, PAT, PUL दिस, LUC झरि. 4. LUC, PUL चित, LUC चिहूटा; PUL चहूटियो, PUL भवरु न तके बार; LUC भौर न टेकै पारि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. LUC, PUL जहां, LUC मठ; PUL, PAT मट्ठु, PUL रह्यो; LUC रहे, PUL दिस. 6. LUC, PUL, PAT दिस, PUL, LUC मानस, PAT उठो. 7. PUL जो, PUL, LUC पाछे. 8. LUC रुकुमिनि; PUL रुकमनि, LUC बर संयोगा. 9. LUC, PUL वदन रूप, LUC दिनहुते, PUL उजिआरा. 10. PUL मुकट; LUC मुकुट, PUL छपि, PAT चमिकारा. 11. PUL कंचनु, LUC रथ, PAT मनिगनि, LUC चमकाई. 12. LUC निरखत, PUL देखो (for देखि), LUC जाई. 13. PAT देखित, LUC अचरज, PAT देखि; LUC लोग. 14. PAT उडिगनि; PUL उदगन, PUL मि (for मिलि), LUC आये.

जिन जिन रथ के चक्र निहारे।
मोहन बान क्रिस्न जनु मारे॥
जहँ लगु मोहमगनु सभु भए।
गज कुंडलु खंडित हुइ गए॥
तउ लगु कुँवरि कछू सुधि पाई।
देव-मँदिर देहरि परि आई॥
निकसत वदनरूप छबि बिगसी।
लोगन जान्यो देवी निकसी॥
मोहन भेखु सरस्वति कीना।
ज्वालमुखी दरसनु जनु दीना॥
दुहु जग जोति दरसु दुहु दीने।
दुच्चित लोक दुहूँ दिसि कीने॥
चंद सूर दुइ परगट भए।
दुरजन अंधकार दुरि गए॥१४९॥

† दोहरा

भावंता आवंतु सुनि, अनभावंता रोइ।
बलि बलि सज्जन सेवते, दुरजनु रह्यो न कोइ॥१५०॥

---

1. PUL जिन्ह जिन्ह, LUC खोज निवारे (for चक्र निहारे). 2. LUC किस्न; PUL कृष्ण. 3. PUL, LUC जहां लग, मगन, LUC सब; PUL जब. 4. LUC कुंडल; PUL कुंढली, PUL खंढत होइ भए. 5. LUC तौ, PUL लगि; LUC लग, PAT कुंयरि, LUC कछुक. 6. PUL देहर परि; PAT दिवरं परि; LUC हिहरी पर. 7. PAT निकसित, LUC जोति (for रूप), PUL बिकसी; LUC कैसी. 8. PAT लोगनि, LUC जानौ. 9. LUC भेख; PUL भेखु, LUC सरसुती; PUL स्वारथी, PAT सरस्वती, LUC कीन्हा. 10. LUC, PUL ज्वालामुखी, LUC दरस जनु; PUL जब दरसनु, LUC दीन्हा. 11. LUC दुह जुग; PAT दुहु जगि, LUC, PUL दरस, PUL दुहू दीने; LUC जनु दीन्हा. 12. PUL दुइ चित; LUC दुचिते, PUL, LUC लोग, PUL दिस, LUC कीन्हा. 13. LUC सूरज, PUL दो; LUC होउ. 14. LUC दुर्जन; PUL दुरिजन. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 15. LUC आवंत; PUL आवत, PUL सुना, LUC अनभाइंता, PUL रोई. 16. LUC, PUL सजन, LUC दुर्जन रहा, PUL कोई.

¶ चौपई

निकसत कुँवरि रूप की रेखा ।
सहसकला जनु सूरजु देखा ॥
जगमग दरसु दीठि नहि आवै ।
रूप की जोति लपट जनु धावै ॥ 4
रबि ससि नखत सहित दुउ जाने ।
चकचउँधे सभ लोक भुलाने ॥
ससिमुख के सनमुख गिरि परहीं ।
देवी जानि दंडवत करहीं ॥ 8
बाँएँ देखि बिकल सभ भए ।
जानु जोति फनिगा जरि गए ॥
दाहिनि दिसि जब नारि निहारी ।
देखे रथ परि मैन मुरारी ॥ 12
मुकट प्रकास भयो उजियारा ।
सूर किरनि कुंडल चमकारा ॥
भँउह कुदंड चपल दोउ कोरैं ।
नैन कोर कुंडल छबि जोरैं ॥ 16

¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 1. LUC निकसित; PAT निकसति, PAT कुंयरि. 2. LUC सूरज जनु. 3. LUC रूप दिष्टि नाहीं; PUL ढीटि न दरसनि, PUL आवे. 4. LUC om. की, PUL लट जनु धावे; LUC विजुली अधि धावै. 5. PAT नखित, PUL दोऊ; LUC होउ, LUC जानै. 6. PUL चकचौंधे; LUC चकचौधत, PUL om. सभ; LUC सब, LUC लोग भुलानै. 7. LUC, PAT सनमुख (for ससिमुख), PUL धरि; PAT भर (for गिरि), PAT परई. 8. PAT जानु. 9. LUC सब. 10. LUC जानह; PUL जानि, LUC फनीग; PUL फनिनाग. 11. LUC, PUL दाहने दिस. 12. LUC देख, PUL फिरि; LUC पै (for परि). 13. LUC प्रगास, PUL नयो उजिआरा. 14. LUC किरिनि; PUL किरन, PUL कुटल. 15. LUC, PUL भौंह, LUC कुवंड; PUL कुंडल, PUL पल (for चपल), LUC होउ, PUL कौरे; LUC कौरै. 16. PUL नइन, LUC कोरि; PUL किरन, PUL कुटल, जौरे.

मानिक अधर दसनदुति हीरा।
अनुपम रतन होहि मिलि बीरा॥
बारक दरस दिस्टि भरि लीना।
फिरि न उँच रुकमिनि मुख कीना॥
बिथकित छतिया धरधर भई।
रोम पुलकि पांडुर ह्वै गई॥
जहँ लगु संग सहेली अहीं।
मोहन दरस मोहि सभ रहीं॥१५१॥

† दोहरा

बलि धल्लभ तन प्रान धन, मनु बलि कै बलि जाउँ।
पाइनि तर कौं पाँउड़े, पुतरी धरत लजाउँ॥१५२॥

¶ चौपई

जो मुख रूपु ध्यानु महि धरई।
मनमूरति करि पूजा करई॥
सो स्वरूपु सुंदर दिखराए।
जानहु निकसि हिए सिउँ आए॥

---

1. LUC दामिनि (for दसन), PUL द्विति, LUC हारी. 2. PUL, PAT अनूपम, PUL दसन (for रतन), होइ, LUC वारी. 3. PAT बरका; PUL बालिक, PUL द्रिष्टि; LUC देखि, LUC लीन्हा. 4. LUC उच; PAT ऊचि, PUL रुकमनि; LUC रुकुमिनि, LUC मुँह कीन्हा. 5. LUC बिछुरत छतीया; PUL विथिकत छतीय, LUC घर घर. 6. PUL सोम (for रोम), LUC, PUL पुलक, PUL पांढर, LUC हुइ; PUL होह. 7. PUL, LUC जहां लग, PAT संगि; PUL संघ, PUL आंही. 8. PUL रीझि; PAT मोह, LUC सब. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. LUC बलि बालक पथ प्रान धन; PUL बाल खलिभ तन प्रान धन, LUC मनि, PUL बालि कै बल. 10. LUC पावन तरके पावरे; PUL पाइन तर कहि पाव दे, PUL धरित, PAT समाउ. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. PUL मधि (for मुख), LUC, PUL रूपध्यान, PAT, LUC जो (for महि), PUL धरही. 12. PUL मूरिति, LUC, PUL की, PUL करही. 13. LUC सोई; PUL सोइ, LUC, PUL सरूप, LUC सुंदरि; PUL सुंदरु, LUC दिखरायो. 14. PUL जान्यो, LUC, PUL हीये ते, LUC आयो.

सुभट कोट कंटककुल जोहे।
बिथकित मोहन दरसन मोहे॥
कहुँ तुरंग करिवर कहुँ रावत।
कहुँ गैबर कहुँ गिरौ महावत॥
जे गज मत्त कोटि जुरि जाहीं।
एक सिंघ की बासु पराहीं॥
सकुच अंग बिह्वल सभ भए।
कोट कबच ढीले हुइ गए॥
सातिक स्वेद सभनि ढरि चला।
लोन भाँति लोहू सभ गला॥
कमलनैन कहँ नैनन लाए।
निरखत रुकमिनि सनमुख आए॥
जगमगात रवि क्रिस्न निहारा।
मोर भँवर रुकमिनि सिरि तारा॥
रथ नियराइ क्रिस्न ढिग आए।
हस्त कमल दुलहनि भुज लाए॥

---

1. PUL कंटक कुकुल; LUC कटक कुल, LUC जोहै. 2. PUL बिथ-करि, LUC मोहै. 3. LUC कहू तुरग, PUL कहुं करवत; LUC कहू करिवर; PAT करवर कहुं. 4. LUC कहू, PUL गइवर; LUC मयंद, LUC कहू, PUL, LUC गिरे. 5. PUL जो; LUC जौ, LUC गज मत, PUL, PAT कोट, PAT reads मत्त after कोटि, PAT जे (for जुरि). 6. LUC सिंध की वास. 7. LUC सकुचि अंग विन आलस भये. 8. PAT कोटि; LUC कुंड, LUC कुंवंड (for कबच), चढि (for ढीले), PUL होइ; LUC वोहे. 9. LUC सातक; PUL सातिकरे, PUL सेद, LUC, PUL सबनि, PUL ढखिला (for ढरि चला). 10. LUC, PUL add की after लोन, PUL भांत, LUC, PUL लोह, LUC गिरि; PAT करि (for सभ), LUC चला. 11. LUC कवल नैन, PUL कहू; LUC कह, PUL नइनन; LUC नैननि, PUL लये. 12. PUL निरखत कर्कसान मुखु आए, LUC रुकुमिनि. 13. PAT जगमगाति, LUC नग (for रबि), PUL कृष्ण; LUC किस्न, LUC निहारे. 14. LUC रुकुमिनि; PUL रुकमनि, LUC, PUL सिर, LUC तारे. 15. LUC रथु; PUL राथ, PUL निअराइ, LUC किस्न; PUL कृष्ण. 16. LUC कवल, PUL रुकमनि; LUC दुलहिनी.

सकुचि प्रान तिह ठउर समाए।
अँगुरिनि महि नखसिख जनु आए ॥
केसरि कुसम लता जनु आई।
हरि हर यौं रथ पर बैठाई ॥१५३॥

† दोहरा।

तनु पुलकित पल्लव परस, हस्तकमल नख सोम।
हिय झुकि अतिकोमल करनि, लगहिं न कंटक रोम ॥१५४॥

¶ चौपई

दुलहिनि बैठाई ढिग पाछै।
आपुन फिरि बैठे भट काछै ॥
हरि रुकमिनि हरि हस्त निवारे।
हस्तकमल फिरि सस्त्र सँभारे ॥
रथमुख द्वारावति पथ दीने।
हरि मुख कुंडिनपुर तन कींने ॥
चंचलु रथु हाँक्यो सारथी।
पड़्यो धनुख विद्या पारथी ॥

---

1. LUC om. lines 1–2, PUL सकुच प्रान तिहि गौर सभाये. 2. PUL अंगुरनि माहि जनु नखसिख पाये. 3. PUL केसर, LUC कुसुम. 4. PAT हरि हर ए; PUL हरि हराइ, PUL परि, LUC वैसाई. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. LUC तन, PUL पुलकत, LUC पाये; PUL प्रानन (for पल्लव), PUL पवरस. 6. PUL हीया झूकि; LUC हीय झकि, PUL करन, LUC कटके. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. PUL दुलहनि, LUC बैठारिन; PUL बैठारी, LUC, PUL पाछे. 8. PUL अपुन, LUC, PUL काछे. 9. LUC जब (for हरि), PUL रुकमनि; LUC दुलहिन, LUC तन (for second हरि). 10. LUC, PUL तब (for फिरि). 11. PUL द्वारावती, LUC करि; PUL पथि, LUC दीन्हा. 12. PUL कुंदनपुरि; LUC कुंदनपुर; PAT कुंडिन, PAT परतख (for तन), LUC कीन्हा. 13. LUC om. lines 13–14, PAT हांको, PUL स्यारथी; PAT स्वारथी. 14. PUL राम राम पड़ो धनख विद्यारथी.

परसत तजी सार कै सारी।
सार धार सारी कर धारी॥
जब लगु क्रिस्नु कोस इक गए।
तबै सुचेत लोक सभ भए॥
मोह छाडि कै नैन उघारे।
चलि गो चंदु रहे सभ तारे॥
चंद्रकांति मनि हरि जनु लीनी।
लक्खनि छाडि लाख जनु दीनी॥
ठग की मूरि उतरि जनु गई।
सभहनि के जिय चटपट भई॥
फिरि लोगनि ऊँचे कर कीने।
उहु दिखु हरे जाइ हरि लीने॥
तारा लीक खोज है जैसे।
चाँद सूरु जनु इक रथ वैसे॥
जिउँ रथु चपलु उताइलु धावै।
इन्द्र धनुख जनु निकसतु आवै॥१५५॥

1. LUC om. lines 1–2, PUL सार के. 3. PUL, LUC लग, PUL कृष्ण; LUC किस्न, LUC एक. 4. LUC तब हि सचेत लोग सब भये; PUL तब लगि लोक सुचेता हि भये. 5. PUL छाढि के; LUC छोड़ि कै, PUL नइन, LUC निहारे. 6. LUC, PUL गयो चंद, PUL है (for रहे), LUC सब, PUL ठारे. 7. LUC चंद्रक्रांति; PUL चंदकांति, LUC जनु मनु हरि लीन्ही. 8. PUL लाखनि छाढि; LUC लाखन छोड़ि, PAT लाखि, PUL जन, LUC दीन्ही. 9. PUL ठठा मूकि मूरि उरि जन गई. 10. LUC सबहुन के; PUL सभन के, LUC, PUL जीय, PUL चटपटी. 11. LUC, PUL लोगन, LUC उचे, कीन्हे. 12. LUC वह देखहु रे; PUL ऊहू देखि हर, LUC लीन्हे. 13. LUC तारे, PUL लोक, ह्वै, LUC तैसे. 14. PUL चंद, LUC, PUL सूर, LUC बैठे. 15. PUL, LUC जो रथ चपल, LUC उताइल; PUL उतावल. 16. PUL धनखु, LUC, PUL निकसत.

† दोहरा

दंपति भूखन रथ चमक, गउर स्याम तन भेख।
कांति लीक बहु बरन भई, इन्द्रधनुख की रेख ॥१५६॥

¶ चौपई

खरभराइ नहि बसन सँभारे।
परचो सोरु सभ लोक पुकारे ॥
धावहु धावहु चहुँ दिसि भयो।
धारि धारि करि सरबसु गयो ॥
सुनि पुकार नगरी अकुलाई।
मंदिर मंदिर सभ चढि धाई ॥
रथ परि गउरि स्याम कै जोरी।
नव जलधर बिजुली छबि गोरी ॥
वह दिखु लिए जाइ ढिग बाँई।
स्याम घटा जनु दीप जगाई ॥
रुकम मँदिर जिवनारि सँवारी।
जेवन सभै बराति हँकारी ॥

---

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 1. PUL दंपत, PAT भूखनि; PUL भूषण, LUC, PUL गौर; PAT गउरि, PAT घन (for तन). 2. PAT कांत लीक; LUC कीये तिलक, PAT भुइ, LUC, PUL धनख, LUC के रेख. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 3. PUL नही, PAT सभनि (for बसन), PUL भारे (for संभारे). 4. PUL परत; LUC मचो, LUC सोर, LUC, PUL सब लोग. 5. PUL धावतु धावतु, PAT दिस; PUL दिर, LUC भयेउ. 6. LUC सर्वस गयेउ. 7. PUL सुनी; PAT फुनि, PAT पुकारि, LUC नागरि अकुताई. 8. LUC पर; PUL सब्र, PUL चहुँगै (for चढि). 9. PAT रथि, LUC पर, PUL स्याम गौर; LUC गौर स्याम, PUL की; LUC करि. 10. LUC जलधरि, PAT बिज्जुलि छबि; LUC हरि विमल. 11. PUL वह देखि, LUC लीये; PUL लाए; PAT लै, PUL बांए; LUC वाये. 12. LUC जानौ , PUL जगाये; LUC दिखाये. 13. LUC रुकुम, PUL मंदिरि, LUC जीवनार; PUL जिवनवार. 14. LUC सबै; PUL रमे, PUL, LUC बरात.

तउ लगु धावन धाइ पुकारा।
बैठे जहाँ राव जिवनारा॥
बावन हुइ बलि राजा छला।
सो हरि जगतजोति लै चला॥
जबहि सुनी दुलहिनि हरि हरी।
रोस अगिनि सभ ही पर परी॥
सुनि तिहि बेगि तजी जिवनारा।
बिना पलान होहि असवारा॥
इह कहि लोकु उताइलु धावै।
गूजरु पूतु जान नहि पावै॥१५७॥

† दोहरा

गोकल गोपी मनु हरनु, गोरसु हरनु अहीरु।
अब इह हरनहु बंचियो, तऊ जानि बलिबीरु॥१५८॥

¶ चौपई

मारु मारु करि परी पुकारा।
बगमेलनि धावहिं असवारा॥

---

1. LUC तौ लग; PUL तब लगि, PUL धावनु; PAT धावनि. 2. LUC बैठी, PUL, LUC राज, LUC जीवनारा. 3. PUL होइ, LUC छरा. 4. LUC सोई हरि, PAT जगति०, PUL ले. 5. PUL सब हि; LUC जब ही, PAT सुनहि, PUL दुलहनि. 6. LUC रौस, LUC, PUL अगिनि, LUC, PUL सब, LUC हुन; PUL हीये, PAT खर (for पर), LUC जरी. 7. LUC सुनतहि; PUL सुन ही, PUL बेग, PAT तजिनि. 8. LUC होइ; PUL होए, PUL हसवारा. 9. PUL यह; LUC जह; PAT इहि, LUC कलि (for कहि), LUC, PUL लोग उताइल, PUL धावे. 10. LUC गुजर; PUL गुजरि, LUC जानि नाहीं; PUL जानु नही, PUL पावे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 11. LUC गोकुल, PUL मन; LUC जन, LUC, PUL हरन गोरस हरन अहीर. 12. LUC इहि; PUL यह, LUC हरन जो बचिहै; PUL हरन ज बाचहे, LUC तब जानहि वर वीर; PUL तो जाने बलवीर. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 13. LUC मार मार. 14. PAT बेगमिलनि; PUL बेगमेल, PUL धावे हसवारा.

काढ़े खडग साँग चमकावत।
धावहु धावहु करि सभ धावत॥
छाडि तुरंग जानु कर साइल।
निकसि एक ते एक उताइल॥
सुनतहि चाह भयो जनु बउरा।
रुकमु उताइलु अगमनि दउरा॥
डेरैं डेरैं भयो दमामा।
बंब धुकारि जाइ धुरि जामा॥
सुनि जादउ आगैं सभ आए।
तउ लगि क्रिस्न कटक नियराए॥
अपुने कटक आइ हरि पैठे।
खिन इकु उतरि सिंघासन बैठे॥
मित्रनि देखि हरखि मुसकाने।
कहसि भए कारज हम माने॥
मंडहु जुद्धु क्रुद्धु हठि धारहु।
सजग होहु हथियार सँभारहु॥

---

1. PUL om. lines 1–2, LUC खर्ग काठि सांगै. 2. LUC सब. 3. LUC om. lines 3–4, PUL छाढे, साइला. 4. PUL येक ते निकसत येक. 5. PUL सुनतही, LUC भई; PUL भया, LUC, PUL बौरा. 6. LUC रुकुम; PUL रुकम, PUL, LUC उताइल, LUC आगमन; PUL आगम, LUC, PUL दौरा. 7. LUC डेरा डेरा; PUL देरे देरे. 8. PAT बुंब, LUC, PAT धुकार, LUC जाई, PUL धुर. 9. PUL सुन, LUC जादौ दल आगे आए; PUL जादो बल आगे आयो. 10. LUC जब लग; PUL तब लग, PUL कृष्ण; LUC किस्न, PUL कटिक निअरायो; LUC निकट निजराये. 11. LUC अपने, PUL, PAT कटिक, PUL पइठे. 12. LUC रुकुमिनि ढिग वीरासन, PUL छिन इक, बइठे. 13. LUC मित्र, PUL हरख. 14. PUL कहन; PAT काहि न, PAT काज, LUC, PUL मन-माने. 15. PUL मंढहु जुधु क्रोधु हठु धारहु; LUC दुहू जुध क्रोध हिय धरहु. 16. PUL सुजग; PAT संजोहु, PUL हथीयार; LUC असवार, LUC सभारहू.

दुहु दल बीचि दुजन करि लेहू ।
पहिले धावन आवन देहू ॥
अगमन अनी जीति हनि लीजिय ।
पाछै घाउ निसानहि कीजिय ॥
इक रथ क्रिस्न इकेले जाने ।
इक इक दुइ दुइ आइ तुलाने ॥१५६॥

† दोहरा

तरुन जुद्ध को बलु जिन्हैं, निकसे हइ दौराइ ।
मारु मारु धरु धरु किए, आइ पहूँचे धाइ ॥१६०॥

¶ चौपई

पहिले बात करत जे ऊँची ।
सैन रुकम की आइ पहूँची ॥
अनियारी धारनि मुख आए ।
सभै अचानक मारि गिराए ॥
बाम दछिन दिसि सिउँ सर छूटे ।
गिरि गए बीर तुरंगम लूटे ॥

---

1. LUC दुहू; PUL दुह, LUC बीच, PUL दुवन; LUC द्रुमन, LUC धरि. 2. PUL adds ही after पहिले. 3. LUC जात (for जीति), PUL लीजीये; LUC लीजै. 4. LUC, PUL पाछे, LUC धाव नसाहेहि; PUL घाउ निसाने, PUL दीजीये; LUC कीजै. 5. LUC reads lines 5 and 6 in reverse order, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC अकेले. 6. PUL एक एक द्वै ते नीयराने, LUC आनि (for आइ). † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 7. PAT तुरन; PUL तुरहन, PAT जूझि; LUC जुध, PUL झूझू, PAT बरु; PUL बरा, PUL om. जिन्हैं, PAT, LUC हैं, PUL द्वौराइ; PAT दुइगाइ. 8. PUL, LUC जु करि; LUC कीये, LUC पहुचे; PAT पहूचो. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 9. PUL पहले; LUC पहिलेहि, PUL बाति, LUC कहहि; PUL कहे (for करत). 10. LUC सन्य रुकुम की आनि. 11. PUL अनीआरी; LUC अनीधार, PUL धारन; PAT धारिनि, PUL लाये. 12. LUC सबै; PUL सबे, PAT अचानिक, LUC आनि (for मारि). 13. LUC दिसि ते; PUL दिसि सो. 14. LUC सूर (for बीर).

फरफराइ लोटहिं धर ऐसे।
मीन मकर सर सूके जैसे॥
अगमन गिरे रुकम के साथी।
आपुन दउरि हँकारिन हाथी॥
केहरि क्रोधनि धाइ हँकारयो।
खुनस खग्ग कुंभस्थल झारयो॥
कीनसि घाइ लाइ भुज भला।
ढारिसि रुधिर चँवर चुइ चला॥
उमड़ो स्रोनु कुंभ भंकारे।
कीने गैबर दंत पनारे॥
धाइ तहीं चिंघरि मदमाता।
सुंड भसुंड भए गिरि राता॥
हाथी जब लाइसि हथियारा।
बीर सैन जादउ ललकारा॥
पलटि वीर सिर दीन्हसि साँची।
काटो कुंभु मूंड गा बाँची॥

---

1. LUC फरफरात; PUL फरिफराइ, LUC लोटत, PUL धरि. 2. PUL सूहि सरि जैसे. 3. PAT अगर्मिनि, LUC रुकुम. 4. PAT आपुनि, LUC दौरि, PAT हकारिनि, PUL कहूँ महावत कहूँ गिरि गए हाथी. 5. LUC क्रोध; PUL क्रोधि, LUC जाइ हंकारो. 6. PUL खुमस; PAT मुख सिउ, LUC खर्ग; PUL खागु, PUL झायो; LUC झारो. 7. LUC कीन्हिसि; PUL कीन्हसि, LUC, PUL धाइ, PUL भज, LUC, PUL भले. 8. LUC टरिसि; PUL ढारसि, LUC रुहिर, LUC, PUL चले. 9. PAT उमडौ; PUL उमगे, LUC श्रोन; PUL श्रोण, LUC भंकारा. 10. LUC कीन्हे गैयर, पनारा. 11. PAT घाइ ताइ; LUC चाइ धाइ (for धाइ तहीं), PUL चिंघारयो, LUC चिंघर, LUC मदमाते; PUL माता; PAT उदमाता. 12. PUL सुंढ, LUC विसुंड; PUL भसुंढ, PUL भयो, LUC रंग राते; PUL ही राता. 13. LUC हाथिन, PUL लाइस, PUL हथीयारा. 14. LUC वीर सेना, PUL जादो; LUC जदौ. 15. PAT लपटि, PAT सिरि; PUL रिल (for सिर), LUC दीन्हिसि. 16. PUL कटतो, LUC रुंड; PUL कुंड (for कुंभु), LUC, PUL मुंड गयो.

तब लगि क्रोधनु बीर उडाना।
पाछै गैबरु आइ तुलाना॥
दुचितु कुँवरु परै नहि दाऊ।
धरिसि तुरी करि पाछिल पाऊ॥१६१॥

† दोहरा

तुरी लिए गैबरहि गहि, परे धरनि गिरि काँपि।
तब लगु उठनु न पाइयो, वीरसैन लिउ चाँपि॥१६२॥

¶ चौपई

हय मरोरि हाथी हनि डारा।
गयो धरि धूरि लोटि असवारा॥
गरू अस जोहु उठै नहि दीना।
तरहरि चाँपि बीरु बसि कीना॥
कंठ भेद कहँ लीन कटारी।
तउ लगि हलधर कह्यो पुकारी॥

---

1. PUL, LUC लग, PUL धाइ क्रोध विरझाना; LUC धाइ क्रोइ बिरझाने. 2. PUL, LUC पाछे, LUC कै अरि (for गैबरु), तुलाने. 3. PUL दुइचित; LUC दुचितो, LUC कुवर, PUL फुरो नही; PAT फिरिड नहि, PAT adds जु after नहि, LUC दाउ. 4. LUC धरै; PUL धरस, LUC, PUL कर, PUL पाछुल, LUC पाउ. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 5. PUL तुरीय, LUC लीन्ह; PUL लन, LUC गैयरहि; PUL गैवर, PUL गह्यो, LUC पयो; PUL परयो, LUC गिर करि. 6. LUC, PUL लग, LUC उठन; PUL उठे, PUL न पारही, PUL लीउ; LUC लीये, LUC चारि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 7. PUL है; LUC हाथ, LUC हाथ (for हाथी), PUL हरि ढारा. 8. PUL हसिवारा. 9. PAT गुरु बस; LUC गरु वस, PUL जो उठे नहीं; LUC लोव उठै नहि, LUC दीन्हा. 10. LUC तरहर; PUL तरिहर, PUL चाप, LUC, PUL बीर, LUC बस कीन्हा. 11. PAT कहिं, LUC लिहिसि; PUL लीह, PUL कबारी. 12. PUL तब लग; LUC इक दिसि, PAT हलिधरि; LUC हलधल, PUL उठो; LUC उठे.

इन जिनि बधहु बाँधि सँग लेहू।
हाथ पाँउ गल बन्धन देहू॥
रथ सिउँ बाँधि रुकमु जब लीना।
पाछै घाउ निसानहि दीना॥
दुंदभि हनत अँबर घहराना।
तब जादउ दल लोगन जाना॥
इक दिसि ढोल जुझाऊ बाजा।
इह बलभद्र बीर दलु साजा॥
चहुँ दिसि मारू रागु बजावा।
तहँ गद सुभट साजु लै आवा॥
बाजहिं सिंग झाँझ झनकारी।
इह सातिक की सैन निवारी॥
कूल कूल सभु कोई कहई।
कपटी कान्ह कपट महि रहई॥
बावन ह्वै बलि कहँ दिखराए।
छलि बाढ़े त्रिभवनु न समाए॥१६३॥

1. LUC इहि; PUL इह, PUL, PAT जिन, PUL बांध, PAT संगि; PUL संधि. 2. LUC लग (for गल). 3. LUC, PUL सों, PUL रुकम; LUC रुकुम, LUC लीन्हा. 4. LUC, PUL पाछे, LUC घाव, PUL निसाने; LUC निसानेहि, PUL कीना; LUC दीन्हा. 5. LUC दुंदभी; PUL दुंदब, PUL हान अमर, PAT घटराना. 6. PAT जादम; PUL जादो; LUC जादौ, LUC पति (for दल), PAT लोकनि. 7. PUL, PAT दिस, LUC जुझाउ; PUL झुझाउ, LUC बाजहि. 8. LUC, PUL यह, LUC बलिभद्र; PUL बलबीर, LUC दल साजहि. 9. LUC जिहि दिसि; PUL जिह दिस, LUC राग, PUL बजा. 10. LUC यह (for तहँ), PUL लग (for गद), LUC साथ लै; PUL साज ले. 11. PUL बाज्यो, LUC सिगी; PUL अंग. 12. PUL, LUC यह, LUC सांतिक, LUC सेन निहारी; PUL सइन निआरी. 13. PUL कूलि कूलि, LUC सब; PUL सभ, LUC कोउ, LUC कहै. 14. LUC बस न रहै; PUL माह रहई. 15. PUL बामन कै; LUC बावन हुइ, PUL बल को; PAT बलि कै. 16. LUC छल, PUL त्रिभवन; LUC त्रिभुवन.

† दोहरा

समुद दिखावै आप जौ, घट के मध्य समाइ।
पुनि कपटी छिन मै पसरि, जावै बोरि बहाइ ॥१६४॥

¶ चौपई

तउ लगु धाइ सँदेसा दीना।
जूझे लोक रुकम बस कीना॥
सुनत हिए दावा जस लायो।
चढि ससिपाल सुभट लै आयो॥
पहिरि लोह तरवा लगु तारू।
बंब धुकारि बजाइसि मारू॥
मारु मारु करि पहुँचौ नेरे।
गद सिउँ आइ भयो मुठभेरे॥
एक एक सिउँ इउँ जुटि गयो।
बाज्यो सारु झनाझन भयो॥
टूटै सारु धार झनकारी।
फूटै कुंभ उठै ठनकारी॥
उठी धूरि गहि मैगल भारी।
आयो जरासिंधु अधिकारी॥

---

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 1. LUC om. the portion beginning with दोहरा 164 (समुद दिखावै०) and ending with the 6th line of चौपई 167 (छूटहिं अगनि बान तपि गोला), PUL दिखावे, ज्यों, घटि ता मधि. 2. PUL पुन, महि, PAT पसर. ¶ PUL चौपै. 3. PUL तब लगि जाइ. 4. PUL झूझो लग रुकमु वध लीना. 5. PUL हीये, लयो. 6. PUL सिसुपाल. 7. PUL लग. 8. PAT बुंब, PUL धुकार, बजाइस. 9. PUL मारि मारि, पहुंच्यो. 10. PUL सों अय भयो मुटभेरे. 11. PUL सों जौ जुरि. 12. PUL बाजे, झूनाझुन. 13. PUL टूटे, PAT सरु, PUL धारु झनकारा. 14. PUL फूटे, उठे ठनकारा. 15. PUL महिगल (for मैगल). 16. PUL जरासंध.

मेघबरन मैगल मुख दीने।
हैदल मैदल रथदल लीने॥
घुरहिं निसान दुरद चिंघारहिं।
बाजहिं संख भेरि झंकारहिं॥
इत बलभद्र बीरु बिरझाना।
कारी घटा साजि समुहाना॥
उमड़ि मेघ गरजे जिम भादउँ।
सजि सनाह गल गाजे जादउँ॥१६५॥

† दोहरा

हैदल पैदल पइकदल, रथदल जुरे हँकार।
दोऊ सैना चतुरबिधि, परी दुहुँ दिसि मार॥१६६॥

¶ चौपई

रथ सिउँ रथ दंतनि सिउँ दंती।
सूरनि सिउँ सूरनि की पंती॥
पाइक सिउँ पाइक भल जुरई।
जीवत इक सिउँ एक न मुरई॥
इन्द्रासन डग डग डरि डोला।
छूटहिं अगनि बान तपि गोला॥
खग्गि घाइ टूटहिं सुंडाहल।
फूटहिं कुंभ झरहिं मुकताहल॥
खग्ग घाइ कुंभनि तोरंती।
कटि कटि चंवर चुवहि ओरंती॥

---

1. PUL मुखि. 2. PUL हइदल पइदल, दीने. 4. PAT बाजै, भभकारहि. 5. PAT बलिभद्र, PUL बीर, PAT बिरचाना. 7. PUL उमडे घन गरज जोत्र भादो. 8. PUL साजि सना, जादो. † PUL दोहा. 9. PAT पैदल (for मैदल). 10. PUL सइना चतुरंगिनी, चहूं दिस. ¶ PUL चौपै. 11. PUL सों, दंतन सों. 12. PUL सूरन सों सूरन. 13. PUL सो, भले. 14. PUL जीयत एकसों. 15. PUL ढग ढग ढरि ढोला. 16. PUL अगनबान तब. 17. LUC खरग; PUL खडग, LUC धार, PUL सूंडाहल. 19. LUC खर्ग धार; PUL खग धाइ, LUC कुंभन; PUL कुंभत, LUC तोरती. 20. PAT कटकि काटि, LUC चमर, PUL चुवाइ; LUC चलहि, LUC वोराती; PAT उड़पंती.

अति मदंध मुख फेरत नाहीं।
घाइलु घूमि घूमि बिरझाहीं॥
रावत जब गैबर बस परहीं।
धर सिउँ पटकि धूरि जस करहीं॥
झरहिं रुहिरु झरना गिरि साँचे।
चलहिन हस्त अचल हुइ माँचे॥
खग्ग घाइहस्ती चिंघारैं।
टूटहिं दंत मंत्र सिर झारैं॥
दुहु दिसि एकु न टारो टरे।
हलु सँभारि हलधरि अनुसरे॥
हलु उठाइ दुह बर जिह लाई।
पाछिल पाइ परौ डिड आई॥१६७॥

† दोहरा

हलबल कुंभस्थल हने, जनु गिरि खनउ कुदार।
जानउ काढो खानि सिउँ, गजमुकतन के भार॥१६८॥

---

1. LUC अति मदांध; PUL अत मंद. 2. LUC घाइल; PUL घाइन, PUL घूम घूम, LUC मरि जाही; PUL वि झाही. 3. LUC गैयर, PUL वसि, LUC, PUL परे. 4. LUC धरि सौं; PUL धरि सों, PUL जसु; LUC अस, PUL, LUC करे. 5. PUL झरे, LUC रुहिर; PUL रुधरि, LUC झरन महि सांचे. 6. PUL चलेन, PAT दुइ; PUL ह्वे, LUC मचे. 7. LUC गदाधार; PUL गदा घाइ, PUL चिंघारे; LUC चिंघारहि. 8. LUC, PUL टूटे, PUL संत सरु; PAT मंत सिरि, LUC झारहि; PUL झारे. 9. PUL दिस, PUL, LUC एक, PAT न टारा टरो; LUC टरै नाही टारै. 10. PAT दलु; PUL, LUC हल, LUC हलधल; PAT हलिधरि, LUC अनुसारे; PAT अंगुसरो. 11. LUC om. lines 11–12, PUL हल उठ हल दुह थर जिह. 12. PUL पाछल पाउ परयो इनि आई. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. LUC जानौ, PUL खने; LUC खनै. 14. LUC मानहु काटत खान ते; PUL जानो काढे खान सों, PUL ०मुकता, LUC हार.

¶ चौपई

सिंघनाद दुंदभि बहु बाजे।
दुहु दल घन मैगल गलगाजे॥
हय हीसहिं हंकारहिं रावत।
गिरि गए मुंड रुंड धरि धावत॥
जहँ लगु धनुख बान रहि गए।
दुइदल मिलि मुठभेरा भए॥
दानव दैत दुऊ मिलि क्रोधे।
जोधा जुध जादउ हैं जोधे॥
चलै चक्र साँगै अनियारी।
गदापानि धरि छुरी कटारी॥
इत जादउ दल जोधा उमड़े।
उत दल दैत मेघ ह्वै घुमड़े॥
जादउ दैत जुद्ध भयो ऐसो।
मेघ पवन को बिग्रहु जैसो॥
भिरत अक्रूर क्रूर दल भारी।
दंतबकत की सैना हारी॥

¶ LUC om. चौपई. PUL चोपै. 1. PUL श्रंगनाद, LUC दुंदभी; PUL दुंदब, LUC बाजा. 2. LUC में (for घन), PUL मइगल, LUC गल गजा. 3. PUL है हीसो; LUC हस्तिन सहित, PUL हंकीरहि; LUC हकारहिं. 4. PUL मूढिरूढि; LUC सुंड मुंड, LUC धर. 5. LUC जहां लग धनक; PUL जह लग धनभ, PUL र (for रहि). 6. PUL दो; LUC दुहु. 7. LUC om. the whole line, PUL दौ. 8. LUC जूझि (for जुध), LUC जदौ; PUL जादो, PUL हहि; LUC श्रति, LUC जूझै. 9. PUL चलहि; PAT हले, PUL सांगे; LUC सागै, PUL अनीआरां. 10. LUC गदापानि अरि; PUL कुहक बान धरि. 11. LUC जादौ; PUL जादो; PAT जादिम, PUL उमढ़े. 12. PUL उति, LUC हुई; PUL मानो, PUL घुमढे. 13. PAT जादिम; LUC जादव; PUL दानव, LUC, PUL जुध, LUC ऐसे; PUL अइसे. 14. LUC पवन करि; PUL पवन सो, LUC विग्रह; PUL विगृह, LUC जैसे; PUL जइसे. 15. LUC अक्रूर क्रूर, PUL दंभारी. 16. PUL दंतवक्त्र की सइना; LUC दैत वकत्र की सेना.

हलमूसल बलभद्र सँभारे।
चक्र सुदरसन गिरधर धारे॥
जरासंध सिउँ हलधर जुरे।
हल मूसल बल जोधा मुरे॥
चक्रपानि जब चक्र सँभारे।
दमकि लोक दमघोस के मारे॥
खिन महि रकत कुंड भरि रह्यो।
रकत भूमि सरिता हुइ बह्यो॥१६६॥

† दोहरा

रुंड मुंड लै बहि चली, रुहिर नदी बिकरार।
सुभट तरैंडा सुंड धरि, पैरि पहूँचे पार॥१७०॥

¶ चौपई

पहर एक लगु विग्रह भयो।
अथयो सूरु उजागर गयो॥
परत साँझ हय गय कलमले।
आप आप कौं दुइ दल चले॥
ता खिन रुकमनि बोलि सुनावा।
छाडहु कुँवर कियो इन पावा॥

1. LUC बलिभद्र. 2. PUL सिवदरसन, LUC डारे. 3. LUC जुरा-सिंध, LUC सौं; PUL सों. 5. PUL चक्रपान, LUC कर (for जब). 6. PUL दमके, LUC लोग, PUL, LUC दमघोष के. 7. LUC छिन मह, PUL रक्त कुंढ, LUC रहे. 8. PAT रकति, LUC भुमि सलिता, PUL होइ. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. PUL रुंढ मुंढ, PUL लइ; LUC सब, LUC, PUL रुधर. 10. LUC सुभग, LUC तरेरा; तरैंढा, PUL सुंढ, LUC धर, PUL पइर, LUC पहुचे, PUL, PAT पारि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. LUC लग; PUL लगि, PUL विगृहु. 12. LUC सूर, PUL उजारो; LUC उजियारो, LUC भयो. 13. PUL सांझि, LUC है गज; PUL हइगइ. 14. LUC आपु आपु, LUC कह दो; PUL को दोउ. 15. LUC and PUL om. lines 15–16, PAT खिनि. 16. PAT इनि.

सकुचि रुकमु फिरि देस न आयो।
भोजनगर तिह ठउरि बसायो॥
दानउ दलु जूझौ अधिकाई।
जे बाँचे ते गए पराई॥
जो हरि हने हरिहि मिलि गए।
घाइल घालि पालकी लए॥
सोचत चले राज ससिपाला।
सुख ते भए उलटि दुख जाला॥
राजा जरासंध समझायो।
दूलहु फेरि चँदेरी आयो॥
ठाढी अटा निहारति रानी।
हरखी देखि बराति निसानी॥
रँगे रकत सिउँ चीर निहारे।
केसरि भीजि गुलालहि डारे॥
निरखि पालकी घाइल केरी।
जानी दुलहिनि सँग बहु चेरी॥
आए नगरी निकट बराती।
समझी बात जरी तब छाती॥

---

1. PUL सकुच, LUC रुकुम; PUL कुंवर, PUL देरि (for देस). 2. LUC भोगनगर; PUL भोजनगरु, LUC तिहि, PUL ठाउ; LUC ठांव. 3. PUL दोनों दल झूझो; LUC दानौ हल बूझहि, PUL अधकाई. 4. LUC भाजे (for बाँचे), PUL adds between lines 4 and 5:—जो सिसपाला सुख ते भये. 5. LUC जे, PUL हरहि. 6. PUL पालकी ले. 7. LUC राजा, PUL रिसपाला. 8. PAT मुख ते, LUC उलटि भयो. 9. PAT राजे; PUL साजे, LUC जुरासिंध; PAT जरासिंधि. 10. LUC दूलह, चदेरिहि. 11. PUL अटारि निहारे; LUC अटारी निहारत. 12. PUL हरसी, LUC निरखि बरात. 13. PUL रक्त, LUC सौं; PUL सों. 14. PUL केसर, PUL गुलाले; PAT गुलालिहि, PUL ढारे. 15. PAT निरख, PUL धाइन केरी. 16. LUC दुलहिनि; PUL दुलहनि, PAT सँगि बहु; PUL बहुसंघि, LUC तेरी. 17. LUC नगरहि, PUL, PAT निकटि. 18. LUC समुझी, जब.

जिउँ जिउँ घाइल को मुख हेरैं।
तिउँ तिउँ कर ऊँचे करि टेरैं ॥१७१॥

† दोहरा

'आलम' जे जे सुख सुमिर, हिए बढ़ीही फूल।
ताही छिनु तेई तिनै, उलटि भए दुख मूल ॥१७२॥

¶ चौपई

जीतपत्र जादउ जसु पायो।
रुकमिनि सहित क्रिस्न पुरि आयो॥
हरखे सकल द्वारिकावासी।
पीर आजु हियरे की नासी॥
देखि दरसु ससि किरन अघाए।
जरे चकोर नैन सियराए॥
स्याम सिंध सँग लहरि सुहाई।
मिले मीन दुख्व जरनि पराई॥
दरस्यो घन दामिनि लसकारा।
पपिहा दुख तजि भयो नियारा॥

---

1. LUC and PUL om. lines 1–2. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. PUL जै जै; PAT जेते, LUC सुमिरि सुख; PUL सुमरि सुख, PUL, LUC हीये; PAT हियं, PUL बढाही. 4. LUC तिहिं छिन में तेई तिनहि; PUL ताही छिन ते रीति नहि, PUL दख. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. PAT जैतपत्र; PUL जीति पुत्र, LUC जादौ; PUL जादो, LUC जस. 6. LUC रुकुमिनि; PUL रुकमनि, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC घर. 7. LUC दुवारिका० 8. LUC हीय; PUL हीये, LUC adds हरि after की. 9. LUC देखि सरद ससि किरनि; PUL देखि सु ससि के रत्रि, PUL अघाए. 10. LUC नरे (for जरे), PUL सिअराए. 11. LUC सिधि, PUL संगि लहिरि, PAT सहाई. 12. PAT जानि (for जरनि), LUC बताई (for पराई). 13. PAT दरसो; PUL दस्यो, PUL दामुनि, LUC लसिकारा. 14. PAT पपीहा दुखि तजिउँ भयो, LUC निनारा; PUL निआरा.

जिउँ तरु बिरहु सीत पत झरे।
हरि बसन्त दरसन फिरि फरे॥
तरके चख सर बिनु जो नीरा।
जलु दरसन दै नासी पीरा॥
जिउँ बिनु जीय देह मुरछाई।
आए क्रिस्न प्रानिनिधि पाई॥
दरसे स्याम जगत उजियारे।
लहे अन्ध जिउँ लोइन तारे॥
निसा वियोग पीर बहु पाई।
बिगसे कमल भोर की नाई॥
नेह नैकु नहि हिए समावै।
जैसे दीनु कोटि निधि पावै॥१७३॥

† दोहरा

प्रीतम आए को हरखु, केहूँ कह्यो न जाइ।
मन बिरमायो हेत सिउँ, हिए रहो मँडराइ॥१७४॥

¶ चौपई

घर घर आनँद की अधिकाई।
गावहिं मंगल होइ बधाई॥

---

1. LUC जौ तरवर हस्ती पगु झरै, PUL जे तर बिरह. 2. LUC करै (for फरे). 3. PUL चप्प, LUC सर जे बिनु, PAT सर बिनु जौ. 4. LUC जल, PUL दरसनु, PUL दे; LUC है. 5. PUL ज्यों बिन; LUC जौ बिनु, LUC जीव, मुरझाई. 6. PUL आइ, LUC किस्न; PUL कृष्ण. 7. LUC हरषे स्याम लगत, PUL उजीआरे. 8. PUL अं (for अन्ध), LUC ज्यौं; PUL जो. 9. PUL om. lines 9–10, LUC वियोगी पीर जनु. 10. LUC भोर कवल की, PAT न्याई. 11. LUC, PAT लहै; PUL निहे (for नेह), LUC नैक नाही; PUL नेकु नही, LUC, PUL हीये समावे. 12. LUC, PUL दीन, PUL, PAT कोट, PUL पावे. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. LUC हरख, PUL काहू कह्यो न जाहि; LUC कधौं न कौहू जाइ. 14. PUL मनु, LUC विसमावै; PUL विरमाया, PUL सों; LUC सौं, LUC, PUL हीये, PUL रह्यो समाहि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 15. PUL घरि घरि, LUC आनद. 16. LUC गावै, होहि·

द्वार द्वार बंदन की माला।
मुकता लर मनि बाँधहिं बाला॥
चन्दन म्रिगमद मिले गुलाला।
बाँट बाँट डारो तिहि काला॥
तिह छिन उपमा जाइ न कही।
खोरिन थकित त्रिवेनी रही॥
जदु कुल सनमुख लैन सिधाए।
बहु बिधि सँग बाजने बजाए॥
अमित साज गज साजि सुधंगे।
मानो घन बहु बादर रंगे॥
तुरी नचावत कुँवर सलोने।
बैस किसोर सकल दुति लोने॥
देस देस के जुरे नरेसा।
कीनो नगरी माहि प्रवेसा॥
एक नारि मिलि आरति करहीं।
लैलै आरति माथन धरहीं॥
बारि बारि इक पीवहिं पानी।
इक मोहन मुखु देखि भुलानी॥

---

1. PAT द्वारि द्वारि; LUC वार वार, LUC कै. 2. PUL बांट बांट ढांपो तिह काला, LUC जाला (for बाला). 3. PUL om. lines 3–4, LUC म्रगमद मेलि. 4. LUC वार वार विथुरही, PAT तिह. 5. LUC तिहि छबि, PUL adds की after छिन, LUC उपिमा, PUL मै कही (for जाइ न कही). 6. PAT खोरिनि; LUC खोरिर, PUL तबेनी; LUC त्रवेनी. 7. LUC लेन. 8. LUC बहु बाजन वाजने बजाये, PUL बस; PAT संगि. 9. PAT अनत (for अमित), LUC om. गज, PUL साज (for साजि). 10. LUC मानहु बहुविधि वादर रगे. 11. LUC कुवर. 12. PUL om. the whole line. 14. LUC, PUL कीन्हो, LUC नगर, PUL माह; LUC महा, LUC परवेसा. 16. PUL आरती, LUC, PUL माथे. 17. PAT कै; LUC एक, LUC पिवहि. 18. LUC मुख, PUL लोभानी.

एक धूप बहु भाँतिनि जारहिं।
एक नारि मिलि छल बल टारहिं ॥१७५॥

† दोहरा

रुकमिनि क्रिस्न जु निरखि छवि, भूलि रहीं सभुनारि।
रूपु समात न नैन मे, थकीं बिचारि बिचारि ॥१७६॥

¶ चौपई

उतरि मँदिर महि कीन प्रवेसा।
मँडहा माँड्यो मँगल भेसा॥
पूर्यो चउकु सरसु मुकताहल।
मानहु बिहसी पुहमि कुलाहल॥
तर कंचन की बाँधी चँउरी।
ऊपरि अन अन भाँतिनि खउरी॥
सुभ सिँगार दुलहनि कहँ कीने।
अंग अंग आभूखन दीने॥
दंपति बसन बनाइ सिँगारे।
मँडहा तरे आनि बैठारे॥
पूजि विनाइकु आसिख दीनी।
चहुँ दिसि बिप्प बेद धुनि कीनी॥

---

1. LUC भूप (for धूप), भातिन वारहि. 2. PUL मि (for मिलि), PAT छलि बलि, PUL, PAT धारहि. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. LUC मोहन रुकुमिनि छवि निरखि, PUL रुकमनि कृष्ण, PAT निरख, PUL भूली; PAT भूल, LUC, PUL सब. 4. LUC, PUL रूप, PUL सनात, LUC में, PUL थकी मथि चिनहि विचारि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. LUC मह, PUL, LUC कीन्ह. 6. LUC मडयो माडो. 7. PUL चौकु; LUC चौक, LUC, PUL सरस. 8. PUL, LUC मानो, LUC उगसी, PUL पुहुमि; LUC पुहुमी. 9. LUC कर कंचन, PUL, LUC चौरी. 10. PUL उपरि; LUC उपर, LUC भातिन्ह, PUL, LUC खौरी. 11. PUL, LUC सुभग, PUL दहनि कह; LUC दुहुन कर, LUC कीन्हा. 12. LUC दीन्हा. 13. PAT, PUL दंपत. 14. PUL मढहा. 15. PUL पूज, PUL, LUC विनाइक, PUL आग्या, LUC दीन्ही. 16. PUL दिस, LUC, PUL विप्र, LUC कीन्ही.

जोरी गाँठि गरगु सुखकारी।
पानि पानि महि लिए मुरारी॥
बैसंतर की सिखा जगाई।
समिध पलास बोरि घ्रित लाई॥
भाँवरि तीनि पलटि बैठारे।
चउथी दे सभ कारज सारे॥
बहुतो दान जाचिकनि पाए।
लीनो सो जो जिह मनि भाए॥
नारी मिलि मंदिर लै गई।
मुँदरी थाल खेल कहुँ दई॥
बार बार हारे जदुराई।
रुकमनि कुँवरि जीति लै जाई॥१७७॥

† दोहरा

खेलत नख प्रतिबिम्ब मै, मोहन थक्यो अनूपु।
निरख्यो लोइन मै लग्यो, भावंता को रूपु॥१७८॥

¶ चौपई

हुलसी गावहिं मंगल नारी।
मिलि मिलि देहिं भावती गारी॥

1. PAT जोरि, LUC गाठी, PUL गरग; LUC गर्ग. 2. PAT पान पान; PUL पानि पान, PUL, LUC मह लीये. 3. PUL बैसुंतर; LUC वैसंदर. 4. PAT, LUC समद, LUC घोरि, PUL घृत; LUC घ्रत. 5. PAT भांवर, LUC तीनी; PAT तीन, PAT पलट, PUL बैठाने; LUC बैठाए. 6. LUC, PUL चौथी दै सब, LUC काज, PUL साने; LUC बनाए. 7. PAT बहुते; LUC बहुतै, PUL दानु, LUC जाचकन; PUL जाजका, LUC, PUL पायो. 8. LUC लीन्हो सो जु जाहि मन, PUL आयो; LUC भायो. 9. PUL मंदरि ले गै. 10. PUL थार; LUC हाथ, PAT खिलनि लै; LUC खेल कह, PUL दै. 11. LUC हारै, PUL जदराई. 12. LUC रुकुमिनि, PUL कुंवर; PAT कुंयर, LUC जीती; PAT जीत. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 13. LUC नव (for नख), PUL प्रतविंब, LUC में, PAT, LUC अनूप. 14. LUC नैनन सों, के रूप. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 16. LUC मंगल गावहि.

बसुदेव बड़ो काजु इह कीनो ।
पूतहि पिता दूसरो दीनो ॥
बिदित नंदसुत सभ जगु गावै ।
इह सुनि लाज अधिक जिय आवै ॥
तुमरी माइ बिदित तिहुँ लोई ।
हित सभ जगत साथ लै सोई ॥
सो सो रमै जुई जिय भावै ।
तोहि कान्ह कछु लाज न आवै ॥
फूफी इहै सील ब्रतु कीनो ।
बारे रविहि अलिंगनु दीनो ॥
मन भावत कीने हितकारी ।
ब्याहीभई पाँच की नारी ॥
जो इह रीति अबहि तुम कीनी ।
सीख सुभद्रा सों पढ़ि लीनी ॥
चोरि चोरि जाको पय पीयो ।
ताही कान्ह अलिंगनु दीयो ॥

---

1. PUL बसूदे; BEN बासुदेव, LUC तुम; PUL यह, LUC कीन्हो. 2. LUC दीन्हो. 3. PUL विंदत; PAT बिदत, LUC सब. 4. PUL यह, LUC reads:—तोहि कान्ह कछु लाज न आवै. 5. LUC तुम्हारी, BEN माया, PUL विदत; PAT विदति, PUL तिह; LUC सब. 6. BEN हितु, LUC, PUL सब, PUL जगते; BEN जात, PUL सोइ. 7. PUL सोई सोई; LUC सोइ-सई, PUL रमे, LUC जोई मन; PUL जाहि जीय. 8. PAT कान, PUL कछू, LUC reads:—यह सुनि लाज अधिक जिय आवै. 9. LUC फूफू, PUL यही; LUC बड़ो, LUC सीलव्रत; BEN सीलवतु, PUL लीनो; LUC ल्यायौ. 10. BEN बारी, PAT रवहि; PUL रवीह; BEN वैस, PAT आलिंगन; LUC अलगन, LUC दीयौ; PUL दीनी. 11. LUC मनभाये कीन्हे. 12. PUL ब्याहि; PAT ब्याहे; LUC ब्याह, LUC भद्दी (for भई) पंच की. 13. PUL reads lines 13 and 14 in reverse order, PUL, LUC यह, LUC बात (for रीति), PUL अबे; PAT आहि; BEN अभै, LUC कीन्ही. 14. PAT सीखि, LUC की सुनि; सो पढ़ि, LUC लीन्ही. 15. PUL चोरी चोरी, LUC पै; PUL पइ. 16. LUC अलगन; PAT अलिंगन, BEN दीजै, PUL reads:—ताही कन लज नहीं दीयो.

सिसु हित जानि जिनहि उर लायो।
तिन कुच गहि कीनो मन भायो॥
रीति इहै तुमरे चलि आई।
बिदित बात इह बेदन गाई॥
जबहि बात अंतर नहि भाई।
तजि ब्रिज लै द्वारिका बसाई॥
गारी सुनत क्रिस्न मुसकायो।
आई लाज न सीसु उचायो॥१७६॥

† दोहरा

घूँघट बादर मै दुरी, मिलि गावहिं द्वैचारि।
म्रिगनैननि मुखचंद ते, स्रवत सुधा सी गारि॥१८०॥

¶ चौपई

खेलि जाम जुग रैनि बिहाई।
बैठे बहुरि सेज परि आई॥
लाजभरे लोइन मतवारे।
सकुचि कुँवरि नहि जोरहि तारे॥

---

1. LUC, PUL om. lines 1–2, PAT उरि. 2. PAT मनि. 3. PUL यही; LUC यहै, LUC तुम्हरे; PAT तुमरै. 4. PUL, PAT बिदत, LUC, PUL यह, PAT, BEN वेदनि. 5. LUC reads lines 5–6 after the 8th line, LUC जब यह बात हीये मह आई. 6. LUC तौ (for तजि), BEN ब्रजु; LUC ब्रज; PUL जजु. 7. LUC reads lines 7–8 in reverse order, PUL सुनतु, BEN, LUC किसन; PUL किसनि, LUC मुसकाये. 8. LUC आरत; PUL आरज (for आई), LUC, PUL सीस, LUC उठाये. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 9. LUC बाहर में, PUL दुरे; LUC दुरै, LUC दुइ; PAT द्वै; PUL द्वि. 10. LUC म्रग-नैनी; PUL मृगनैननि, PUL परि (for ते), LUC, PUL श्रवत, PUL om. सी; LUC की, PUL सिंगार; LUC धारि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 11. PAT खेल; PUL खेलत, PUL जग रैन. 12. LUC पर, PUL, LUC जाई. 14. PUL सकुच, PAT कुंवर, LUC नाही जोरै; PUL जोरे नहीं.

प्रथम समागम के उर डरई।
कांपत तन धर धर हिय करई॥
छिनु छिनु क्रिस्न कछू अनुसरई।
छुइ तन मदन मोद संचरई॥
जिउँ अलि कली गुँजार मनावै।
फूल भए रस बासहि पावै॥
बाढ्यो प्रेमु कलोल अपारा।
आप आप महि भए सँभारा॥
केलि तरंग जाइ नहि कही।
लाज सखी ओझल हुइ रही॥
फूले फूलनि अँग न समाहीं।
लोटि लपटि सिज्या पर जाहीं॥
मिले मनोरथ साँचु न मानहिं।
सावधानु सुपनो जिय जानहिं॥
निजु कै जानी नेह कहानी।
जिउँ जिउँ मिले प्रीति अधिकानी॥

---

1. PAT प्रथमि, PUL स्मागम के ढर ढरही. 2. PUL om. the whole line, LUC कंपत, PAT मन, LUC धरहर हीय. 3. LUC, PUL छिन छिन, LUC किस्न; PUL कृष्ण, LUC अनुसारा; PUL यनसरही. 4. LUC छुवतहि (for छुइ तन), LUC संचारा; PUL संतरही; PAT संकरई. 5. LUC जौ; PUL जिउ, LUC कलि, PUL गुंजारि. 6. PAT फूलि, रसि, PUL बारहि. 7. LUC बाढ़ै, PUL, LUC प्रेम, PAT अलोल. 8. LUC आपु आपु, PUL मै भइ विसमारा; LUC मह भये विसभारा. 9. PUL केल, PAT तरंगिनि, PAT om. जाइ नहि कही; LUC जाही नही कही. 10. PAT om. the whole line, PUL लाज सपी ओझले ह्वै रही. 11. PAT om. फूले फूलनि; LUC फूले फूल. 12. PUL पलोटि (for लपटि), PAT सेजा; PUL रिजा, PAT, PUL परि. 13. PUL सांच त (for साँचु न). 14. PUL, LUC सावधान, LUC सपनो, LUC, PUL जीय, LUC आनहि. 15. LUC निज करि, LUC सेह (for नेह), PUL adds यह after नेह. 16. PUL ज्यों ज्यों; LUC जौ जौ, LUC मिलहि.

प्रीतम मिले अधिक सुखु लोई।
नैननि त्रिपति न केहूँ होई ॥१८१॥

† दोहरा

प्रीतम मिलि अँग अँग की, सीराई दुखुभार।
'आलम' हित सुख हरखजल, बाढ्यो सिंधु अपार ॥१८२॥

¶ चौपई

पहिले सुनी भागवत रीति।
दसम माहिं रुकमिनि की प्रीति॥
सुनत समीर सांति मन आई।
चित्त ताल जल उतरी काई॥
जल हित उपज तरंग डुलाए।
कवि कलोल तट लै परसाए॥
बानी व्यास समझ नहिं आवै।
टीकाकार कछू समझावै॥
ऐसी आँकन की कठिनाई।
तिह भाखा किउँ जाइ बनाई॥

---

1. LUC मिलै, सुख होई. 2. LUC नैन त्रपति, PUL न कबहूँ; LUC नाही कौहू. † LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 3. PUL मिले, LUC सिजनाई; PUL सिअराई, LUC सुख; PUL दुख, LUC, PUL झारि. 4. LUC आलस हीय (for आलम हित), PUL जन (for जल), LUC बाधो, PUL रसु; LUC सिंध, LUC अपारि. ¶ LUC om. चौपई; PUL चौपै. 5. LUC पहले, PUL रीता. 6. LUC माह, LUC रुकुमिनि; PUL रुकमनि, PUL प्रीता; LUC प्रीती. 7. LUC मुख (for मन). 8. LUC छित्र ताल, PAT जड़; LUC जानौ (for जल). 9. LUC उपजि, PUL दुलाए. 11. LUC समुझि, PUL नही. 12. LUC टीको कहि जो कहा समुझावै; PUL टीका की सु कहा रमझावे. 13. PUL आंकन की यैसी; PAT ऐसी आंकिन की; LUC ऐसी आंकन कै. 14. LUC तिहि, PUL क्यो; LUC कै.

जउ कवि समझि बुद्धि अनुसरै ।
एक आँक की पोथी करै ॥
तउ कछु गति अनचीन्ही चीन्ही ।
चित मति चाह एक मै कीन्ही ॥
ताही रस रसना लै पोखी ।
सुमरि नाम रस लई सँतोखी ॥
कीने सरसु चौपई दोहा ।
करत हियो पघरो हुइ लोहा ॥
कै गुन अरथ आँक बहु मोती ।
कथा माल पोई अति जोती ॥
प्रेम भगति ताही पै भावै ।
करै कंठ जग सोभा पावै ॥
पोथी अँग मै जिउँ रही देही ।
नाम धर्‍यो तिह स्यामसनेही ॥१८३॥

---

1. LUC जो; PUL जौ, LUC समुझि, PUL, LUC बुधि, PUL अनुसरे; LUC अनुसारै. 2. LUC आक, PUL करे. 3. LUC मैं; PUL तौ, PUL कछू. 4. LUC मित; PUL मत, LUC अकेले (for एक मै), PUL कीनी. 6. LUC सुमिरि, PULसर लइ; LUC सर लय. 7. PAT कीनो; PUL कीनी; LUC कीन्हे, LUC चौपही; PUL चौपै. 8. LUC, PUL हीयो, PUL पघरयो है; LUC पघिरो हुइ. 9. BEN गनि, LUC अरथ अंक; PUL अरथ अउर; BEN आक अरथ, BEN वहि मोती. 11. LUC, PUL प्रेम भगत; BEN प्रेम रु भक्ति, LUC पर; BEN मन. 12. PUL करे, पावे. 13. PUL, LUC पोथी अंग अंग सुंदर देही. 14. PUL नामु, LUC धरो तिहि, PUL, LUC and BEN add the following after line 10:–

PUL कीनी आप समझ के कारनि । प्रगट भई जगत उधारन ॥
BEN LUC कीन्ही आपु समुझि कै कारन । परगट भई जगत निस्तारन ॥

† दोहरा

'आलम' स्याम सनेह की, मोपै कही न जाइ।
जे को याकउँ मन धरै, मनु बाँछत फलु पाइ ॥१८४॥

---

† LUC om. दोहरा; PUL दोहा. 1. PUL, LUC and BEN om. lines 1–2 and read the following:–

PUL आलम जीवहु जो पलक, इह चंचल संसार।
दै अहारु पोषह मनहिं, प्रेम भगति अधारु ॥
LUC आलम जो जीवै जगत, जात चला संसार।
दै अधार पोषहु मनहि, प्रेम भग्ति आहार ॥

BEN reads the latter line as:–

दै अधारु पोखहु मनहि, प्रेम भग्ति आधारु ॥

PAT ends with इति स्री स्यामसनेही आलम क्रिति भाखा समापतं सुभमसतु.
PUL ends with स्यामसनेही समाप्त।

खेलहि कलोल रस सदा रहे दोइ चारि।
पइ लोइन तिह गउ लगे तहा नहीं नेह चिन्हार ॥

संबत १७१७ विरषे मिती जेष्ठ वदि ७ सनिवारि पोथी लिखीसि पाहा विचिम्य संत ब्राह्मण प्रगदास सुत, वासी फतेपुरी। चतरादास ठाकुरदासा णी जी। जति जगा। स्यामसनेही लिखी। सुभ भवत कल्याणु ॥१॥ अगरे मूरते समूरतु ॥

Notes
And
Appendices.

NOTES

(The figures indicate the number of the page and the line respectively)

1.2. Of the two readings गवर (PAT) and गवरि (LUC), the latter is preferred as the feminine form गवरि (< Skt. गौरी) is correct.

1.2. Both the readings दर्पन (LUC) and दप्यन (PAT) are defective. दप्पन (< Skt. दर्पण) appears to be the original reading which became दप्यन in PAT probably through scribal error.

1.4. The meaning of the line supports the insertion of फण which is omitted in PAT and is given as फन in LUC. फन is changed into फण to conform to फणिभूखण in the same line.

1.4. The reading पर (PAT) is incorrect. Hence तर (< Skt. तरु) of LUC is preferred.

1.6. The metre does not allow the reading बिभूतनि (PAT) which contains four syllables and hence ब्रिभूति (LUC) having three syllables is accepted.

1.10. Of the two readings तमग्ग्याननता (PAT) and तमो ज्ञान तव (LUC), the former is correct. The metre and the suitability of ग्यान instead of ज्ञान also support the same reading meaning 'darkness in the form of ignorance.'

2.6. The reading निरधार (PAT) does not suit the metre which requires the lengthening of the first syllable as in निर्धार (LUC). The PAT reading is, therefore, not accepted.

2.7. निहकाम (PAT), being the derivative form, is preferred to निष्काम (LUC).

2.8. Of निसतारन (PAT) and निस्तारन (LUC), the former is preferable as conjunct consonants are generally avoided in the Avadhī dialect.

2.10. Of the two readings सिद्धि (PAT) and सिध (LUC), the former is accepted on account of the metre.

2.18. The reading निपट (PAT) is more suitable to the context than the reading निकट (LUC). निपट means 'fully' (altogether) and निकट gives the idea of nearness. With the reading निपट the two lines 17-18, give the following meaning :

"He who is described as incomprehensible by the Scriptures fully realises the pain of the afflicted."

3.4. The reading द्रिस्टि (PAT) which is a derived form is preferred to दृष्टि (LUC) which is a pure Sanskrit form.

4.7. The PAT reading भगत is rejected. The LUC reading भगति meaning 'devotion' is correct.

4.10. The reading अतिरूपवंतु (PAT), though correct, is not accepted as it does not suit the metre.

4.13. With the reading गनत ही (PAT) for गनि गनिक (LUC) this line does not give a clear meaning. Hence the LUC reading गनि गनिक is preferred. According to this reading the meaning of the two lines 13-14 will be as follows :

"As soon as he (रुक्म) was born the astrologers,

having calculated, thought that he would be a king of great authority."

5.6. Of the two readings पढ़ायो (LUC) and पठायो (PAT), the latter is preferred. With the reading पठायो the meaning of the line will be : "Another son was sent to school" which is more suited to the context.

5.8. PAT has throughout adopted मंदर for मंदिर which is pure Skt.

5.12. PAT बुधि 'intellect' does not give relevant sense and is, therefore, rejected in favour of बुध (LUC) meaning 'clever'.

5.18-19. The readings चाली and अउतारी betray the poets' anxiety to rhyme at the cost of grammar.

6.11. The reading संपट (PAT), being incorrect, is not accepted. The reading संपुट (LUC) is preferred.

6.17. The reading लछन (LUC) is not allowed by the metre. The PAT reading लच्छिन (< Skt. लक्षण) is, therefore, accepted.

7.5. पिता is contracted to पित in PAT to suit the metre.

7.14. Of the two readings मरन (LUC) and चरन (PAT), the former is obviously irrelevant.

7.15. PAT reads सिद्ध वै for सिधि अब (LUC). The former reading does not give a clear meaning. The latter is, therefore, preferred but सिधि is changed into सिद्धि on account of the metre which requires the lengthening of the first syllable.

17.7. The PAT reading ह्रै for हुइ (LUC) is incorrect. It is a probably a scribal mistake. The correct reading ह्वै is, therefore, restored.

7.18. Of the two readings सारस्वती (PAT) and सारसुती (LUC), the former reading is not allowed by the metre. The latter is, therefore, preferred. The meaning in both the cases is "the goddess of speech."

8.1. The PAT reading कुल अग्या जु देउ प्रति पूजा does not give any clear meaning suited to the context. Hence the LUC reading कुल कल्यान देव पतिपूजा is accepted. According to this reading the two lines 1-2 give the following clear meaning :

(The king said to the family priest) "Do not teach (her) other books except those the study of which promotes the welfare of the family and the worship of gods and husband."

8.6. The reading हस्तचरित्र (LUC) for हस्तचित्र (PAT) is not correct. The metre, too, supports the latter reading.

8.10. Both the readings अछुरु (PAT) and अछुर (LUC) are not allowed by the metre. The PAT reading अछुरु is changed to अच्छुरु (< Skt. अक्षर) to conform to the metre.

8.14. The PAT reading पोथीयां is incorrect and not supported by the metre. LUC also gives the incorrect reading पाथो. The correct form पोथियां is, therefore, restored.

8.16 The PAT reading दीया is more suitable than सीया (LUC). The meaning given by सीया is

understood from the context itself. With the PAT reading दीया (< Skt. दीप) the meaning of the three lines 15-17 will be : "Whatever was learnt by the daughter of Janaka, the wife of Rāma, the light of the house of Daśaratha, that knowledge in its entirety was imparted to Rukminī by the *Brahmin*"

9.5. The PAT reading सावन की for सावकी (LUC) is incorrect. सावन की may mean 'of the month श्रावण,' but it cannot be construed with मोर which is masculine. This reading is also not supported by the metre. The LUC reading सावकी (< Skt. शावकी) meaning 'a young pea-hen,' however, appears to be correct and original. With the reading सावकी the two lines 5-6 give the following correct and suitable meaning : "In the thick forest the young pea-hen cooed ; the voice of these two (Rukminī and young pea-hen) sounded identical."

9.19. The PAT reading कलिबरतिका for कुलवर्तिका (LUC) is incorrect and does not give a meaning suitable to the context. The latter reading is, therefore accepted.

10.2. नपुनि (LUC) and निपन (PAT) are both incorrect and therefore unacceptable.

10.7. चेकट (PAT) is incorrect and therefore rejected in favour of चेटक (LUC).

10.13. Of the two readings हंसि (LUC) and हठि (PAT), the latter is more suitable and significant. हंसि means 'laughing' while हठि means 'forcibly' or 'with obstinacy.' The latter meaning is more

appropriate. With this reading the meaning of the whole line will be : "He (रुक्म) used to promote hatred with some people through his obstinacy."

10.15. The reading बरबस्सु (PAT) is not allowed by the metre. The LUC reading बरबस is, therefore, preferred.

10.20. PAT reads संतति for संतत (LUC). संतति may be a pure Skt. form or it may be a modified form of संतत meaning 'always'. PAT generally adds इ or उ at the end of a word ending in अ.

11.3. Of the two readings मोख (PAT) and मोछ (LUC), the former is preferred as it rhymes with the last word दोख of the following line. Both the readings can be derived from Skt. मोक्ष.

11.4. The PAT reading आगै for आग्या (< Skt. आज्ञा) is incorrect. आगै does not give any clear meaning, while आग्या meaning 'order' is quite suitable. With the latter reading the whole stanza gives the the following meaning: "Father is Prayāga and mother is Kaśī. By serving them one attains salvation. Their order is a bath and their sight is water which destroys evil every moment."

11.10. The reading कुँवर (PAT), masc., is incorrect and therefore rejected in favour of कुँवरी (< Skt. कुमारी). PAT often repeats this faulty reading, *e.g.*, 12.20, 12.21, 13.10, 13.14, 14.13, etc.

11.12. The reading भगत (PAT) in the sense of

devotion (<Skt. भक्ति) is incorrect; it is, therefore, changed into भगति.

11.20. The reading सरस्वती (PAT) yields one syllabic instant extra ; hence सरस्वति is adopted.

12.4. The PAT reading सहचर (masc.) does not suit the context which needs a fem. form. सहचरि is adopted in preference to सहचरी for metre's sake.

12.11. The reading के (PAT) is replaced by जे on account of ते in *l.* 12. The reading आही (PAT) is singular while the context needs a plural form ; hence, आहीं.

14.9. The LUC reading मदन 'Cupid' does not suit the context. PAT reads मंदिल which can be derived from Skt. मंदिर. But in that case its meaning does not suit the context. It appears that it is actually another form of मंदल meaning 'a musical instrument'. *Cf.* "जैसे मंदला तुमहि बजावा। तैसे नाचत मैं दुख पावा॥" कबीर 113. PAT generally inserts इ within a word or at the end of it. मंदल meaning 'a musical instrument' does suit the context. The word in this very sense is repeated in 45.5.

16.13. The PAT reading सखियनि does not suit the metre ; the LUC reading सखिन is, therefore, preferred.

17.4. The reading आरोग्य (LUC) is not allowed by the metre ; the PAT reading अरोग is, hence, accepted.

17.5. The PAT reading तोरि for तोर (LUC) is incorrect, as it is feminine and not suited to the context which needs a masc. form. This may be due to the general tendency of PAT towards insertion of इ at the end of a word.

17.6. The PAT reading कीने for दीन्हे (LUC) does not suit the context. The LUC reading is, therefore, preferred. With this reading the whole line gives the following clear meaning: "The Creator has given him great fortune."

17.15. The PAT reading सुनिमानी, being incorrect, is not accepted. The reading मनमानी (LUC) is correct.

17.16. LUC reads an extra *ardhāli*—गवरि पूजि etc. after line 16. This is a clear case of interpolation. It disturbs the order of 11 *ardhālis* forming a unit, and merely repeats the idea of the two subsequent lines.

19.6. The reading जसमत गउरा (PAT) for जसुमति कोरा (LUC) is incorrect. The latter meaning 'the lap of Yaśodā (< Skt. यशोमती-क्रोड)', is acceptable.

19.9. The PAT reading बक्रदेनु for वक धेनुक (LUC), being incorrect, is not accepted.

19.11. The LUC reading कंस चूरि धरि, being correct, is preferred to कीसु चूर धर (PAT).

19.13. PAT and LUC both read मातपिता which is made मातापिता on account of metre.

19.17. PAT reads बेद न for मेदिनी (LUC). The LUC reading मेदिनी meaning 'earth' is preferred as it is more suitable to the context. With the read-

ing बेद न, the meaning of the whole line may be: "Knowing that the Vedas may not go underground." With the reading मेदिनी, the meaning will be: "Knowing that the earth is going to the nether region." The final ई in मेदिनी is, however, shortened to suit the metre. For the idea compare

तुम ही धर कच्छप वेष धरो जू । तुम मीन ह्वै बेदन को उधरो जू ।।
राम च०. पू०, 20, 20.

20.1. The PAT reading कोमिल for कोल (LUC) is incorrect. After the mention of मीन and कूर्म, the suitability of कोल is obvious.

20.3. Of the reading भगि (PAT) and लागी (LUC), the latter is preferred. With the word भगत the reading लगि is correct. भगि does not suit the context.

20.7. The PAT reading स्रिस्ट is incorrect. It is changed into स्रिस्टि (< Skt. सृष्टि) to conform it to such forms as द्रिस्टि and त्रिस्टि occurring in the text. The readings सिधारी (PAT) and सघाती (LUC), both, are incorrect. The PUL reading सिंघारी meaning 'destroyed' is, therefore, adopted.

20.8. PAT reads भई which is not permitted by the metre. It is, therefore, changed into भइ.

22.11. The PAT reading निकनि for कनिक (PUL) is incorrect. The latter is, therefore, preferred.

22.12. The PAT reading कबानी for बिनानी (LUC, PUL) does not give a clear meaning. बिनानी appears to be the correct form derived from Skt. विज्ञानी meaning 'clever' or 'wise'.

With this reading the two lines 11—12 give the following correct meaning :

"With the pollen-dust of flowers and the water of gold the wise Creator fashioned (you) carefully."

The word विनानी in the same sense is repeated in 122.2 It is also so used in MK by the author. *Cf.*

नृत्य चतुर्गन वेद विनानी ।
केलि चातुरी उकति कहानी ॥

MK., p. 208.

23.4. The PAT reading मइकाई may mean 'emitted fragrance', but this meaning does not suit the context. The LUC and PUL reading महि आई is, therefore, accepted. With this reading the meaning of the whole line will be : "The image of Śyāma appeared in her heart."

23.8. The reading भगत in the sense of devotion (भक्ति), being incorrect, the correct form भगति is restored. LUC and PUL both read भक्ति which being pure Sanskrit is not preferred.

23.10. The PAT reading संध and LUC सिंध, being incorrect, the correct reading संधि (PUL) is accepted.

24.2. Both the readings मलन (PAT) and मिलनि (LUC) are incorrect; the PUL reading मलिन is, therefore, accepted.

26.6. LUC and PAT read पावै for गावै (PUL). पावै means 'obtained', but this meaning does not suit the context. With the reading गावै the whole line means : "She whose gait was like

that of an elephant, used to describe the virtues of the 'Savior of the elephant.' The use of गावै with गजमोचन गुन गजगति is, moreover, significant and gives a variety of अनुप्रास (alliteration).

27.2. The PAT reading जन in the sense of 'do not' being incorrect, the correct form जनि is restored.

29.6. The PAT reading भगत in the sense of 'devotion', being incorrect, the correct form भगति (< Skt. भक्ति) is restored.

29.14. PAT and LUC read जुग for जगि (PUL). The former reading जुग (<Skt. युग) does not give the correct meaning suited to the context. The PUL reading जगि (<Skt. जगत्) meaning 'world' is, therefore, accepted.

30.3. PAT reads ते for जे (LUC) which is incorrect. The reading जे (LUC) is correct, being related to सो in the following line.

31.10. The use of चन्द्रामा is not correct. चन्द्रमा is changed to चन्द्रामा simply to conform it to रामा in the previous line.

32.3. PAT, PUL and LUC all read देव for देवि. The reading does not suit the context. It is, therefore, changed into देवि, meaning 'goddess.'

32.4. The PAT reading मोहि is incorrect. It cannot be construed with कोख (< Skt. कुक्षि). The PUL and LUC reading मोरी is, therefore, accepted.

33.1. The PAT reading जोली does not give a clear meaning. The PUL reading ओली, meaning 'skirt', is, therefore, preferred. जोली may be a

modified form of झोली, or it may be a mere instance of mistranscription. The LUC reading बोली is also unsuitable. It is also improbable on account of its repetition in the following line.

33.9. The reading जतन निज जंत्र (PAT) interferes with the metre.

33.10. The reading परसी अहि (PAT) does not suit the metre.

34.4. The reading कुंयर (PAT) for कुँवरि is incorrect and, therefore, not accepted.

35.2. The PAT reading सेवकाइ for सभ कोई (PUL) and सब कोई (LUC) being incorrect is not acceptable.

LUC कुड़वाई, PUL कुड़माई and PAT कुटबाई—all these readings are derived from Skt. कुटुम्ब meaning 'family.' कुड़माई is used in Punjabi in the sense of 'betrothal'. Here the word is used in this very sense. Literally it means 'family relationship'. The Punjabi word कुड़म is also derived from Skt. कुटुम्ब.

35.11. Both the readings भलो हुवा (PAT) and भली भई (PUL) are not permitted by the metre. The reading भल हुव is, therefore, accepted.

36.5. The reading नत (PAT) and तिन्ह (PUL) are incorrect. The LUC reading नित (< Skt. नित्य) is correct and, therefore, preferred.

36.15. The PAT reading मारग does not suit the metre. मग (LUC) is, therefore, accepted.

37.13. The PAT reading घुँवा is probably a scribal mistake. The correct reading is कुँवा (< Skt.

कूप) which suits the context. With this reading the whole line gives the following correct meaning :

"You are not ashamed. Why do'nt you fall into a well ?"

39.6. PAT reads हथजोरा for गठजोरा (LUC, PUL). Both the readings are correct and mean 'a relationship'. हथजोरा gives the same sense in which the Skt. पाणिग्रहण is used. गठजोरा may be derived from Skt. ग्रन्थियोग. It refers to the ग्रन्थिबन्धन ceremony in marriage.

40.2. The readings दस दौख (PAT) and दमदोष (LUC) are incorrect, the correct reading दमघोष is, therefore, restored.

40.11. The reading बुधि (PAT, PUL) in the sense of 'wisdom' (<Skt. बुद्धि) is not suitable. The LUC reading बुध meaning 'wise' is, therefore, accepted. जोइसी (PAT, LUC), and जोसी (PUL) both are derived from Skt. ज्योतिषी meaning 'astrologer.'

41.12. उगत (PAT) does not suit the metre and is, therefore, not accepted.

42.2. Both the readings राहबर (PAT) and राइघर (PUL) are incorrect and do not suit the context. The LUC reading राहघर is, therefore, accepted. With this reading the whole stanza consisting of lines 1-2 gives the following clear meaning :—

"A gem shines on the crest of a king and the crescent moon on the head of Lord Śiva. They do not look nice in the hands of a monkey and in the house of राहु (respectively)".

42.12. The reading जुग (PAT, LUC) being incorrect, the PUL reading जग meaning 'world' is accepted.

44.1. PAT has modified द्विजराज as द्विजराजु to conform it to इह काजु at the end of the following line.

44.2. The reading समुद्र (PAT), although correct, is not accepted on account of metre. The reading समुद (PUL, LUC) meaning 'ocean' is, therefore, selected.

45.5. मंदल means 'a musical instrument'. The word occurs in this very sense in 14.9 also. It is to be distinguished from मंदर (<Skt. मंदिर) meaning 'a temple' or 'a house.'

49.7. The PAT reading रविवंदन is correct and suits the context. It means "in order to pay homage to the sun." The PUL reading ससिबदन may mean 'one having a moon-like face', or it may be an incorrect form of ससिवंदन meaning 'to pay homage to the moon.' The LUC reading रविनंदनि meaning 'the daughter of the sun' does not suit the context.

50.9. The PAT reading सुनीअहि is not permitted by the metre. It is, therefore, changed into सुनि अहि.

50.10. The reading कोट (PAT, PUL) is incorrect. The LUC reading कोटि is, therefore, accepted. The word कोट means 'a fort,' or 'a palace' and does not suit the context. कोटि, on the other hand, in the sense of 'a crore', is quite appropriate here.

50.13. The PAT reading क्रिस्न कर is not allowed by

the metre ; क्रिस्नहि (PAT, LUC) is, therefore, accepted.

51.1. The PAT reading बिध in the sense of 'Creator' or 'fate' is not apt ; the LUC, PUL reading बिधि is, therefore, accepted.

51.10. The reading भूलि (PAT) being incorrect, the correct reading मूल (LUC, PUL) is restored.

52.1-2. These two lines are missing in PUL. In their absence the order of 11 *ardhalis* is disturbed. They are, therefore, part of the original text.

52.3. The readings परहस (PAT) and परिहस (LUC, PUL) are derived from Skt. परिहास. The reading परिहस is preferred to परहस which does not give clear meaning.

52.8. The word जौन्ह (< Skt. ज्योत्स्ना) in the sense of 'moon-light' is quite suitable here. The other two readings जोन (LUC) and जो नहीं (PUL) do not give exact meaning. जोन may be another form of जौन्ह (< Skt. ज्योत्स्ना) or it may be taken as जो न meaning 'if not.' The reading जौन्ह (PAT) is correct. With this reading the two lines 17-18 of the stanza give the following clear meaning :

"The कुमुद flower smiles with the rise of the moon. It blooms in the moon-light but fades in the sun."

53.5. The PAT reading हम हाथा meaning 'at our hands' does not suit the context. The reading जम हाथा (LUC, PUL) is correct. It means 'at the hands of the god of death'. With this

reading, the meaning of the two lines 5-6 will be :

"If you give up your life at the hands of death, we shall all die with you."

55.2. Of the two readings जनुनाथा (PAT) and जदुनाथा (LUC), the latter is preferred. The word जदुनाथ is repeated in many places in PAT itself. जनुनाथा may mean 'the lord of the people', but जदुनाथा appears to be the original reading. It became जनुनाथा probably through a scribal mistake.

55.6. Of the two readings बसुदे (PAT) and बसुदेव (LUC), the former is preferred on account of metre. The latter reading, though correct, does not suit the metre.

55.12. LUC reads two *ardhalis* (असरन सरन० and गुनमाला भूषन०) after the 16th line. They are not to be found in other Mss. Obviously they are later additions. By them the order of 11 *ardhālis* forming a unit is disturbed.

56.2. The reading मोच (PAT, LUC) in the sense 'having protected or saved' is incorrect. The LUC reading मोचि is, therefore, accepted.

56.9. The PAT reading इह छेम is not permitted by the metre. इह is changed into इहाँ, as this form is used in the 7th line of the stanza as well.

57.14. The PAT reading प्रन is incorrect. The PUL, LUC reading प्रान is, therefore, accepted. प्रन may mean 'vow' (<Skt. प्रण), but it does not suit the context.

58.11. The PAT reading बिरहै for बिसहर (LUC) does not suit here. बिसहर is derived from Skt. विषधर meaning 'a snake.' The use of गरड़ (< Skt. गारुड़ि) in the following line also supports the reading बिसहर.

60.6. The reading बढ़ावहु (PAT) for मिटावहु (PUL) and बिहावहु (LUC) does not suit the context. The PUL reading मिटावहु is, therefore accepted.

61.4. LUC reads an extra *ardhāli* after this line—जनसंकट इन्द्रीवर लोचन॰. It disturbs the order of 11 *ardhālis* forming one unit. The meaning of the *ardhāli* also rules out the possibility of its genuineness. It is most probably a later addition.

61.8. Of the two readings कालम (PAT) and कलम (LUC), the former is correct. कलम means 'pen', and this meaning does not suit the context. कालम is derived from Skt. कालिमा meaning 'blackness'. कालिमा is modified as कालम to suit the metre. Thus the meaning of the whole line will be :

"Ālam says that the letters are black not due to the black-colour of the ink but due to the pain of separation."

In the sense of 'pen', the word लेखनि (Skt. लेखनी) is preferred to कलम by the poet. *Cf*. 63.4.

63.4. The PAT reading बार in the sense of वारि (water) is incorrect. The PUL reading बारि is, therefore, accepted. Similarly, of the two readings लेखन (PAT) and लेखनि (PUL), the latter is preferred.

64.11-12. This *ardhāli* (चरनकमल०) is to be found in PAT alone. It disturbs the order of the unit, but it is difficult to say how far it is a case of later addition.

65.6. The PAT reading सुखदाइक, although correct, does not conform to गुसाइनि at the end of the preceding line. The LUC and PUL reading सुखदाइनि is, therefore, accepted.

65.12. The PAT reading दुहु जुगि चहु जग is not correct. It should be दुहु जग चहु जुग meaning "the two worlds and the four ages."

66.5-6. The PAT reading सुनावहु for पसारहु (LUC, PUL) does not conform to सँचारहु (LUC, PUL) in the following line. It's meaning also is not so suitable as that of पसारहु. But it is correct and therefore accepted. The reading सँचावहु, (PAT) is not correct; it is there simply to conform to the reading सुनावहु at the end of the preceding line.

66.8. LUC and PUL add an *ardhāli* (आनँद कथा०) after line 8. It is apparently a case of later addition. The order of 11 *ardhālis* to a unit is disturbed. The meaning of the *ardhāli* also does not suit the context. In a letter of sorrow (दुखपाती), the tale of joy is out of place.

66.9. The PAT reading सत्रु and PUL reading सुत, both are incorrect. सत्रु is the sense of 'enemy' (Skt. शत्रु), and सुत in the sense of 'son' do not suit the context. The LUC reading सत (< Skt. सत्य) is, therefore, accepted.

67.9. The LUC and PUL reading पवनपूत in the sense of 'the son of the wind' is

more significant than the PAT reading पवनरूप. The mention of सीता and राम in the following line supports the reading पवनपूत meaning हनुमान्. With the reading पवनपूत the meaning of lines 3—4 will be :

"O learned one, you run like Hanumat (the son of the wind) and bring Rāma for the sake of Sītā."

69.3. The PAT reading पुर पुर is not correct. The LUC reading पुर पर is, therefore, accepted. The reading पुर पुर means, 'every city', but this meaning is not suitable here. The reading पुर पर meaning 'on the city' is quite appropriate. The meaning of the whole line will be : "Having risen, the moon stood over the city."

70.4. The PAT reading बिंद meaning समूह is not suitable. The PUL and LUC reading बूँद is, therefore, preferred.

70.7. The PAT reading छत्रु for पुत्र (LUC, PUL) is incorrect. The latter reading is, therefore, selected. With the reading पुत्र the meaning of lines 7—8 will be :

" The father (ocean) was highly pleased to see his son (moon). In the form of rising waves he extended his arms as it were (to welcome him).

70.9. The PAT reading आयो for गयो (PUL) and गएउ (LUC) is not accepted. It is due to this reading that PAT has changed भयो (PUL) into भायो in the following line. भायो in the

sense of 'became' is incorrect. The meaning of भायो may be 'looked nice', but this meaning does not suit the context. Hence the readings गयो and भयो of PUL are accepted.

70.12. The reading सकुचि (PAT) is incorrect and not allowed by the metre. The reading सकुची (LUC, PUL) is, therefore, accepted.

70.13. The PAT reading बनक (< Skt. वणिक्) being incorrect, the other reading बनिक (PUL, LUC) is accepted.

71.1. The PAT reading उदनल and नलसारा—both being incorrect, the correct readings उद्वत and भिनुसारा are restored. Thus the meaning of the whole line will be: "It became morning (भिनुसारा) with the rising of the sun."

71.7. The PAT reading दमिनि being incorrect, the form दामुनि (< Skt. दामिनी) is accepted. The latter reading is quite in agreement with the metre as well.

71.8. The PAT reading बिप for विप्र (PUL, LUC), though incorrect, agrees with the metre. In other places PAT very often gives the forms like बिप्पु and बिप्प which are correct from the linguistic point of view.

71.13. the reading फटक (< Skt. स्फटिक) of PAT being incorrect, the LUC reading फटिक is accepted.

72.4. The PAT reading पंख in the sense of पक्षी (bird) is not correct. The other reading पंखी (PUL, LUC) is, therefore, accepted. The final vowel is, however, shortened to conform the reading to the metre.

73.1. PAT reads सो ससि for जो ससि (LUC). सो presupposes the use of जो which is not found in the preceding line. जो ससि is, therefore, the correct reading. The idea of सो is understood in the following line. कहीयतु being defective from view-point of metre is modified to कहियतु.

73.14. LUC reads two more *ardhalis* after this line (जे नग नखत०; त्रभुवन पर०). They are not found in PAT and PUL. As they disturb the order of the unit and repeat the meanings of the other lines of the stanza, they appear to be later additions.

78.11. The PAT reading विसिरहि for विसहर (LUC) is incorrect. The reading विसहर (< Skt. विषधर) meaning "a snake" is quite suitable here.

78.13. In PAT the use of रकत after तरकत is superfluous and not permitted by the metre. It is probably a scribal mistake.

79.8. The reading अछर (< Skt. अक्षर) is found in all the three Mss. It is changed to अच्छर on account of metre. This form is used in PAT in the following stanza (79.12) as well.

79.9-10. These two lines are found in all the three Mss. They disturb the order of the unit and it is difficult to say whether they are later additions or a part of the original text.

79.9. The PAT reading चेरी for चीरी (LUC, PUL) is incorrect. चेरी meaning 'a maid-servant' is not required by the context. चीरी in the sense of 'a letter' is quite suitable.

80.1. Of the two readings दुसास (PAT) and उसास (LUC, PUL), the latter is preferred. It is derived from Skt. उच्छ्वास. दुसास is probably a scribal mistake.

80.11. PAT reads बरिकै for बालक (LUC, PUL). The latter reading is more suitable to the context. बरि कै in the sense of प्रज्वलित होकर is not so significant. बालक, on the other hand, is quite suitable and can be construed with तरुन (< Skt. तरुण) in the following line. With the reading बालक, the two lines 11-12 give the following correct meaning :

"Separation as a baby tormented the body of Rukmini and now having become a (full-fledged) youth it wounded the body of Krsna."

81.2. LUC reads one more *ardhāli* (एकहि बान०) after this line. It appears to be a later addition as it disturbs the order of the unit and repeats the idea already expressed.

81.3. The PAT reading पाती meaning 'a letter' does not suit the context. The other reading प्रीति (LUC) is, therefore, accepted. जु (PAT) for जो (LUC) is defective from metrical point of view and has, therefore, been discarded.

81.4. LUC adds an *ardhāli* (दुइज प्रीति०) after this line. It disturbs the order of the unit and does not suit the context. It appears to be an interpolation.

82.1-2 The PAT reading पानी for पाती (LUC, PUL) is incorrect. The reading पाती is, therefore, accepted. The PAT reading बरसत असुवन बाचि सुखाई in line 2 does not give a

clear and suitable meaning. The LUC reading परसत, अँगुरिन आँच सुखाई is, therefore, selected. It gives the correct meaning : "On touching, the heat of fingers made it dry."

83.1-2. The PAT readings दोइनि and चोइनि being incorrect, their correct forms धोइनि and जोइनि are restored.

83.8. The PAT reading सलित (< Skt. सरित) meaning 'a river' does not suit the context. The LUC reading सलिल meaning 'water' agrees with सरवरु in the same line. It is, therefore, preferred.

84.5. The PAT reading दीप meaning 'a lamp' does not suit the context which requires a verb. The PUL reading दिपहि meaning 'to shine' is, therefore, accepted.

84.8. The PAT reading जिह for दिज (PUL) is incorrect. With the latter reading the whole line gives the following clear meaning :
"On arrival, the poor Brahman beheld that face."

84.16. The PAT reading देखि, though not very apt as compared with देह (LUC), has been retained, for it is otherwise correct.

85.1. Both the readings कारन (PAT) and कृष्ण (PUL) being incorrect, the LUC reading करुना (< Skt. करुणा) is accepted.

85.3. The vowel in ब्रमन (PAT) has been lengthened to suit the metre.

87.12. The PAT reading जोवहि being incorrect, the PUL reading जैहैं meaning 'will go' is preferred.

89.6. The PAT reading निन्यारे meaning 'extraordinary' is not suitable. The other reading निहारे (LUC, PUL) meaning 'saw' is, therefore, accepted.

90.9-10. The PAT reading दमावत being incorrect, the LUC reading दमावति (< Skt. दमयन्ती) is preferred. Similarly the PAT reading हरवत for PUL हनवंतु (< Skt. हनुमत्) is incorrect, and is, therefore, rejected.

91.2. The reading सोना (PUL), though correct, is not permitted by the metre. The LUC and PAT, reading सोन (< Skt. सुवर्ण) is, therefore accepted.

92.3 The reading बरि (PAT, LUC) is incorrect. The PUL reading बारि meaning 'water' is, therefore, accepted. बरि may mean 'burning' but the sense is not required by the context.

92.6. PAT reads सखियनि for खसिया (LUC) and रखीयन (PUL). With the reading सखियनि the meaning of the whole line will be: "The female friends of Rukminī at once reported to her the arrival of the Brahman at the door." The LUC reading खसिया means 'an eunuch'. (हिजड़ा). *Cf.* 'नर नारी के स्वाद को खसी नहीं पहिचाना' Kabir 85. It was a general practice in ancient times to appoint eunuchs in harems. Several Sanskrit poets have referred to the fact in their works. The PUL reading रखीयन may be a defective form of सखीयन or it may be in the sense of door-keepers (< Skt. रक्षक).

92.8. The PAT reading अगनी being incorrect the other reading अगमनी (LUC, PUL) is accepted.

93.7. The reading सोर (PAT) being incorrect the LUC, PUL reading सोक (< Skt. शोक) is preferred.

93.10. The PAT reading बिरह सनेह नीर is incorrect. It does not give any clear meaning. The LUC reading बरसन नेह नीर is, therefore, accepted. The words सघन स्यामघन in the preceding line can not be construed with the PAT reading.

93.18. PUL नाम for भान does not give any clear sense. भान is supported by प्रकासिहै.

94.5. The PAT reading महि does not suit the metre. The PUL reading माहि, is therefore, adopted.

94.12. The PAT reading पूरन is incorrect and does not suit the context. The LUC reading पुरइनि meaning कमलिनी is preferred. With this reading the meaning of lines 11-12 will be: "At the appearance of the sun the lotus flower shone as if कमलिनी secured adequate water."

95.1. The PAT reading सरमाई meaning 'felt ashamed' does not suit the context. The PUL reading सरसाई meaning 'became happy' is, therefore, accepted.

95.12. Both the readings दास (PAT) and दासु (PUL) being in masculine cannot be construed with तिहारी. The LUC reading दासि being feminine, is, therefore, preferred.

96.8. The PAT reading तुम उर उनत ह्वै does not give a clear meaning. The LUC reading तुमहि

उरिन हूई being correct, is preferred. Thus the meaning of the whole line will be: "Even then having paid your debt one cannot live."

96.12. The PAT reading बिधि does not give the required sense; the other reading सिधि (LUC, PUL) is, therefore, accepted.

97.5. The PAT reading चपल being incorrect and not permitted by the metre, the other reading चपला (LUC, PUL) meaning 'lightning' is accepted.

99.5. The order of जोग भोग in PAT in defective. It cannot suit संजोगी and जोगी in the following line. The order is, therefore, reversed.

101.13. The PAT reading चरन and LUC परन both are incorrect. The PUL reading बरनु (< Skt. वर्ण) meaning 'colour' is, therefore, preferred.

103.5. The PAT reading रथ थररहि for थरथराहिं (PUL) is incorrect. In this stanza there is a description of the swiftness of the horses. According to the PAT reading रथ in singular number cannot be construed with थिरुना रहहिं and फरकहिं in the plural in the same line. From the context it appears that there was only one रथ. The PUL reading थरथराहिं, however, gives clear meaning and can be construed with तुरंग in the following line.

103.11. The PAT reading अक बलोक is defective and does not give any clear meaning. In PUL and LUC also a correct and a clear reading is not found. Probably the original reading was something like अस बिलोक or अकथ लोक which

have been reduced to above by a mistake on the part of the copyist.

104.9. The PAT reading सुरतहि being incorrect does not give the required sense. The other reading सुत हित (PUL, LUC), is, therefore, preferred. With this reading the meaning of the whole line will be: '(On seeing कृष्ण) the mother forgets the loving care of her sons.'

106.8. The PAT reading कामिरूप for कामरूप (LUC, PUL) may be derived from Skt. कामिन् or काम. The reading in the sense of काम (Cupid) suits the context. The general tendency of inserting इ at the end of a word ending in अ is responsible for the reading कामि in PAT.

106.10. The PAT reading कलहरूप for कालिरूप (PUL) and कालरूप (LUC) is retained, although other readings too, are equally suitable so far as their meaning is concerned. कलह, कालि and काल mean strife, the goddess Kālī and the god of death respectively.

107.3. The PAT reading पुरब for पूरब (LUC, PUL), though incorrect, is accepted on account of metre.

107.9. The PAT reading बहुत is not suitable. The LUC reading बहत in the sense of 'blows' is, therefore preferred.

110.2. The PAT reading खरभर is accepted. It means खलभली 'restlessness'. Thus the meaning of the whole line will be: 'Restlessness came upon the hearts of all.' The other reading in PUL is खरहरा which means 'an iron-brush'

generally used for brushing horses. This reading also suits the context, but it is difficult to say which of the two readings is original.

110.4. The PAT reading गहिबर being incorrect, the PUL reading गैबर (< Skt. गजवर) meaning 'an elephant' is accepted.

110.5. The reading तरतार (PAT) is incorrect and does not give the required sense. The PUL reading करवारि (<Skt. करवाल) meaning 'a sword' is preferred. It is, however, modified to करवार to make it rhyme with मूसलधार in the following line. Thus the meaning of the whole line will be: 'Like a cloud there appeared घनश्याम, equipped with lightning-sword.'

114.9. The PAT reading उठहु does not suit the context. The other reading उठो (LUC, PUL) in the sense of 'stood up' (उठा) is accepted.

118.6. The PAT reading काढे being incorrect, the PUL reading बाढे is adopted.

118.7. The PAT readings कुंयर for कुंवरि (PUL, LUC) and देव for देवी (PUL, LUC) are incorrect. Their feminine forms, are required here. The reading देवी is, however, changed into देवि on account of metre. The meaning of the whole line is: 'The princess got down at the door of (the temple of) the goddess.'

119.6. The PAT reading सायर (< Skt. सागर) does not suit here. The LUC and PUL reading साँई (< Skt. स्वामी) is, therefore, preferred.

121.12. The PAT reading उपरि is not permitted by the metre. The PUL reading ऊपरि is, therefore, adopted.

122.2. The reading बिनानी also occurs in 22.12 above.

123.6. The PAT reading उठो being in singular number, the other reading उठे in the plural is accepted.

124.9. The PAT reading सरस्वती, though correct, is not allowed by the metre. The final vowel is, therefore, shortened.

124.10 PUL aud LUC read ज्वालामुखी which is correct. The reading is, however, not permitted by the metre. The reading ज्वालमुखी is, therefore, retained.

125.7. The reading सनमुख के सनमुख (PAT, LUC) is incorrect. The repetition of the word सनमुख is without significance. The correct reading is supplied by PUL which reads ससिमुख for the first सनमुख. Thus the meaning of the line will be : "People bowed down before her who possessed a moon-like face." ससिमुख is probably contracted from ससीमुखी.

126.2. The reading अनूपम (PAT, PUL) is not allowed by the metre. LUC reading अनुपम is, therefore, preferred.

126.3. Both the readings बालिक (PUL) and बरका (PAT) are confusing and do not give the required meaning. The LUC reading बारक in the sense of एक बार is quite suitable.

126.10. The PAT reading समाउ does not give the required sense. The other reading लजाउँ

(LUC, PUL) is, therefore, accepted. The meaning 'to be ashamed of' is quite suitable here.

130.1. The PAT reading स्यामघन does not give the required sense. The LUC reading स्याम तन is, therefore, preferred. तन goes with स्याम and गउरि both.

130.3. The PAT reading सभनि meaning 'all' is incorrect. The verb सँभारे must have some object which is supplied by the LUC and PUL reading बसन.

130.11. The PAT reading लै not being permitted by the metre, is changed into लिए. The other readings लाए (PUL) and लीये (LUC), too, do not suit the metre.

131.12. All the three readings बंचीयो (PAT), बचिहै (LUC) and बाचहे (PUL) being defective from the point of view of the metre. बंचीयो is modified to बंचियो to suit the metre.

133.7. Both the readings तुरन (PAT) and तुरहन (PUL) are incorrect and do not give a clear meaning suited to the context. The LUC reading तरुन (< Skt. तरुण) is, therefore, accepted. Similarly the PAT readings जूभि and भूभू being incorrect, the LUC reading जुध is accepted. It is, however, changed into जुद्ध as this form is used in PAT in 132.15 also.

133.8. The PAT reading पहूचो in the singular does not suit the context and cannot be construed with जिन्हैं in the plural in the

preceding line. The PUL reading पहुँचे is, therefore, accepted.

134.6. The PAT reading मुख सिउ does not give a suitable meaning. The metre also does not support this reading. The LUC reading खुनस (PUL खुमस) meaning 'anger' is, therefore, preferred.

134.7. The use of भला in the sense of भाला 'spear' is not correct from the grammatical point of view. The poet has twisted the word to conform it to चला in the following line. The use of चन्द्रामा in 31.10 and चाली, in 5.18, too, speak to the same effect.

137.13. The PAT reading सरु is incorrect and not allowed by the metre. सरु in the sense of 'an arrow' does not suit the context. The PUL reading सारु meaning 'a weapon' or 'a sword' is, therefore, adopted.

138.9. The PAT reading पैदल is incorrect. It is followed by पइकदल having the same meaning. The PUL reading मैदल meaning 'गजदल' is, therefore, selected.

139.10. The PAT reading अंगुसरो being incorrect, the correct form अनुसरे is restored.

139.12. डिड (PAT) is probably डिढ़ (< Skt. दृढ़).

141.10. The PAT reading पारि does not agree with बिकरार in the preceding line. It is, therefore, changed into पार.

141.12. The LUC reading उजियारो भयो for उजागर गयो (PAT) is incorrect. अथयो सूरु cannot be

construed with the LUC reading as 'light goes away with the setting of the sun.'

143.3. The PAT reading जेते for LUC जेजे is incorrect. It cannot be construed with तेई तिनै in the following line. The LUC reading is, therefore, accepted.

143. 5. Both the readings जीति पुत्र (PUL) and जैत पत्र (PAT) do not give the required sense. The LUC reading जीतपत्र in the sense of विजय-पत्र is, therefore, accepted.

143.11. The PAT reading सहाई being incorrect, the other reading सुहाई (PUL, LUC) is preferred.

143.12. The PAT reading जानि is incorrect. The other reading जरनि (LUC, PUL) meaning जलन 'fire or heat' is quite suitable.

143.14. The PAT reading पपीहा, though correct, is not allowed by the metre. The other form पपिहा (LUC, PUL) is, therefore, accepted.

145.9. The PAT reading अनत (< Skt. अन्यत्र) does not suit the context. The other reading अमित meaning 'unlimited' is, therefore, preferred.

147.2. The reading पान पान (PAT) does not give a clear meaning. The LUC reading पानि पानि (< Skt. पाणि पाणि) meaning 'hand' is, therefore, accepted. The meaning of the whole line will be : "The enemy of Mura (Kṛṣṇa) took the hand (of Rukminī) in his hand."

147.4. The PAT reading समद being incorrect, the PUL reading समिध is accepted.

147.13. The reading अनूप (PAT, LUC), though correct, does not agree with रूपु at the end of

the following line. The PUL reading अनूप is, therefore, accepted.

148.3. The reading बिदत (PAT) and विंदत (PUL) being incorrect, the other readings विदित (LUC) in the sense of 'known' is adopted.

148.10. The PAT reading रवहि is defective. The PUL reading रवीह too is not allowed by the metre. The LUC reading रविहि meaning 'the sun' is, therefore, accepted.

149.14. The PAT reading कुंवर being masculine does not suit the context. The other reading कुँवरि (PUL, LUC) is, therefore, accepted.

150.2. The PAT reading मन does not suit the context. The LUC reading तन meaning 'body' is, therefore, accepted.

150.4. The readings संकरई (PAT) and संतरही (PUL) are incorrect. The correct form संचरई is restored.

150.7. The PAT reading अलोल being incorrect, the other reading कलोल (LUC, PUL) is accepted.

151.8. The PAT reading जड़ does not suit the context. The PUL reading जल is, therefore, preferred.

APPENDIX—A

(The episode of Rukminī-haraṇa in the Bhāgavata)

श्रीशुक उवाच—

राजाऽऽसोद्भीष्मको नाम विदर्भाधिपतिर्महान् ।
तस्य पंचाभवन्पुत्राः कन्यैका च वरानना ॥२१॥
रुक्म्यग्रजो रुक्मरथो रुक्मबाहुरनंतरः ।
रुक्मकेशो रुक्ममाली रुक्मिण्येषां स्वसा सती ॥२२॥
सोपश्रुत्य मुकुन्दस्य रूपवीर्यगुणश्रियः ।
गृहागतैर्गीयमानास्तं मेने सदृशं पतिम् ॥२३॥
तां बुद्धिलक्षणौदार्यरूपशीलगुणाश्रयाम् ।
कृष्णश्च सदृशीं भार्यां समुद्वोढुं मनो दधे ॥२४॥
बन्धूनामिच्छतां दातुं कृष्णाय भगिनीं नृप ।
ततो निवार्य कृष्णद्विड्रुक्मी चैद्यममन्यत ॥२५॥
तद्वेत्यासितापांगी वैदर्भी दुर्मना भृशम् ।
विचिन्त्याप्तं द्विजं कश्चित्कृष्णाय प्राहिणोद्द्रुतम् ॥२६॥
द्वारकां स समभ्येत्य प्रतीहारैः प्रवेशितः ।
अपश्यदाद्यं पुरुषमासीनं काञ्चनासने ॥२७॥
दृष्ट्वा ब्रह्मण्यदेवस्तमवरुह्य निजासनात् ।
उपवेश्यार्हयांचक्रे यथात्मानं दिवौकसः ॥२८॥
तं भुक्तवन्तं विश्रान्तमुपगम्य सतां गतिः ।
पाणिनाऽभिमृशन्पादावव्यग्रस्तमपृच्छत ॥२९॥
कच्चिद्द्विजवरश्रेष्ठ धर्मस्ते वृद्धसंमतः ।
वर्तन्ते नातिकृच्छ्रेण सन्तुष्टमनसः सदा ॥३०॥
सन्तुष्टो यर्हि वर्तेत ब्राह्मणो येन केनचित् ।
अहीयमानः स्वाद्धर्मात्स ह्यस्याखिलकामधुक् ॥३१॥
असन्तुष्टोऽसकृल्लोकानाप्नोत्यपि सुरेश्वरः ।
अकिञ्चनोऽपि सन्तुष्टः शेते सर्वाङ्गविज्वरः ॥३२॥

विप्रान्स्वलाभसन्तुष्टान्साधून्भूतसुहृत्तमान् ।
निरहंकारिणः शान्तान्नमस्ये शिरसाऽसकृत् ॥३३॥
कच्चिद्वः कुशलं ब्रह्मन्राजतो यस्य हि प्रजाः ।
सुखं वसन्ति विषये पाल्यमानाः स मे प्रियः ॥३४॥
यतस्त्वमागतो दुर्गं निस्तीर्येह यदिच्छया ।
सर्वं नो ब्रूह्यगुह्यं चेत्किं कार्यं करवाम ते ॥३५॥
एवं संपृष्टसंप्रश्नो ब्राह्मणः परमेष्ठिना ।
लीलागृहीतदेहेन तस्मै सर्वमवर्णयत् ॥३६॥

रुक्मिण्युवाच—

श्रुत्वा गुणान्भुवनसुन्दर शृण्वतां ते निर्विश्य कर्णविवरैर्हरतोऽङ्गतापम् ।
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थलाभं त्वय्यच्युताविशति चित्तमपत्रपं मे ॥३७॥
का त्वा मुकुन्द महती कुलशीलरूपविद्यावयोद्रविणधामभिरात्मतुल्यम् ।
धीरा पतिं कुलवती न वृणीत कन्या काले नृसिंह नरलोकमनोऽभिरामम् ॥३८॥
तन्मे भवान्खलु वृतः पतिरङ्ग जायामात्मार्पितश्च भवतोऽत्र विभो विधेहि ।
मा वीरभागमभिमर्शतु चैद्य आराद्गोमायुवन्मृगपतेर्बलिमम्बुजाक्ष ॥३९॥
पूर्तेष्टदत्तनियमव्रतदेवविप्रगुर्वर्चनादिभिरलं भगवान्परेशः ।
आराधितो यदि गदाग्रज एत्य पाणिं गृह्णातु मे न दमघोषसुतादयोऽन्ये ॥४०॥
श्वो भाविनि त्वमजितोद्वहने विदर्भान्गुप्तः समेत्य पृतनापतिभिः परीतः ।
निर्मथ्य चैद्यमगधेन्द्रबलं प्रसह्य मां राक्षसेन विधिनोद्वह वीर्यशुल्काम् ॥४१॥
अन्तःपुरान्तरचरीमनिहत्य बन्धूँस्त्वामुद्वहे कथमिति प्रवदाम्युपायम् ।
पूर्वेद्युरस्ति महती कुलदेवियात्रा यस्यां बहिर्नववधूर्गिरिजामुपेयात् ॥४२॥
यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजःस्नपनं महान्तो वाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोपहत्यै ।
यर्ह्यम्बुजाक्ष न लभेय भवत्प्रसादं जह्यामसून्व्रतकृशान् शतजन्मभिः स्यात् ॥४३॥

ब्राह्मण उवाच—

इत्येते गुह्यसंदेशा यदुदेव मयाहृताः ।
विमृश्य कर्तुं यच्चात्र क्रियतां तदनन्तरम् ॥४४॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कंधे उत्तरार्धे रुक्मिण्युद्वाहे द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥५२॥

श्रीशुक उवाच—

वैदर्भ्याः स तु संदेशं निशम्य यदुनन्दनः ।
प्रगृह्य पाणिना पाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥१॥

श्री भगवानुवाच—

तथाऽहमपि तच्चित्तो निद्रां च न लभे निशि ।
वेदाहं रुक्मिणो द्वेषान्ममोद्वाहो निवारितः ॥ २ ॥
तामानयिष्य उन्मथ्य राजन्यापसदान्मृधे ।
मत्परामनवद्यांगीमेधसोऽग्निशिखामिव ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच—

उद्वाहर्क्षं च विज्ञाय रुक्मिण्या मधुसूदनः ।
रथः संयुज्यतामाशु दारुकेत्याह सारथिम् ॥ ४ ॥
स चाश्वैः शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकैः ।
युक्तं रथमुपानीय तस्थौ प्राञ्जलिरग्रतः ॥ ५ ॥
आरुह्य स्यन्दनं शौरिर्द्विजमारोप्य तूर्णगैः ।
आनर्तादेकरात्रेण विदर्भानगमद्धयैः ॥ ६ ॥
राजा स कुंडिनपतिः पुत्रस्नेहवशं गतः ।
शिशुपालाय स्वां कन्यां दास्यन्कर्माण्यकारयत् ॥ ७ ॥
पुरं संमृष्टसंसिक्तमार्गरथ्याचतुष्पथम् ।
चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैः समलंकृतम् ॥ ८ ॥
स्रग्गंधमाल्याभरणैर्विरजोंबरभूषितैः ।
जुष्टं स्त्रीपुरुषैः श्रीमद्गृहैरगुरुधूपितैः ॥ ९ ॥
पितृन्देवान्समभ्यर्च्य विप्रांश्च विधिवन्नृप ।
भोजयित्वा यथान्यायं वाचयामास मङ्गलम् ॥१०॥
सुस्नातां सुदतीं कन्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ।
अहतांशुकयुग्मेन भूषितां भूषणोत्तमैः ॥११॥
चक्रुः सामर्ग्यजुर्मंत्रैर्बध्वा रक्षां द्विजोत्तमाः ।
पुरोहितोऽथर्वविद्वैजुहाव ग्रहशान्तये ॥१२॥
हिरण्यरूप्यवासांसि तिलांश्च गुडमिश्रितान् ।
प्रादाद्धेनूश्च विप्रेभ्यो राजा विधिविदांवरः ॥१३॥
एवं चेदिपती राजा दमघोषः सुताय वै ।
कारयामास मंत्रज्ञैः सर्वमभ्युदयोचितम् ॥१४॥
मदच्युद्भिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हेममालिभिः ।
पत्त्यश्वसंकुलैः सैन्यैः परीतः कुण्डिनं ययौ ॥१५॥

तं वै विदर्भाधिपतिः समभ्येत्याभिपूज्य च ।
निवेशयामास मुदा कल्पितान्यनिवेशने ॥१६॥
तत्र शाल्वो जरासन्धो दन्तवक्त्रो विदूरथः ।
आजग्मुश्चैद्यपक्षीयाः पौण्ड्काद्याः सहस्रशः ॥१७॥
कृष्णरामद्विषो यत्ताः कन्यां चैद्याय साधितुम् ।
यद्यागत्य हरेत्कृष्णो रामाद्यैर्यदुभिर्वृतः ॥१८॥
योत्स्यामः संहतास्तेन इति निश्चितमानसाः ।
आजग्मुर्भूभुजः सर्वे समग्रबलवाहनाः ॥१९॥
श्रुत्वैतद्भगवान्रामो विपक्षीयनृपोद्यमम् ।
कृष्णं चैकं गतं हर्तुं कन्यां कलहशङ्कितः ॥२०॥
बलेन महता सार्द्धं भ्रातृस्नेहपरिप्लुतः ।
त्वरितः कुण्डिनं प्रागाद्गजाश्वरथपत्तिभिः ॥२१॥
भीष्मकन्यावरारोहा काङ्क्षन्त्यागमनं हरेः ।
प्रत्यापत्तिमपश्यन्ती द्विजस्याचिन्तयत्तदा ॥२२॥
अहो त्रियामान्तरित उद्वाहो मेऽल्पराधसः ।
नागच्छत्यरविन्दाक्षो नाहं वेद्म्यत्र कारणम् ।
सोऽपि नावर्ततेऽद्यापि मत्संदेशहरो द्विजः ॥२३॥
अपि मय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वा किञ्चिज्जुगुप्सितम् ।
मत्पाणिग्रहणे नूनं नायाति हि कृतोद्यमः ॥२४॥
दुर्भगाया न मे धाता नानुकूलो महेश्वरः ।
देवी वा विमुखा गौरी रुद्राणी गिरिजा सती ॥२५॥
एवं चिन्तयती बाला गोविन्दहृतमानसा ।
न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रे चाश्रुकुलाकुले ॥२६॥
एवं वध्वाः प्रतीक्षन्त्या गोविन्दागमनं नृप ।
वाम उरुर्भुजो नेत्रमस्फुरन्प्रियभाषिणः ॥२७॥
अथ कृष्णविनिर्दिष्टः स एव द्विजसत्तमः ।
अन्तःपुरचरीं देवीं राजपुत्रीं ददर्श ह ॥२८॥
सा तं प्रहृष्टवदनमव्यग्रात्मगतिं सती ।
आलक्ष्य लक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता ॥२९॥
तस्या आवेदयत्प्राप्तं शशंस यदुनन्दनम् ।
उक्तं च सत्यवचनमात्मोपनयनं प्रति ॥३०॥

तमागतं समाज्ञाय वैदर्भी हृष्टमानसा ।
न पश्यन्ती ब्राह्मणाय प्रियमनयन्ननाम सा ॥३१॥
प्राप्तौ श्रुत्वा स्वदुहितुरुद्वाहप्रेरणोत्सुकौ ।
अभ्ययात्तूर्यघोषेण रामकृष्णौ समर्हणैः ॥३२॥
मधुपर्कमुपानीय वासांसि विरजांसि सः ।
उपायनान्यभीष्टानि विधिवत्समपूजयत् ॥३३॥
तयोर्निवेशनं श्रीमदुपकल्प्य महामतिः ।
ससैन्ययोः सानुगयोरातिथ्यं विदधे यथा ॥३४॥
एवं राज्ञां समेतानां यथावीर्यं यथावयः ।
यथाबलं यथावित्तं सर्वैः कामैः समर्हयत् ॥३५॥
कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुरवासिनः ।
आगत्य नेत्राञ्जलिभिः पपुस्तन्मुखपङ्कजम् ॥३६॥
अस्यैव भार्या भवितुं रुक्मिण्यर्हति नापरा ।
असावप्यनवद्यात्मा भैष्म्याः समुचितः पतिः ॥३७॥
किञ्चित्सुचरितं यन्नस्तेन तुष्टस्त्रिलोककृत् ।
अनुगृह्णातु गृह्णातु वैदर्भ्याः पाणिमच्युतः ॥३८॥
एवं प्रेमकलाबद्धा वदन्ति स्म पुरौकसः ।
कन्या चान्तःपुरात्परागाद्भटैर्गुप्ताऽम्बिकालयम् ॥३९॥
पद्भ्यां विनिर्ययौ द्रष्टुं भवान्याः पादपल्लवम् ।
सा चानुध्यातवती सम्यङ् मुकुन्दचरणाम्बुजम् ॥४०॥
यतवाङ्मातृभिः सार्द्धं सखीभिः परिवारिता ।
गुप्ता राजभटैः शूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ।
मृदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्च जघ्निरे ॥४१॥
नानोपहारबलिभिर्वारमुख्याः सहस्रशः ।
स्रग्गन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यः स्वलङ्कृताः ॥४२॥
गायन्तश्च स्तुवन्तश्च गायका वाद्यवादकाः ।
परिचार्य वधूं जग्मुः सूतमागधबन्दिनः ॥४३॥
आसाद्य देवीसदनं धौतपादकराम्बुजा ।
उपस्पृश्य शुचिः शान्ता प्रविवेशाम्बिकान्तिकम् ॥४४॥
तां वै प्रवयसो बालां विधिज्ञा विप्रयोषितः ।
भवानीं वन्दयाञ्चक्रुर्भवपत्नीं भवान्विताम् ॥४५॥

नमस्ये त्वांऽम्बिकेऽभीक्ष्णं स्वसन्तानयुतां शिवाम् ।
भूयात्पतिर्मे भगवान्कृष्णस्तदनुमोदताम् ॥४६॥
अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासः स्रङ्माल्यभूषणैः ।
नानोपहारबलिभिः प्रदीपावलिभिः पृथक् ॥४७॥
विप्रस्त्रियः पतिमतीस्तथा तैः समपूजयत् ।
लवणापूपताम्बूलकण्ठसूत्रफलेक्षुभिः ॥४८॥
तस्यै स्त्रियस्ताः प्रददुः शेषां युयुजुराशिषः ।
ताभ्यो देव्यै नमश्चक्रे शेषां च जगृहे बधूः ॥४९॥
मुनिव्रतमथ त्यक्त्वा निश्चक्रामाम्बिकागृहात् ।
प्रगृह्य पाणिना भृत्यां रत्नमुद्रोपशोभिना ॥५०॥
तां देवमायामिव वीरमोहिनीं सुमध्यमां कुण्डलमण्डिताननाम् ।
श्यामां नितम्बार्पितरत्नमेखलां व्यञ्जत्स्तनीं कुन्तलशङ्कितेक्षणाम् ॥५१॥
शुचिस्मितां बिम्बफलाधरद्युतिशोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ।
पदा चलन्तीं कलहंसगामिनीं सिंजत्कलानूपुरधामशोभिना ॥५२॥
विलोक्य वीरा मुमुहुः समागता यशस्विनस्तत्कृतहृच्छयार्दिताः ॥५३॥
यां वीक्ष्य ते नृपतयस्तदुदारहासव्रीडावलोकहृतचेतस उज्झितास्त्राः ।
पेतुः क्षितौ गजरथाश्वगता विमूढा यात्राछलेन हरयेऽर्पयतीं स्वशोभाम् ॥५४॥
सैवं शनैश्चलयती चलपद्मकोशौ प्राप्तिं तदा भगवतः प्रसमीक्षमाणा ।
उत्सार्य वामकरजैरलकानपाङ्गैः प्राप्तान्ह्रियैक्षत नृपान्ददृशेऽच्युतं सा ॥५५॥
तां राजकन्यां रथमारुरुक्षतीं जहार कृष्णो द्विषतां समीक्षताम् ।
रथं समारोप्य सुपर्णलक्षणं राजन्यचक्रं परिभूय माधवः ।
ततो ययौ रामपुरोगमैः शनैः शृगालमध्यादिव भागहृद्धरिः ॥५६॥
तं मानिनः स्वाभिभवं यशःक्षयं परे जरासन्धवशा न सेहिरे ।
अहो धिगस्मान्यश आत्तधन्वनां गोपैर्हृतं केसरिणा मृगैरिव ॥५७॥
इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कंधे उत्तरार्धे रुक्मिणीहरणं
नाम त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

श्रीशुक उवाच—

इति सर्वे सुसंरब्धा वाहानारुह्य दंशिताः ।
स्वैः स्वैर्बलैः परिक्रान्ता अन्वीयुर्धृतकार्मुकाः ॥ १ ॥
तानापतत आलोक्य यादवानीकयूथपाः ।
तस्थुस्तत्संमुखा राजन्विस्फूर्ज्य स्वधनूंषि ते ॥ २ ॥

अश्वपृष्ठे गजस्कन्धे रथोपस्थे च कोविदाः ।
मुमुचुः शरवर्षाणि मेघा अद्रिष्वपो यथा ॥ ३ ॥
पत्युर्बलं शरासारैश्छन्नं वीक्ष्य सुमध्यमा ।
सव्रीडमैक्षद्वक्त्रं भयविह्वललोचना ॥ ४ ॥
प्रहस्य भगवानाह मा स्म भैर्वामलोचने ।
विनंक्ष्यत्यधुनैवैतत्तावकैः शात्रवं बलम् ॥ ५ ॥
तेषां तद्विक्रमं वीरा गदसंकर्षणादयः ।
अमृष्यमाणा नाराचैर्जघ्नुर्हयगजान्रथान् ॥ ६ ॥
पेतुः शिरांसि रथिनामश्विनां गजिनां भुवि ।
सकुण्डलकिरीटानि सोष्णीषाणि च कोटिशः ॥ ७ ॥
हस्ताः सासिगदेष्वासाः करभा ऊरवोऽङ्घ्रयः ।
अश्वाश्वतरनागोष्ट्रखरमर्त्यशिरांसि च ॥ ८ ॥
हन्यमानबलानीका वृष्णिभिर्जयकाङ्क्षिभिः ।
राजानो विमुखा जग्मुर्जरासन्धपुरःसराः ॥ ९ ॥
शिशुपालं समभ्येत्य हृतदारमिवातुरम् ।
नष्टत्विषं गतोत्साहं शुष्यद्वदनमब्रुवन् ॥१०॥
भो भोः पुरुषशार्दूल दौर्मनस्यमिदं त्यज ।
न प्रियाप्रिययो राजन्निष्ठा देहिषु दृश्यते ॥११॥
यथा दारुमयी योषिन्नृत्यते कुहकेच्छया ।
एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहते सुखदुःखयोः ॥१२॥
शौरेः सप्तदशाहं वै संयुगानि पराजितः ।
त्रयोविंशतिभिः सैन्यैर्जिग्ये एकमहं परम् ॥१३॥
तथाऽप्यहं न शोचामि न प्रहृष्यामि कर्हिचित् ।
कालेन दैवयुक्तेन जानन्विद्रावितं जगत् ॥१४॥
अधुनाऽपि वयं सर्वे वीरयूथपयूथपाः ।
पराजिताः फल्गुतन्त्रैर्यदुभिः कृष्णपालितैः ॥१५॥
रिपवो जिग्युरधुना काल आत्मानुसारिणि ।
तदा वयं विजेष्यामो यदा कालः प्रदक्षिणः ॥१६॥
एवं प्रबोधितो मित्रैश्चैद्योऽगात्सानुगः पुरम् ।
हतशेषाः पुनस्तेऽपि ययुः स्वं स्वं पुरं नृपाः ॥१७॥

रुक्मी तु राक्षसोद्वाहं कृष्णद्विडसहन्स्वसुः ।
पृष्ठतोऽन्वगमत्कृष्णमक्षौहिण्या वृतो बली ॥१८॥
रुक्म्यमर्षी सुसंरब्धः शृण्वतां सर्वभूभुजाम् ।
प्रतिजज्ञे महाबाहुर्दंशितः सशरासनः ॥१९॥
अहत्वा समरे कृष्णमप्रत्यूह्य च रुक्मिणीम् ।
कुण्डिनं न प्रवेक्ष्यामि सत्यमेतद्ब्रवीमि वः ॥२०॥
इत्युक्त्वा रथमारुह्य सारथिं प्राह सत्वरः ।
चोदयाश्वान्यतः कृष्णस्तस्य मे संयुगं भवेत् ॥२१॥
अद्याहं निशितैर्बाणैर्गोपालस्य सुदुर्मतेः ।
नेष्ये वीर्यमदं येन स्वसा मे प्रसभं हृता ॥२२॥
विकत्थमानः कुमतिरीश्वरस्याप्रमाणवित् ।
रथेनैकेन गोविन्दं तिष्ठ तिष्ठेत्यथाह्वयत् ॥२३॥
धनुर्विकृष्य सुदृढं जघ्ने कृष्णं त्रिभिः शरैः ।
आह चात्र क्षणं तिष्ठ यदूनां कुलपांसन ॥२४॥
कुत्र यासि स्वसारं मे मुषित्वा ध्वांक्षवद्धविः ।
हरिष्येऽद्य मदं मंद मायिनः कूटयोधिनः ॥२५॥
यावन्न मे हतो बाणैः शयीथा मुञ्च दारिकाम् ।
स्मयन्कृष्णो धनुश्छित्त्वा षड्भिर्विव्याध रुक्मिणम् ॥२६॥
अष्टभिश्चतुरो वाहान्द्वाभ्यां सूतं ध्वजं त्रिभिः ।
स चान्यद्धनुरादाय कृष्णं विव्याध पञ्चभिः ॥२७॥
तैस्ताडितः शरौघैस्तु चिच्छेद धनुरच्युतः ।
पुनरन्यदुपादत्त तदप्यच्छिनदव्ययः ॥२८॥
परिघं पट्टिशं शूलं चर्मासी शक्तितोमरौ ।
यद्यदायुधमादत्त तत्सर्वं सोऽच्छिनद्धरिः ॥२९॥
ततो रथादवप्लुत्य खड्गपाणिर्जिघांसया ।
कृष्णमभ्यद्रवत्क्रुद्धः पतंग इव पावकम् ॥३०॥
तस्य चापततः खड्गं तिलशश्चर्म चेषुभिः ।
छित्त्वाऽसिमाददे तिग्मं रुक्मिणं हन्तुमुद्यतः ॥३१॥
दृष्ट्वा भ्रातृवधोद्योगं रुक्मिणी भयविह्वला ।
पतित्वा पादयोर्भर्तुरुवाच करुणं सती ॥३२॥

योगेश्वराप्रमेयात्मन्देवदेव जगत्पते ।
हन्तुं नार्हसि कल्याण भ्रातरं मे महाभुज ॥३३॥

श्रीशुक उवाच—

तया परित्रासविकम्पिताङ्गया शुचाऽवशुष्यन्मुखरुद्धकण्ठया ।
कातर्यविस्रंसितहेममालया गृहीतपादः करुणो न्यवर्तत ॥३४॥
चैलेन बध्वा तमसाधुकारिणं सश्मश्रुकेशं प्रवपन्व्यरूपयत ।
तावन्ममर्दुः परसैन्यमद्भुतं यदुप्रवीरा नलिनीं यथा गजाः ॥३५॥
कृष्णान्तिकमुपव्रज्य ददृशुस्तत्र रुक्मिणम् ।
तथाभूतं हतप्रायं दृष्ट्वा संकर्षणो विभु ।
विमुच्य बद्धं करुणो भगवान्कृष्णमब्रवीत् ॥३६॥
असाध्विदं त्वया कृष्ण कृतमस्मज्जुगुप्सितम् ।
वपनं श्मश्रुकेशानां वैरूप्यं सुहृदो वधः ॥३७॥
मैवास्मान्साध्व्यसूयेथा भ्रातुर्वैरूप्यचिन्तया ।
सुखदुःखदो न चान्योऽस्ति यतः स्वकृतभुक्पुमान् ॥३८॥
बन्धुर्वधार्हदोषोऽपि न बन्धोर्वधमर्हति ।
त्याज्यः स्वेनैव दोषेण हतः किं हन्यते पुनः ॥३९॥
क्षत्रियाणामयं धर्मः प्रजापतिविनिर्मितः ।
भ्राताऽपि भ्रातरं हन्याद्येन घोरतरस्ततः ॥४०॥
राज्यस्य भूमेर्वित्तस्य स्त्रियो मानस्य तेजसः ।
मानिनोऽन्यस्य वा हेतोः श्रीमदान्धाः क्षिपन्ति हि ॥४१॥
तवेयं विषमा बुद्धिः सर्वभूतेषु दुर्हृदाम् ।
यन्मन्यसे सदा भद्रं सुहृदां भद्रमज्ञवत् ॥४२॥
आत्मसोहो नृणामेष कल्प्यते देवमायया ।
सुहृद्दुर्हृदुदासीन इति देहात्ममानिनाम् ॥४३॥
एक एव परो ह्यात्मा सर्वेषामपि देहिनाम् ।
नानेव गृह्यते मूढैर्यथा ज्योतिर्यथा नभः ॥४४॥
देह आद्यन्तवानेष द्रव्यप्राणगुणात्मकः ।
आत्मन्यविद्यया क्लृप्तः संसारयति देहिनम् ॥४५॥
नात्मनोऽन्येन संयोगो वियोगश्चासतः सति ।
तद्धेतुत्वात्तत्प्रसिद्धेर्दृग्रूपाभ्यां यथा रवेः ॥४६॥

जन्मादयस्तु देहस्य विक्रिया नात्मनः क्वचित् ।
कलानामिव नैवेन्दोर्मृतिर्ह्यस्य कुहूरिव ॥४७॥
यथाशयान आत्मानं विषयान्फलमेव च ।
अनुभुङ्क्तेऽप्यसत्यर्थे तथाऽऽप्नोत्यबुधो भवम् ॥४८॥
तस्मादज्ञानजं शोकमात्मशोषविमोहनम् ।
तत्त्वज्ञानेन निर्हृत्य स्वस्था भव शुचिस्मिते ॥४९॥

श्रीशुक उवाच—

एवं भगवता तन्वी रामेण प्रतिबोधिता ।
वैमनस्यं परित्यज्य मनो बुद्ध्या समादधे ॥५०॥
प्राणावशेष उत्सृष्टो द्विड्भिर्हतबलप्रभः ।
स्मरन्विरूपकरणं वितथाऽऽत्ममनोरथः ॥५१॥
अहत्वा दुर्मतिं कृष्णमप्रत्यूह्य यवीयसीम् ।
कुण्डिनं न प्रवेक्ष्यामीत्युक्त्वा तत्रावसद्रुषा ॥५२॥
भगवान्भीष्मकसुतामेवं निर्जित्य भूमिपाम् ।
पुरमानीय विधिवदुपयेमे कुरूद्वह ॥५३॥
तदा महोत्सवो नृणां यदुपुर्यां गृहे गृहे ।
अभूदनन्यभावानां कृष्णे यदुपतौ नृप ॥५४॥
नरा नार्यश्च मुदिताः प्रमृष्टमणिकुण्डलाः ।
पारिबर्हमुपाजह्रुर्वरयोश्चित्रवाससोः ॥५५॥
सा वृष्णिपुर्युत्तभितेन्द्रकेतुभिर्विचित्रमाल्याम्बररत्नतोरणैः ।
बभौ प्रतिद्वार्युपक्लृप्तमङ्गलैरापूर्णकुम्भागुरुधूपदीपकैः ॥५६॥
सिक्तमार्गा मदच्युद्भिराहूतप्रेष्ठभूभुजाम् ।
गजैर्द्वाःसु परामृष्टरम्भापूगोपशोभिता ॥५७॥
कुरुसृंजयकैकेयविदर्भयदुकुन्तयः ।
मिथो मुमुदिरे तस्मिन्संभ्रमात्परिधावताम् ॥५८॥
रुक्मिण्याहरणं श्रुत्वा गीयमानं ततस्ततः ।
राजानो राजकन्याश्च बभूवुर्भृशविस्मिताः ॥५९॥
द्वारकायामभूद्राजन्महामोदः पुरौकसाम् ।
रुक्मिण्या रमयोपेतं दृष्ट्वा कृष्णं श्रियः पतिम् ॥६०॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्धे रुक्मिण्युद्वाहोत्सवे चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

APPENDIX—B.

(The preamble and the conclusion of MK in the bigger recension)

नमस्कार कवि कीन्ह, गवरी पुत्र गणेश कहँ ।
ह्वै प्रसन्न बुधि दीन्ह, प्रेमकथा पूरन करहु ॥
नमो गणेस बुद्धि बरदायक । बानी बिरद बकसिवे लायक ॥
गज आनन कवि जन जो धावत । सो फल मांगत सो फल पावत ॥
लंबोदर दरसन जो करिये । ता छिन बुद्धि अघट घट भरिये ॥
पारवती नन्दन जग बन्दन । विघन हरत जन चरचित चंदन ॥
गन नायक नायक खल घायक । असरन सरन सकल सुखदायक ॥
आदि पुरुष परसाद तुम, आदि नाम संसार ।
मंगल आदि अनेक बुधि, तुम कहि आदि सँभार ॥
सरसुती बुधि निदान, कृपादृष्टि मो तन करहु ।
उत्तिम कब्वि विधान, उचरहु कथा प्रमान कहि ॥
मैं अजान बुधि बालक मोरी । समुझि न परत कवित बर खोरी ॥
सुद्ध असुद्ध जु गुरु लघु अंकी । बोलि न सकत सुदेस निसंकी ॥
ह्वै कृपाल मो कहँ बर दीजै । कथा मनोहर पूरन कीजै ॥
तुम सरनागत कवि जन होई । ताकौ कथा अगम नही कोई ॥
परम विचित्र कवित जो होई । तुम बर मोहिं अगम नहिं कोई ॥
बानी उत्तम बुद्धि बल, कवित न दूषन अंग ।
तुम परसाद उचरन करहु, माधौ प्रेम प्रसंग ॥
मंगल रूप निधान, पहिले सुमिरों जगतगुरु ।
विद्या अरथ बखानि, रिद्धि सिद्धि नव निद्धि दै ॥
प्रथमहिं पारब्रह्म कौं परनौं । पुनि कछु जगत रीति रस बरनौं ॥
पारब्रह्म पुरसोत्तम स्वामी । घट घट रहै सु अन्तरजामी ॥
घट घट रहै लखै नहीं कोई । जल थल रहै सर्व में सोई ॥
ताकी आदि अन्त नहीं जानौं । पंडित कहैं ज्ञान करि मानौं ॥
ज्ञानी होइ सु गुरु मुख धावै । खोजी होइ सु खोजत पावै ॥

मन वच क्रम सोवत चलत, जागत चितवत नित्त।
सँग लाग्यौ डोलै सदा, सो करता धरि चित्त॥
आलम महमद पीर, जो नर धावै हेत करि।
जीवत सुक्ख सरीर, जग समुद्र तिरि पार ह्वै॥
हौं तिहि गगन भोग कर चहना। दूजा पुरुष महम्मद कहना॥
ताकी प्रीति लगी संसारा। चंद सूर लौं कीन्ह पसारा॥
धरम रूप अवतर लिय आपू। आपुन जन्म न कीनहू पापू॥
उनकौ नाम लेत जो रहिये। तत छिन ताप जुरा नहिँ गहिये॥
चारि मीत बैठे इक साथा। बोले बचन जोरि कै गाथा॥
अबाबकर उसमाँ उमर, चौथा अली सुभान।
जो इनकी सेवा करै, ताहि होइं अति ज्ञान॥
बरनौं चारहु पीर, आलम प्रगट संसार जस।
ज्ञान मूल मतिधीर, बंस रसूलहिं चित धरि॥
गोस कुतुब कादरी कहीया। जगमति सैद मुहुदीया अहीया॥
बंस रसूल किया परगासा। पुरवै नाम लेत मन आसा॥
जो कोई चित्त इन्हौं सू लावै। निरभय रहै सदा सुख पावै॥
अपनो जानि दृष्टि जब करिहै। रिद्धि सिद्धि बहु संपति भरिहै॥
जन आलम निहचै करि जाना। ताके चरन ध्यान मन आना॥
सैद महमदी यार सों, जो मन लावे कोइ।
तिहूँ लोक की सम्पदा, मन बांछित फल होय॥
अदली कहौं बखानि, सुजस प्रगट चहूँ खंड में।
विद्या अरथ निदान, साहि अकब्बर जगत गुरु॥
जगपति राज कोटि जुग कीजौ। साहि जलाल छत्रपति जीजौ॥
दिलीपति अकबर सुलताना। सप्त दीप में जाकी आना॥
सिद्धिनि पति जगनाथ सुहेला। आपुन गुरू जगत सब चेला॥
जब पर भूमि पयानौं करई। वासुकि इन्द्र सेस थरहरई॥
गहि तृन दंत सरनि ते आवै। थपियै भूमि फेरि सो पावै॥
दंड भरै सेवा करै, वासुकि इन्द्र कुबेर।
गन गँधर्व किन्नर सबै, जच्छ रच्छ ह्वै चेर॥
भूप भीर दरबार, अगिनित जनु वारिधि अगम।
दै अकोर परदार, समै पाय मुजरौ लहत॥

The concluding portion is as follows:—

दोहा—कलिमह विरह वियोगिनी भरि भरि लेहि उसास ।
सीसु ठगौसी भोर भय कीनौ सूर प्रकास ॥३७८॥
चौपही—माधौनल औ कंदला मिलिउ । मिलि विरहा दौंनौ दुष दलिउ ॥
मिलि कै अधिक सुष्षु तिनि पावा । दुषु संताप लै गंग बहावा ॥
मिल्यौ सोहु भावत भावंती । राजा नल रानी दमयंती ॥
मिले भरथरी अरु पिंगला । माधौनल औ काम कंदला ॥
पूरन ससि जिमि दुषित चकोरा । कुमदिन चक्रवाक जिमि भोरा ॥
नितप्रति केलि करहिं सुष रहहीं । दिन दिन प्रीति अधिक मन करहीं ॥३७९॥
दोहा—भावंता जा दिन मिलै ता दिन होइ अनंद ।
संपति हिंऐं हुलास अति कटि विरहा दुष दंद ॥३८०॥
माधौ कामकंदला मिलाई । पुनि राजा उज्जैनै जाई ॥
संग विप्र माधौनल लीन्हां । जिहिं कारन इतनौ जस कीन्हां ॥
राजा नगर उज्जैनै गयउ । तबहीं अंत कथा कौ भयउ ॥
माधौ कामकंदला नारी । जानौं विधि रचि दई संव पारी ॥३८१॥
दोहा—अपनौ सुष तजि दुष लहै पर दुष षंडन जांइ ।
वो निरवाहै येक सम धनि सकवंधी राई ॥३८२॥
कथा चौपही आलम कीन्ही । पहिल कथा श्रवन सुनि लीन्ही ॥
कहूं कहूं बीच दोहरा परैं । कहूं आनि सोरठा धरैं ॥
सुनत श्रवन यह कथा सुहाई । अति रसाल पंडित मन भाई ॥
प्रीतिवंत हैं सुने सो कोई । बाढ़ै प्रीति हिऐं सुष होई ॥
काम पुरिष रसिक जे सुनहीं । ते या कथा रैनि दिन गुनहीं ॥३८३॥
दोहा—पंडित बुधिवंता गुनी कविजन अच्छर टेक ।
नाम नमित गुन उच्चरहिं कहि कहि कथा अनेक ॥३८४॥
इति श्री माधवानल कथा संपूरनः सुभमस्तूः ।
जद्रिसं पुस्तकं द्रस्टा तद्रिसं लिषतं मया ।
जदि सुधमसोधोया मम दोषो न दीयते ॥१॥

स्वस्ति श्री नृपविक्रमाब्दीसमया तित सु संवतु १८१७ वर्ष सावन प्रथम सुदि २ सौमवासरे कौ माधवानल की कथा संपूरण सुभस्थान मौजे रानीपुर वांसि हीरन की राज्य श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा हींद्रपति जू देव कौं लिषतं प्रधान राजाराम पुस्तिकं अपनी ।

APPENDIX—C.

(Some stray stanzas of Ālam found in the anthologies)

१ दोहा सार संग्रह

(Compiler—Dara Shukoh. Date—1710 V. E.)

१ अर्ध रैनि ससि उग्गवै जौन्ह करै तम भंग।
उलटी नागिनि 'सेष' मनि डसी वियोगिनी अंग॥
(७१२)

२ 'आलम' प्रेम वियोग तै उठति अटपटी झार।
मनु लागै जियरा जरै लाज होति बरि छार॥
(१०४१)

३ हित चित दै सब कोऊ सुनै साँचु कहत है 'सेष'।
संगति तैसी होइ फलु या मै मीन न मेष॥
(१३६१)

४ 'सेष' सुमन अरु का (?) पुरुष तीजी ठौर न जायँ।
कै सब के सिर पर रहैं कै वन माँझ बिलायँ॥
(१४१६)

२ श्रृंगार संग्रह

(Compiler—Sardar Kavi. Date—1705 V. E.)

१ पोथी लये पुनि बाट चले हम बूझति हैं जो कहां कित जैहौ।
बैद हौ तो मेरी बांह गहो बिरहानल औषध मोहि बतैहौ॥
ज्योतिषी हौ तो चलो घर में पिय आवन की जु घरी शुभ दैहौ।
'आलम' आगे घने बन है घन के उनये ते घने दुख पैहौ॥
(पृ० ४४)

२ औसर ही परिवे सों आँसू रहे ढरिवे सों,
निसा गई बीति अजहूं न रिस तू टरी।
पंथी चले पंथ को पै तू न उठी चली अली
पच्छी लगे बोलन पै तू न बोली सुंदरी॥

'आलम' कहै री दोऊ चकई चकाऊ मिले,
तू न मिली मोहन को जो हौं पांय लै परी।
चंद छोड़ी आभा पै न तूने छोड़ो जी को हठ
कौंल विकसो पै तेरो कौंल विकसो न री ॥*

(पृ० ७०)

३ घोर घटा उनई चहुँ ओर सों ऐसे में मान न कीजै अयानी।
क्यों री विलम्बत है बिनु काज बड़े बड़े बुन्दन आवत पानी ॥
'सेष' कहैं चल लालन पै सुन के सब रैन कहै सुकहानी।
देखि तुही ललिता सुलतान को तेऊं तमालन सों लपटानी ॥

(पृ० ७१)

४ सौरभ सकेलि मेलि केलि हू की बेलि कीन्ही
शोभा की सहेली सो अकेली करतार की।
जितही ढरक काहू नितही ढरक जाय
सांचे से सुढरि सब अंगन सुढार की ॥
तपत रहत कवि 'आलम' परसमाणी
अति ही रसिक रीति जानै रस चार की।
ससि ही को सार सरसीरहू को रस सारे
सोने को स्वरूप लै संभारी घनसार की ॥

(पृ० ११८)

५ देह में बनक सी है नूपुर भनक सी है
लांकहू तनक सी है महा छवि बढ़ी है।
चाल गति मंद सी है लगे सुखकंद सी है
निरखे ते चन्द सी है कोक कला पढ़ी है ॥
'आलम' के प्रभु बांके पट तर दीजै कौन
तेरे चित बसी चहै वाके सम गढ़ी है।
आंगन में पग भरै सखी कन्ध बाहु धरै
कंचन के खंभ मानो चम्पलता चढ़ी है ॥

(पृ० १४७)

*This stanza is also found quoted in श्रृङ्गार सुधाकर.

६ सजनी मिलि द्वै अवलोकि कहैं अति ही हरि राधिका के बस री।
कहि कैसे धौं कुंज बिराजत हैं कवि 'आलम' और कहा रस री॥
उर झीनी सी आंगी फुलेल भरी कसकी सब ठौर कसे कस री।
छबि प्रात सुमेर के देश मनो जितहीं तित ओस पर्यो पसरी॥*

(पृ० १६०)

७ सुनि चित चहै जाके कंकन की झनकार
करत है सोई बात होत जो बिदेह की।
'सेष' भनि आजु है सु कालिह नाहीं कान्ह जैसी
निकसी है राधे की निकाई कछू नेह की॥
फूल की सी आभा सब शोभा लै सकेलि धरी
फूलि एहौ लाल भूलि जैहौ सुधि गेह की।
कोटि कवि पचै तऊ बरणी बनै न फबि
बेसरि उतारे छबि बेसरि के बेह की॥

(पृ० १७४)

८ लांबी लहकारी बहु पेंचन की भारी
औगर कसोंधे सारी न्यारी अतिशय झोंक की।
वरणौं कहां लौं ओप मदन की धौंप कैधौं
इन्द्र करि कोप तररानी एक ओक की॥
नट्टुवा की सांटि कैधौं 'आलम' सधायबे की
कहां लौं बखानौं हौं पढ़्यो न बिधि कोक की।
नागिन के तिमिर छपाकर में छाय रही
कटि पर बेनी की निसेनी सुरलोक की॥

(पृ० १६५)

६ फूल फरमात छाप छपद दोहाई
बास नूतन सुसाज टेसू तंबू दै परोरी है।
केकी कीर कूक पिक बानी चिठी आई
जान विरह वढाई छबि रैयत मरोरी है॥
सीतल बयारि बाद मापि रूप लीन्हों हैरी
उपज हमारे हरि ध्यान जो घरोरी है।

---

*This stanza is also found quoted in सुन्दरीसर्वस्व पृ० १३

आयो है बसंत ब्रज लायो है लिखाय
'सेष' जोन्ह को जलेवदार काम को करोरी है ॥
(पृ० २००)

१० सघन अखंड पूरि पंकज पराग पत्र
अत्तर मधुप सद घंटा रहनातु है।
बिरमि चलत फूली बेलिव के बास रस
सुख के संदेशे लेत सबनि सुहातु है ॥
'सेष' कहै सीरे सरवरन के तीर नीर
पीवत न परसे ते हिय सियरातु है।
आवन बसंत मन भावन मनोज तन
पवन परेवा जनु पाती लीन्हे जातु है ॥
(पृ० २२१)

३ सुंदरी सर्वस्व

(Compiler—P. Manna Lal Dwij. Date—1942 V. E.)

१ रजनी मधि प्यारी ने गौन कियो निरखि अँखियाँ पिय रंग भरी।
कवि 'आलम' रंभन को ललक्यो रति लालच है हिय लाय हरी ॥
खरी खीत हरे रँग की अँगिया दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी।
अरुझे जुग जार सिवारन मैं चकवान की चोंचैं मनौ निकरी ॥
(पृ० १२)

२ सेज समीप सधो रुचि दंपति कुंज कुटी ब्रज भूपर री।
कवि 'आलम' केलि रची विपरीत मनोज लसै दृग दूपर री ॥
सरसीरुह आनन तें श्रम बुंद परै ते जसोमति सूपर री।
बरसै बरसाने कि गोरी घटा नद गांव के सांवरे ऊपर री ॥
(पृ० ६०)

३ जा थल कीन्हे बिहार अनेकन, ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना तें करी बहु बातन, ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं ॥
'आलम' जौन से कुंजन मे करी केलि, तहाँ अब सीस धुन्यो करैं।
नैंनन मे जे सदा रहते, तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं ॥
(पृ० १२६)

४ कुंज सटेरन भेंट भई अँग अंग अनंग के पुंज सतावहिँ ।
'आलम' आली सों आपनी वात कहै न कछू अँखियाँ भरि आवहिँ ॥
कालिमा कज्जल की छवि बुंद परैं अधरा पर यों दुति पावहिँ ।
मानहुं मत्त मधूपन के सुत कंज कों छोड़ि बँधूक कों धावहिँ ॥
(पृ० १४६)

४ शृंगार सुधाकर

Compiler—P. Manna Lal Dwij—Date—1942 V. E.

१ मौनी बिवि गंगाकूल करत तपस्या कैधौं
कामकेतुका से लागे उठन उठोना के ।
जोवन नरेस के चोगान के निसान कैधौं,
श्रीफल ते सरस सलोने फूल दोना के ॥
'आलम' कहत कलधौत के कलस कैधौं,
आनद के कंद कै मनोज रस होना के ।
सेत कंचुकी मे कुच ढाँपे नंदनंद प्यारी,
फटिक के संपुट मैं द्वै सरोज सोना के ॥७६॥
(पृ० २०)

२ संपुट कमल ता पैं राजति प्रभात दुति,
सृंग हैं सुमेर कैधौं धरे ओस औना के ।
कैधौं सुरसरी धर मौनी सुरसरी तीर,
राजत विभूति अंग बैठे दोउ कोना के ॥
'आलम' सुकवि कैधौं भोडर के पीजरा मैं,
चकई के बाल कैधौं पिय चित टोना के ।
ढापे नद नद प्यारी सेत कंचुकी मैं कुच
फटिक के संपुट में द्वै सरोज सोना के ॥७७॥
(पृ० २०)

३ सुधा को समुद्र ता मैं दुरे है नछत्र कैधौं,
कुंद की कली की पाँति बीन बीन धरी है ।
'आलम' कहत ऐन दामिनी के बीज वये,
वारिज के मध्य मानो मोतिन की लरी है ॥

स्वाँति ही के बुंद बिंब बिद्रुम मैं बास लीनो,
ता की छवि देखि मति मोहन की हरी है।
तेरे हँसे दसन की ऐसी छवि राजति है,
हीरन की खानि मानौ ससि माहि करी है ॥१६७॥

(पृ० ४२)

४ फूलि फुलवारी रही उपमा न जात कही,
कैसे कै सराहौं ता मे जोति अधिकानी है।
'आलम' कहत है री मोतिन की पाँति धरी,
हीरन की काँति छवि देखि कै लजानी है॥
दाड़िम दरकि गये इनके समन भये,
रवि के किरिन कैसी चमक बखानी है।
तनिक हसन मैं दसन ऐसे देखियत,
दीपत नछत्र मानो दामिनी दुरानी है ॥१६८॥

(पृ० ४३)

५ प्यारी तन भूमि ता मै रूप जल सागर है,
जोबन गँभीर भौंर सोभा कों धरत है।
दीपत तरंग नैन बारिज से डोलैं तहाँ,
उरग सी बेनी जिय देखत डरत है॥
'आलम' कहत मुख कहर डाहर राजै,
ता मै मन मेरो यह दौरि कै परत है।
बेसर को मोती मानो कर है सिकंदर को,
बार बार झूमि झूमि मनै सो करत है ॥२१२॥

(पृ० ५३)

६ प्रेम रसमगे जगमगे जागे जामिनी के,
यौवन की जोति जगि जोर उमगत है।
मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं,
झूमत हैं झुकि झुकि झँपि उघरत हैं॥
कहै कवि 'आलम' निकाई इन नैनन की
पांखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं।

चाहत हैं उड़िवे कों देखत मयंक मुख
जानत हैं रैनि ताते ताही मे रहत हैं ॥२४३॥
(पृ० ६१)

७ हार ही के भार उर भार ना सँभारै नारि,
अलप अहार रस बास को अहार है ।
सीरे तें सिराति तातें ताती ह्वै ह्वै जाति,
डोलै पौन के परस प्यारी पान कैसी डार है ॥
कहै कवि 'आलम' न रति हू न रंभा हू न,
मैनका घृताची ऐसी रूप की अपार है ।
बानक विचित्र औ' न चित्र मैं न ऐसी कोऊ,
चित्र लिखि पूतरी जिआई करतार है ॥१६॥
(पृ० ८४)

८ नेह के निहोरे नाह नेकु आगे कीन्हीं बाँह,
छाँह के छुवत नाहीं नाहीं सी करति है ।
पीतम के पानि पेलि आपनी भुजा सकेलि,
धरकि सरकि हियो गाढ़ो कै धरति है ॥
'सेख' कहै आधे बैन बोलै करि नीचे नैन,
हा हा करि पीतम के मन कों हरति है ।
केलि के अरंभ निज खेलहि बढ़ाइवे कों,
प्रौढ़ा जो प्रबीन सो नबोढ़ा ह्वै ढरति है ॥१२३॥
(पृ० १११)

९ राति रति रन मे रहे जे पति सनमुख,
तिन्है बकसीस रीझि दीन्ही है बकसि कै ।
करन कों कंकन उरोजन मुकुत माल,
कटि माझ किंकिनी ठई है अति गसि कै ॥
'सेख' कहै आनत मै आनद सों पान दियो,
नैननि मैं अंजन बिराज्यो मन बसि कै ।
बैरी बार बार जरे हेरी थकि पाछे यातें,
बार बार बांधे आली बार बार कसि कै ॥१८३॥
(पृ० १२५)

१० चकई बिछुरि मिली तू न मिली मोहन सों,
'सेष' कहै एतो मान कीनो क्यों अठान री।
अथये नछत्र ससि अथई न रिस तेरी,
तूं न भई मुदित उदित भयो भान री॥
तैं न खोल्यो मुख खिली पंकज की कली भली,
तूं न चली चली निसि भयो है बिहान री।
कैसी बुद्धि आगरी न जानै हानि लाभ री,
भो दीपक मलीन न मलीन तेरो मान री॥
(पृ० १७५)

११ कैधौं मोर सोर तजि अनत गये री भाजि,
कैधौं उत दादुर न बोलत हैं ए दई!
कैधौं पिक चातक महीप काहू मारि डारे
कैधौं बक पाँति उत अंतगति ह्वै गई॥
'आलम' कहत आली अजहूं न आये पिय
कैधौं उत रीत बिपरीत बिधि ने छई।
मदन महीप की दोहाई फिरिवे तें रही
कैधौं मेघ जूझे कैधौं बीजुरी सती भई॥
(पृ० ३३०)